पाबूजी की पड़

डॉ. महेन्द्र भानावत

पाबूजी की पड़

डॉ. महेन्द्र भानावत

सम्पादक
डॉ. कपिल तिवारी
नवल शुक्ल

सहयोग
अशोक मिश्र

मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद् भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशन - प्रकाशन अधिकारी,
मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद,
मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन,
बाणगंगा, भोपाल - 462003 फोन- 551878

संकलन/भावानुवाद - डॉ महेन्द्र भानावत

प्रकाशन वर्ष - 2000

मूल्य - 50/- (रूपये पचास)

आकल्पन - ग्रॉफिक-ग्रॉफी, भोपाल

शब्दांकन - अभिषेक फोटो कम्पोजर्स, भोपाल

मुद्रण - प्रियंका ऑफसेट, भोपाल

आवरण चित्र - पाबूजी, चित्रकार-डॉ. महेन्द्र भानावत

पाबूजी राजस्थान की लोक परम्परा मे पराक्रमी, आध्यात्मिक और अलौकिक शक्ति से सम्पन्न एक अद्भुत चरित नायक हैं। लोक जीवन में इनकी प्रतिष्ठा लोक देवता के रूप में है। इनके शौर्य और पराक्रम की अनेक कथाएँ और किंवदंतियाँ लोक समाज में प्रचलित है। पाबूजी के नाम से राजस्थान मे अनेक स्थलों पर मन्दिर बनाये गये हैं और इनसे सम्बन्धित चित्रों और कथाओं का प्रचलन मूलतः राजस्थान में है किन्तु इसका प्रसार पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में भी है। एक ऐतिहासिक चरित्र का रूपान्तरण एक महान चरितनायक और लोक देवता में होना अद्भुत घटना है।

पड़ का सामान्य अर्थ है कथात्मक चित्र। पड़ का समानार्थी शब्द फड़ है और यह शब्द भी लोक व्यवहार में प्रचलित है। पड़ गाने वाले गायक और पड़ चित्र बनाने वाले चित्रकार दोनों होते है। वे कथा भी बाँचते है और उस कथा को पट्ट पर चित्र के रूप में उकेरते भी हैं। पड बनाने वालों और बाँचने वालों की सुदीर्घ लोक परम्परा है। पड़ कथा को बाँचने वाले कलाकारों को भोपे या भोपा के नाम से भी अभिहित किया जाता है। पाबूजी की पड़ वाचन के अलावा पाबूजी के पवाड़े का भी प्रचलन राजस्थानी लोक परम्परा में है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का जीवन राजस्थान की लोक परम्परा और कला एवं उसकी शैलियों के सान्निध्य तथा अध्ययन में बीता है। डॉ. भानावत ने परिषद् के विशेष आग्रह पर पाबूजी की पड़ गाथा को संकलित कर हिन्दी में भावानुवाद का कार्य किया है।

हम डॉ. भानावत के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। हमें आशा है वाचिक साहित्य परम्परा में उत्सुक पाठकों को यह संग्रह उपयोगी लगेगा।

सम्पादक

अनुक्रम

भूमिका

पाबूजी इतिहास पुरुष होकर केवल पोथियों में ही नहीं है, लोकदेवता के रूप में वे आज भी असंख्य जनों के हिरदै-हार बने हुए है। जगह-जगह, न केवल गाँवों-कस्बों में अपितु शहरों में भी उनके देवस्थान, देवरे, मंदरी याकि मंड बने मिलते है। इनमें पाबूजी की अश्वारूढ़ प्रतिमा मिलती है जो माटी अथवा प्रस्तर पर उभारी-उत्कीर्ण की हुई होती है। प्रति रविवार देवरों में चौकी लगती है जहाँ बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुष आकर अपनी सभी प्रकार की समस्याओं का निदान पाते हैं और खुशहाल होते है। पाबूजी का भोपा अपने में पाबूजी की आत्मशक्ति को अवतरित किये साक्षात् पाबू-रूप में जातरूओं, यात्रियों से रूबरू होता है।

पाबूजी की सर्वाधिक मान्यता ऊँटपालक राईका जाति में है जो रेबारी भी कहलाते है। ऊँटों के रक्षक-देवता के रूप मे पाबूजी ऊँटो मे आई हर प्रकार की बीमारी का शर्तिया शमन करते है। राईका अपने गले में चाँदी पर खुदी पाबूजी की झूलती प्रतिमा भी धारण किये रहते है जो नावा कहलाती है। पाबूजी के नाम की गोल (ताम्र मुद्रिका) भी धारण कर आस्थावान लोग अपने को सदाचारमय किये रहते है। देवरों या मडों की सज्जा के लिए कहीं-कहीं अन्य देवी-देवताओं तथा लोकमंगल के प्रतीकों के साथ ही पाबूजी की जीवनगाथा भी चित्राकार होती है। पाबूजी के रक्षक सहयोगी के रूप में कही-कहीं चाँदा-डेमा तथा हरमल की प्रतिमाएँ भी अपने लघु आकार में स्थापित की हुई मिलती है। ये मूरते पाबूजी की पंक्ति में नही होकर उनके सामने अथवा देवरे के बाहर होती है। इनकी प्रतिष्ठा-स्थापना में लोकवास्तुकला के

सिद्धान्तों एवं नियमों का पूर्णतः पालन किया जाता है, ऐसा कहा जाता है कि इसमें जरा सी चूक अथवा त्रुटि कभी-कभी बहुत बड़ा अनर्थ करती है।

इस सम्बन्ध में एक घटना का उल्लेख करते हुए मुनि मणिप्रभसागरजी ने लिखा कि जैसलमेर के किले के मन्दिर में परमात्मा की प्रतिमा के पास भैरव की स्थापना की गई। आचार्य जिनवर्धनसूरिजी ने इसे शास्त्र सम्मत नहीं मान उन्हें बाहर विराजमान करवा दिया। इस पर भैरव कुपित हो उठे और जब दूसरे दिन मन्दिर का द्वार खोला गया तो वे वहाँ से नदारद हो अपने पहले वाले स्थान पर मिले। भैरव के इस कृत्य पर आचार्यश्री को अचरज के साथ थोड़ी परेशानी भी हुई फलस्वरूप उन्हें दुबारा बाहर विराजमान कर दिया गया। लेकिन भैरव पुनः अपनी उसी दशा में चले गये तब आचार्यश्री ने पुनः उन्हें बाहर विराजमान कर दो अभिमन्त्रित कीलिकाओं से कील दिया। तब से आज तक वे वहीं विराजमान हैं। यह घटना वि.स. 1461 की कही जाती है।[1]

पड़ वाचन के अलावा पाबूजी के पवाड़े (परवाड़े) का भी प्रचलन रहा है। पाबूजी के भोपों द्वारा ये पवाड़े रात्रिजागरण अथवा किसी विशिष्ट मनौती प्रसंग पर गाये जाते हैं। इनके साथ माट नामक वाद्य बजाया जाता है। नर तथा मादा के रूप में ये माट चौड़े मुँह वाले मटके होते हैं जिनके मुख पर खाल मढ़ी होती है। इन्हें अलग-अलग व्यक्ति मिलकर बजाते हैं। परवाड़े गानेवाले नायक और रेबारी जाति के गायक होते हैं जो नागौर, बीकानेर, जोधपुर आदि रेगिस्तानी इलाकों में बसे होते हैं। मारवाड़ में जोधपुर जिले के कोलू (मंड) में पाबूजी का सबसे बड़ा तथा प्रमुख मन्दिर है। मेवाड़ में चित्तौड़गढ़ जिलान्तर्गत बारू गाँव में पाबूनाथ का मंड (मन्दिर) है जहाँ पूरे मेवाड़ के राइकों, ऊँटपालकों की आस्था जुड़ी हुई है। यहाँ चैत्र सुदी अमावस्या को बड़ा भारी मेला भरता है। राजस्थान सहित पाबूजी को माननेवाले गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश तथा हरियाणा-पंजाब में भी बहुत मिलेंगे।

पाबूजी की पड़- गाथा के छोटे-बड़े कई रूप प्रचलित हैं। इस पुस्तक में जो गाथा दी गई है वह अपने लघु रूप में ही है परन्तु कथातत्त्व की दृष्टि से वह पूर्णांगी

---

1. द्रष्टव्य श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, मंडावला— 343042 (राज.) से प्रकाशित पाक्षिक समाचार बुलेटिन 'जहाज मन्दिर' (16 जनवरी 2000) पृ. 4 विहार डायरी— 10

है। इसका सम्पादन करते समय मैंने अपनी ओर से इसमें कोई हेरफेर नहीं किया है। इसके पीछे उसके मूल स्वरूप को सुरक्षित रखने का भाव ही प्रमुख रहा है।

इसके शब्दार्थ- संयोजन में मुझे ठाकुर केसरीसिंह आढ़ा तथा पाठ संपादन में डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू का जो आत्मीय सहयोग मिला वह कभी विस्मृत नहीं किया जा सकेगा।

इस सन्दर्भ में यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि अपनी तमाम चेतना के साथ ही उस क्षेत्र से जुड़े विद्वत्जनों, गायक भोपों तथा सुधी श्रोताओं से प्राप्त जानकारियों के आधार पर इसके अनुवाद का विनम्र प्रयास किया गया है। मुहावरों एवं लोकोक्तियों को उनके निहितार्थ के साथ रखा गया है। पात्रों और स्थलों के नाम भी यथावत रखने का उपक्रम किया गया है। लोक में जहाँ लोकपुरूषों और पात्रों के ही लोकोत्तर हो जाने के बहुतेरे प्रसंग मिलते हैं वहीं इस महागाथा के नायक पाबूजी अभिजन वर्ग के प्रतिनिधि हैं और अपनी अद्वितीय शक्ति एवं शौर्य के लिए लोकजीवन में अतीन्द्रिय वीर पुरूष के रूप में स्थान और पहचान बनानेवाले कदाचित एकमेव नायक हैं।

मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद् के सचिव डॉ. कपिल तिवारी तथा प्रकाशन अधिकारी नवल शुक्ल के प्रति किस रूप में आभार प्रदर्शित करूँ जिनकी प्रेरणा से यह पुस्तक, विलम्ब से ही सही, मैं तैयार कर सका। उम्मीद है, पाबूजी की ही तरह पाठक इसे अपनत्व देंगे।

डॉ. महेन्द्र भानावत

पाबूजी की पड़

पड़ यानी पट्ट चित्रकला का इतिहास बड़ा प्राचीन है। जब तन ढँकने के लिए वृक्ष की छाल तथा चमड़ा काम में लाया जाता था तब इन पर चित्रकारी भी की जाती थी। सूत्र चर्म पर अग्निदेव तथा गाय के कान के चमड़े पर बाजा, हंसिया, खूँटा आदि के चित्र बनाने के उल्लेख ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में मिलते हैं। यज्ञों में वस्त्रचित्रों के पर्याप्त प्रयोग होते थे। पटचित्रों में बुद्ध की जीवनी चित्रित कर उनका अधिकाधिक प्रचार हुआ। ये चित्र बड़े लोगों को भेंट स्वरूप भी दिये जाने लगे। ऐसा ही एक चित्रपट बिम्बसार ने राजा तिष्य को भेंट किया था। आगे चलकर तो इन चित्रों को बताकर अपनी उदरपूर्ति करने वाली जाति ही हो गई।

ईसा की प्रथम शताब्दी तक तो यह कला इतनी विकसित हो गई कि लोकप्रचलित अनेक घटनाप्रसंग इसके विषय बने। द्रोपदी के चीर हरण प्रसंग को लेकर तो पटचित्रों का दिखावा गाँव-गाँव तक में व्याप्त हो गया। बाद में ये चित्र दीवालों की भी शोभा बढ़ाने लगे। गुप्तयुग से लेकर मध्ययुग तक तो पूर्वजन्म के चरित तथा परलोक के घोर कष्टों एवं समृद्धि सुख भरे नर्क-स्वर्ग के चित्रपट अति लोकप्रिय हुए जिन्हें सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रखने के लिए दुर्वाघास के रस में भिगोने के उल्लेख भी मिलते हैं।[1]

लगभग 18-20 हाथ (सवा डेढ़ फीट के बराबर एक हाथ) लम्बे तथा ढाई-तीन हाथ चौड़े कपड़े पर पाबूजी के जीवन को लेकर रंगबिरंगे चित्रों में जो

---

1. द्रष्टव्य 'रंगायन' जुलाई एवं अगस्त 1982 के अंक में प्रकाशित डॉ. प्रेमसुमन जैन का आलेख पट चित्रावली की लोक परम्परा।
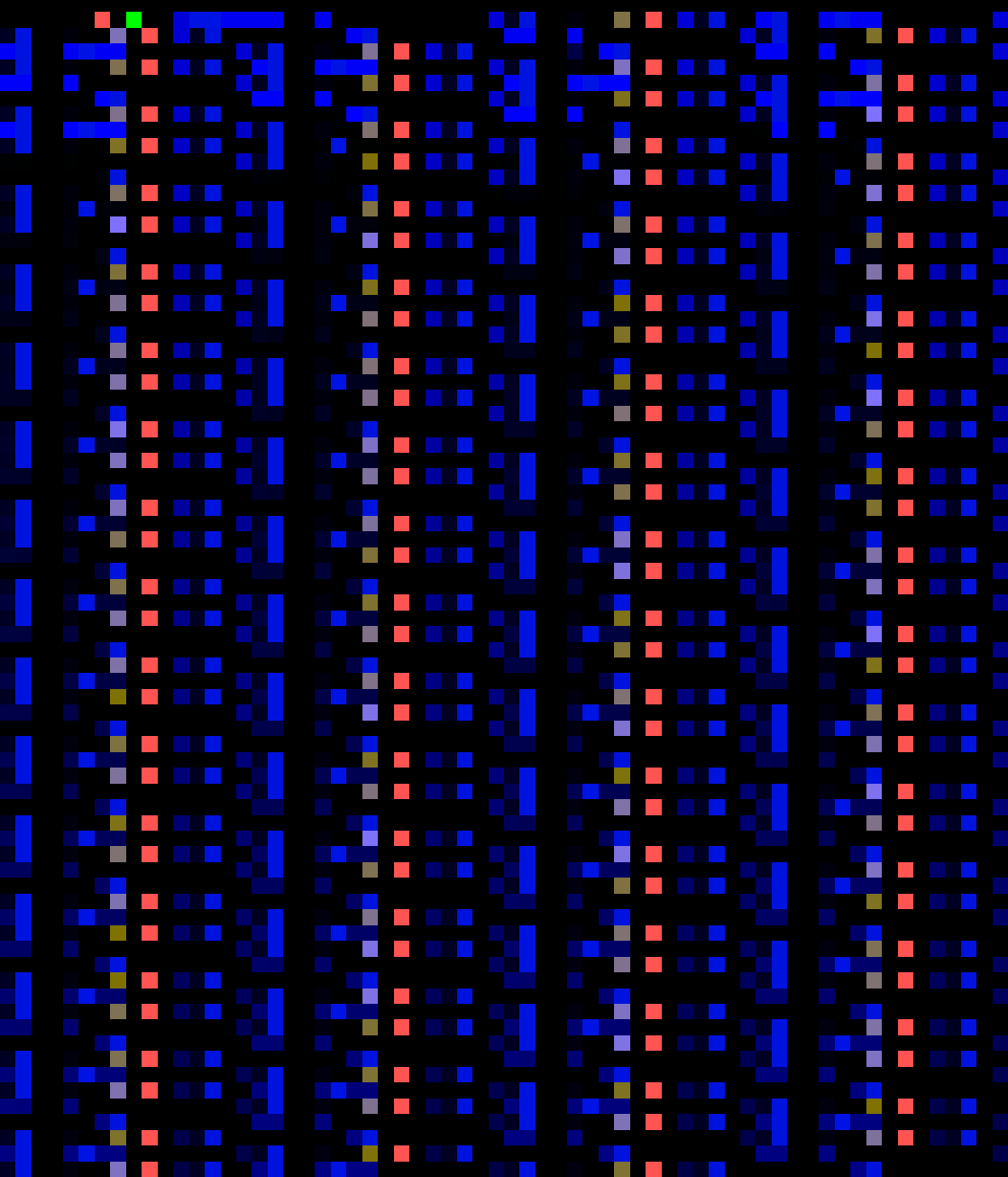
चरित चित्रित किया मिलता है उसी को पाबूजी की पड कहते है। पाबूजी की ही तरह एक पड़ होती है जो इससे भी बड़ी पच्चीस हाथ तक की लम्बाई लिये होती है। इसे देवनारायण की पड़ कहते है। क्या पड़, क्या गाथा और क्या चित्रांकन, सभी दृष्टि से यह पड़ बड़ी होती है। पड का मूल उत्स भी यही पड़ रही है।

किंवदंती है कि नरवरगढ़ के राजा ने अपनी पुत्री जैवंती का नरापण करने के लिए पुरोहितो को चौबीस भाइयों का जो रेखांकन दिया वह पड़ चित्र का मूल आधार बना। रामदला, कृष्णदला, भैसासुर, रामदेव की भी पडें राजस्थान में प्रचलन में है [1]

देवनारायण की पड़ मुख्यतः गूजर लोग बाँचते हैं। गूजर भोपों के अलावा राजपूत, गाडरी तथा बलाई जाति भोपे भी इसे बाँचते हैं। इसके साथ जतर नामक वाद्य बजाया जाता है। कहीं-कहीं जंतर के साथ मजीरा, चींपिया बजते भी देखा गया है। इसे दो भोपे मिलकर बाँचते है। भोपो की यह संख्या कहीं-कहीं तीन होती भी सुनी गई है।

रामदेवजी की पड़ भांभी, ढेड़, चमार तथा बलाइयों में प्रचलित है जो उनके भक्त होते है। कहते है, इसका प्रचलन पाबूजी की पड़ के ठीक ग्यारह वर्ष बाद हुआ। यह रामदेवजी के जन्म से प्रारंभ होकर उनकी समाधि तक चलती है। इसके साथ रावणहत्था बजाया जाता है। भोपे-भोपी दोनो मिलकर इसे बाँचते है। कभी-कभी दो भोपे मिलकर इसका वाचन करते हुए भी देखे गये है। इसका प्रचलन पहले हाडौती मे हुआ फिर मेवाड़ में होते-होते मारवाड़ मे फैला। ब्याह-शादी तथा काज करियावर जैसे सभी कार्य पड़ बँचवाई से ही पूरे होते है। सुनने वाले जितने अधिक अच्छे मन के होते है, दातारी में उतना ही अधिक हाथ लगता है।

रामदला का चित्रांकन सर्वप्रथम शाहपुरा मे वहाँ के चितेरे धूलजी ने किया। कहते है कि पाबूजी का भोपा बनवाने के लिए महीने भर वहाँ रहा फिर भी धूलजी उसे पाबूजी की पड़ बनाकर नहीं दे सके तब भोपा बड़ा परेशान हुआ कि परिवार को कैसे खिलाये-पिलाये। उसकी परेशानी देख धूलजी ने उसे एक छोटा सा रामदला बना दिया और कहा कि फिलहाल इससे काम चला। कुछ दिनों बाद जब मैं अपने

---

1 दृष्टव्य रामदला की पड - डॉ. महेन्द्र भानावत, प्रकाशक भारतीय लोक कला मंडल उदयपुर 1968

दूसरे कार्यों से निवृत्त हो जाऊँगा तब पाबूजी की पड़ बना दूँगा। भोपे ने यही किया। इस प्रकार रामदला चल पडा।

इसी रामदला की देखादेखी एक दिन धूलजी के पास मथुरा क्षेत्र से एक भोपा आया जो कृष्णदला बनवाकर ले गया। यह भोपा पापड़ी गाँव का था। अत कृष्णदला 'पापड़ी का पाटिया' नाम से भी जाना जाने लगा।[1]

भैसासुर की पड़ बावरी व वागरी जाति के लोग रखते है। इसे 'माताजी की पड़' भी कहते है। इसका वाचन नहीं होता। जब ये लोग चोरी करने निकलते हैं तब इसकी पूजाकर शकुन लेते है। रामदेवजी की पड़ का चित्रांकन सर्वप्रथम चौथमलजी ने किया। 27 वर्ष की उम्र में इनकी आँखें दुख आई तब प्रकाश से बचने के लिए इन्हें अधेरी ओबरी में रहना पड़ा। भीलवाड़ा में ही इनके खास मिलने वाले के विवाह पर हाथीघोड़े मॉडने थे। अतः अपने पुत्र रामचन्द्र को भेजा। रामचन्द्र कोर रहा था कि पीछे से चौथमलजी गये और कहा- 'थोड़ो ऊँचो ले'। रामचन्द्र ने सुना अनसुना कर दिया तब चौथमल जी बोले- 'थोड़ो और ऊपर ले।' रामचन्द्र को पता नहीं था कि उसके पिता यह बात कह रहे है। वह समझ बैठा कि वे चलने फिरने में असमर्थ है तभी तो उसे भेजा है। अतः उसने गुस्से में कहा- 'अस्यो कारीगर व्हे तो थू वणाले।' इस कथन से चौथमलजी को बड़ा कष्ट पहुँचा। वे वहाँ से चल पड़े और सदा के लिए चित्रकारी करना बंद कर दिया किन्तु उन्होंने बाबा रामदेव का एक खाका (स्केच) बनाया जिसके आधार पर रामदेव की पड बननी शुरू हुई।[2]

धूलजी कब हुए, ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। पड़ चितेरा श्रीलालजी जोशी ने बताया कि पाँच पीढ़ी पूर्व वे हुए। उनके टेकचद और मुकुन्द नामक दो पुत्रो ने जन्म लिया। मुकुन्दजी संतान विहीन रहे जबकि टेकचंदजी के सूरजमल, बख्तावर, धूलजी और रामप्रताप हुए। बख्तावर और रामप्रताप के कोई संतान नहीं हुई। सूरजमल के चौथमल, चौथमल के रामचन्द्र और रामचन्द्र के श्रीलाल हुए। इधर धूलजी के जड़ावजी, जड़ावजी के घींसूलाल और घींसूलाल के दुर्गेश हुए। श्रीलालजी भीलवाड़ा में रह रहे हैं जबकि दुर्गेश और उनके भाई शांतिलाल एवं राजेन्द्र शाहपुरा मे ही हैं। श्रीलालजी के दो पुत्र कल्याण एवं गोपाल अच्छे पड़ कलाकार के रूप मे जाने जाते है।

---

1. श्रीलाल जोशी (भीलवाडा) द्वारा 25 जुलाई 1977 को लेखक को लिखे पत्रानुसार।
2. पड़ चितेरे रामगोपाल जोशी से हुई बातचीत दृष्टव्य रंगायन फरवरी 1974 पृ. 7

श्रीलालजी एवं दुर्गेशजी से अलग एक जोशी परिवार और है जो परम्परा में पड बनाने का काम करता आ रहा है। धूलजी से पूर्व यह परिवार एक था। इस परिवार में कल्याणजी हुए जिनसे मैं मिला हूँ। सन् 1985 में इनका निधन हुआ। इनके मूलचन्द, धनराज और बालूलाल नामक तीन पुत्र हुए। मूलचन्दजी के घनश्याम और दिलीप, धनराज जी के नंदकिशोर, कन्हैयालाल, सत्यनारायण और कैलाश तथा बालूलालजी के जगदीश, सुरेश, महावीर और ओमप्रकाश है। ये सभी भीलवाड़ा में पड़ चित्रण का काम कर रहे है।

उदयपुर में अपने निवास पर श्रीलालजी जोशी से पड़-कला के सम्बन्ध म 24 अक्टूबर 1991 को लम्बी बातचीत हुई। उन्होंने बताया कि भीलवाड़ा के पास का पुर गाँव इनका मूल गॉव है तब इसे पुरमांडल कहते थे। शाहजहाँ ने जब शाहपुरा बसाया तब मेवाड़ के कुछ कलाकार माँगे गये। महाराणा ने तब इनके परिवार को शाहपुरा भेज दिया।

शाहपुर जानेवाले पाचाजी थे। वहाँ दरबार ने इनको बड़ी इज्जत दी। ठिकाने मे दीवालों पर कई जगह चित्रकारी कराई। अन्य ठिकानों में भी इन्हे चित्रकारी के लिए भेजा गया। बनेड़ा ठिकाने में भी बड़ा काम किया। इस चित्रकला को सीखने के लिए दरबार ने कलाकारों को बाहर भी भेजा। एक को जोधपुर, एक को उदयपुर और एक को अजमेर भेजा। अजमेर में एक चीनी कलाकार बड़ा नामी था। वह ऑख पर पट्टी बॉध कर सिखाता था।

श्रीलालजी ने बताया कि उनके खानदान में टेकचंद जी मुकुंदजी बड़े नामी कलाकार हुए। इनके पिता रामचन्द्रजी भी अच्छे कलाकार थे किन्तु वे स्वभाव से बडे अक्खड़ और स्वाभिमानी थे। जब श्रीलालजी के दादाजी चल बसे तो पिताजी को उत्तराधिकारी की पगड़ी बँधाई गई। पगड़ी दस्तूर के बाद जब उन्हें मुजरे के लिए ले जाया गया तो दरबार ने कहा— 'रमोजग्या यही है क्या?' ऐसा इसलिए कहा गया कि वे दरबार की चाकरी नहीं करते थे। अतः दरबार में उन्हें भटर कर दिया था यानि देश निकाला कर दिया था। शाहपुरा की सीमा में उनका प्रवेश वर्जित था लेकिन चोरी छिपे माह में एक बार वे अवश्य अपने घर आते जाते थे। रात को देरी से पहुँचकर सुबह जल्दी निकल जाते। संतरी-पहरेदार उनकी बड़ी इज्जत करते सो जाने-आने देत।

भदर होने पर रामचन्द्रजी भीलवाड़ा में रहे। शाहपुरा दरबार की इस कलाका पर बड़ी मेहरबानी बनी रही। देश निकाला देने के बावजूद दरबार के खजाने से इन प्रतिमाह चार रूपया मिलता रहा। रहने को मकानात भी मिले। अपने पिता की कां श्रीलालजी ने बनाये रखी। पारम्परिक रंग संयोजन और चित्र मंडल का आधार रखते हुए फोक और फाईन आर्ट का मिश्रण कर कई पौराणिक एव ऐतिहासिक गाथाओं क आधार ले चित्र बनाये। रागमाला के सेट तैयार किये। रेशमी कपड़े पर भी चित्र बनाये।

श्रीलालजी ने सबसे पहले तो भारतीय लोककला मंडल संग्रहालय की दीवाल पर देवनारायण की पूरी पड़ चित्रित की। दिल्ली के क्राफ्ट म्यूजियम में, अहमदाबाद के गूजरी संग्रहालय में, जयपुर के जवाहर कलाकेन्द्र में इनकी चित्रकारी मुँह बोलती अपनी गाथा आप सुनाती लगती हैं। जवाहर कला केन्द्र मे तो तब ग्रहो पर आधारित पूरा जम्बूद्वीप ही बना दिया। जैन तांत्रिक तथा शेखावाटी चित्रशैली के चित्र भी इन्होंने कई बनाये। देश के बाहर मास्को, स्वीडन, जापान, नेपाल, पाकिस्तान में भी इन्होंने अपनी चित्रकारी की स्थायी छाप छोड़ी। (लोकानुरंजनकारी चित्रविधा, राजस्थान पत्रिका, 24 नवम्बर, 1991)

अपने अलौकिक और लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए पाबूजी जनजीवन मे लोकदेवता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। राजस्थान में लोकदेवता तो और भी कई हुए हैं पर उनमे कुछ ही अधिक ख्यात-प्रख्यात है। इनमें भी पाबूजी का नाम सर्वाधिक स्मरण किया जाता है। उनके संबंध का यह दोहा तो यहाँ की चप्पा-चप्पा भूमि पर सुनने को मिलता है—

'पाबू हरबू रामदे मांगलिया मेहा।
पाँचू पीर पधारजो गोगाजी जेहा॥

पाबूजी के जन्म के संबंध में कोई एक मत नहीं है परन्तु अधिकाँशतः इनका जन्म वि.सं. 1313 में मारवाड़ के कोलू ठिकाने में हुआ मानते है। केवल 24 वर्ष की उम्र मे इनकी मृत्यु सं. 1337 में हो गई। इस संबंध में यह पद्य सुना जाता है—

तेरासौ तैतरवाँ जनम्यो आसल धाम।
तेरासौ सैतीस में कमधज आयो काम॥

इतनी कम उम्र में पाबूजी ने जो असाधारण पौरूष और शौर्य बताया उसके कारण इनके चरित्र को लेकर कई कीर्तिगाथाएँ, चरित काव्य और वीर गीत लिखे गये। ये परवाड़ा नाम से गाये जाते है। इनका प्रचलन न केवल राजस्थान में अपितु मध्यप्रदेश, गुजरात, हरियाणा, पंजाब और सिंध तक हुआ।[1]

पड में पाबूजी को कई नामों से संबोधित किया गया है जो उनकी विशेषता और वीरगुणों के भी परिचायक हैं। गढ़पतिया, मीठा मारू, अन्दाता, हिंदवाणी राजा, भवर बना, राठौड़ी राजा आदि नाम तो ऐसे हैं जो दूसरों के साथ भी प्रयुक्त किये मिलते हैं पर लिछमण देव, पाल भंवरजी, पाल बनाजी, भाल्याला, भुरज्याला, कमधजिया, बॉकादेव जैसे नाम पाबूजी के लिए ही दिये गये हैं। इनमें भाला रखने के कारण भाल्याला एव उनके गढ़ में विशिष्ट मोरचा-भुरज होने के कारण भुरज्याला कहा गया। इसके अतिरिक्त पाबूजी ने पाल नाम से एक अलग गाँव बसाया था। अतः इन्हें पाल, पालजी, पाल बनाजी, पाल भंवरजी कहा गया है। इनका जन्म साधारण मनुज की तरह नहीं होकर अपनी माता की छाती फाड हुआ। इसलिए इन्हे 'हाड़ फाड़ पाबू' भी कहा जाता है। इनके पैदा होते ही इनकी मॉ चल बसी। ये बोथा के पुत्र थे।[2]

पड़ में पाबूजी को लक्ष्मण का अवतार माना गया है। भोपों में प्रचलित कथा-किवदंती के अनुसार लक्ष्मण सीता सहित राम जब दण्डकारण्य में विचरण कर रहे थे तो एक दिन वहॉ शूर्पणखा आई और उसने राम से विवाह करने का प्रस्ताव रखा। राम ने अपनी शादी हो चुकी कहकर अपने को टालते हुए अपने भाई लक्ष्मण का नाम बता दिया। शूर्पणखा यह समझ बैठी कि राम-लक्ष्मण दोनों ने सीता के साथ शादी कर रखी है। अतः वह सीता को मारने उसकी ओर लपकी। लक्ष्मण पास ही बैठे थे। उन्होंने तत्काल उसका नाक काट दिया और कहा कि विवाह करने की तेरी यह इच्छा कलियुग मे पूरी करूँगा। आगे जाकर सोढ़ी शूर्पणखा का अवतार हुई और पाबू लक्ष्मण के। मगर जिसका नाक काट दिया उसके साथ शादी कैसे हो। अतः पाबूजी उसके साथ केवल अपना हाथ ही मिला पाये और तीसरे फेरे के बाद ही उन्हे

1 दृष्टव्य राजस्थानी वीरगाथात्मक पवाड़े : संरचना एवं लोक परम्परा— डॉ उषा कस्तूरिया लोकप्रकाशन पहाड़ी धीरज, दिल्ली— 110006

2 अहमदाबाद के वलाद गॉव के काली कल्ला धाम पर 25 मार्च 1985 को लगी गादी पर लोकदेवता कल्लाजी की वाणी देते उनके सेवक सरजूदासजी से।

अपने वचनों की रक्षा के लिए चंवरी से उठकर चले जाना पड़ा।

पड़ मे पाबू और सोढ़ी ही नही अन्य कुछ और भी अवतार माने गये हैं। इनमे पाबू की कालमी घोड़ी शक्ति की, डेमा हनुमान का तथा दोदा सुमरा को रावण का अवतार कहा गया है।

पड़ शव्द मूलतः फड़ के रूप में प्रचलित रहा है। आज भी फड़ बाँचने तथा बँचवाने सुननेवालों की जबान पर फड़ शब्द सुनने को मिलता है। पड़ चितेरे-छीपे भी इसे फड़ बोलते हैं। देवनारायण की पड़ में भी यह शव्द फड़ के रूप मे ही चित्रित हुआ है जिसमें देवनारायण भाट से कह रहे हैं—

'भाट जावो चतर छींपा के घरां अर म्हांकी एक तसवीर खींचाल्यावो, भाट गिया अर चतर छींपा ने बोल्या- म्हांका कुल भगवान री एक तसवीर खेंच दें। छीपे भगवान री तसवीर खेंची वा भाट ने खटगी। भाटजी बोल्या— म्हूं बताऊँ जिण तरै लिखो। छीपो बोल्यो— बतावो। भाट चौईस तो ओतार लखा लीधा। जतरी धरती आसमान में बातां व्ही वे सै लखा लीधी। खंचा ने अंदाताजी रे मुंडा आगे खड़ी कर दीधी। अंदाताजी देख बोल्या- अरे भाट म्हें एक तसवीर वास्ते कह्यो। थूं तो कांई ले आयो फड़ै ही फड़ै? भाट बोल्या- हाँ दरबार, है तो फड़ै ही।'

भावार्थ— देवनारायण ने भाट से कहा, 'भाट जाओ चतरछींपा के घर और हमारी एक तस्वीर खींचा लाओ।' भाटजी गये और चतुरछींपा से बोले— 'हमारे कुल भगवान की एक तस्वीर खींच दो।'

छीपे ने भगवान की तस्वीर खींची। वह भाट को नहीं रूचि। भाटजी बोले— 'मैं बताऊँ उस तरह लिखो।' छींपा बोला— 'बताओ।'

भाट ने चौबीस तो अवतार तथा जितनी धरती— आसमान में बातें हुई वे सब लिखा दीं। छीपे ने तदनुरूप चित्रावली तैयार कर अंदाताजी के सामने प्रस्तुत की। अंदाताजी ने उसे देखकर कहा— 'अरे भाट, मैंने तो एक तस्वीर के लिए कहा था। तुम यह क्या ले आये फड़े ही फड़े?' भाट बोला— 'हाँ दरबार है तो फड़े ही।'

यहाँ फड़ का अर्थ चित्र कथात्मक चित्रवली से है। कई चित्रो के सम्मिलित

रूप को फड़ कहा गया है। यही फड़ शब्द पड़ के रूप में प्रचलित हुआ।

फड एवं पड के अलावा एक शब्द पड़ी भी पड़— गाथा— वारता म मिलता है। बूड़ाजी की लकड़ी केलम की चटी अँगुली (कनिष्ठिका) को साँप डस जाता है तब जहर उतरवाने के लिए झाड़फूँक करने वाले झाडागर को बुलाने को कहा जाता है तब ब्राह्मण कहता है—

'नौ कुली सरप री धरती पर पड़ी बाँचू जे बाई री जीवणी उबरे तो।'

अर्थात् यदि बाई का जीवन बच जाय तो नौ कुली सर्प की धरती पर 'पडी' बाँचू। फड़, पड़, पड़ा, पड़ी के अलावा इसका एक और नाम फड़ह भी प्रचलित रहा है। पीहर में लड़की के प्रथम सन्तान होने पर उसके पिता द्वारा सुसराल सतानोत्पत्ति की शुभ सुचना हेतु सवा हाथ समचौरस कपड़े पर जो चित्रावली भेजता है उसे 'सुभागपड़ा' कहते हैं।

यह पड़ केवल चितराम नहीं है। देवता स्वरूपा भी है इसलिए बनानेवाला तथा बाँचनेवाला दोनों ही इसे देवतुल्य पवित्र मानते हैं। बनानेवाला छींपा सर्वप्रथम कुँवारी कन्या से रेखांकन दिलवाता है और पूरी पड़ बना लेने के बाद जब भोपा उसे लेने जाता है तब अंत में पाबूजी की ऑख बनाता है और साल— संवत, मिति, भोपे का नाम तथा देवरे का उल्लेख करता है। भोपा पूरी पड़ को साक्षात् देवता समझता है। इसलिए वह प्रतिदिन उसे धूप लगाता है, घर में पवित्र जगह रखता है। खोलने के बाद बिना उसे बाँचे बंद नहीं करता। मुहूर्त से पड़ बनवाकर लाना और लाकर रतजगा देना भी इसी बात का द्योतक है।

पड़ के जीर्णशीर्ण होने पर भोपा उसे इधर-उधर नहीं फैंककर पवित्र तीर्थस्थान पुष्कर ले जाकर पाबूजी की पेड़ी पर पानी में विसर्जित करता है। इसे पड़ ठडी करना कहते हैं। इस अवसर पर भोपे को सवा मण आटे की परसादी करनी होती है जो 'सवामणी' कहलाती है। पड़ प्रदर्शन के दौरान पूरे समय तक भोपे में पाबूजी का भाव बना रहता है। पड़ में वर्णित वीरोचित प्रसंगों पर भोपे के भावाभिनय में दर्शको को पाबूजी की उपस्थिति का आभास हुआ मिलता है तब श्रोता समुदाय को श्रद्धाभिभूत हो हाथ जोड़कर नमन करते देखा जाता है।

किसी मनौती के रूप में कारज पूरा होने पर पड़ बँचवाने के पीछे भी यही

भावना परिलक्षित होती ० सामूहिक रूप से पूरे गाँव के लोग किसी अनिष्ट के आशंका से बचने के लिए भी पड़ बँचवाने की बोलमा बोलते है। ऐसी स्थिति में गाँववाले ही पड़ बनवाते है और भोपे के लिए धोती झब्बा पाग कुर्ता तथा भोपी के लिए साड़ी, घाघरे की व्यवस्था करते है।

राजस्थान मे सर्वप्रथम साँढ़े लाने वाले पाबूजी ही थे। इसलिए साँढ़ों की रखवाली राईका जाति में इनकी बड़ी मान्यता रही है। राईका पाबूजी को अपना आराध्य देवता मानते हैं और प्रत्येक महत्वपूर्ण संस्कार पर भोपे को याद करते है।

पाबूजी की गणना प्लेग-रक्षक देवता के रूप में भी की जाती है। इसलिए कहावत भी है— *'गाँव-गाँव गोगा तो घर-घर पाबू।'* चौमासे में चूँकि सभी देवता विश्राम करते हैं और चार महीने सो जाते हैं। इसलिए इन दिनों पड़ बनाना, बनवाना और बाँचना, बँचवाना दोनों ही वर्जित रहते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि गोगाजी की शादी में पाबूजी ने अपनी भतीजी केलमदे को कन्यादान मे लंकस्थली के राजा टोदा सूमरा की बहुप्रसिद्ध विशिष्ट साँढ़ियाँ (ऊँटनियाँ) देने का वचन दिया। इसके लिए हरमल राईका को साँढ़ों का पता लगाने को भेजा। उसके पता लगाने के बाद पाबूजी लकस्थली गये और राजा से साँढ़ियाँ प्राप्त कर लाये।

पाबूजी की पड़ गाथा की रचनाकार देवल चारणी कही गई है। इसी देवल चारणी से पाबूजी ने कालमी घोड़ी ली थी। इस घोड़ी को प्राप्त करने के लिए बूड़ोजी और जिंदराव खींची ने भी कम कोशिश नहीं की मगर पाबूजी को यह मिली इस शर्त पर कि यदि कोई उसकी गायें घेर ले जायेगा तो पाबूजी प्राण देकर भी पहले उसकी रक्षा करेंगे और हुआ भी यही। जब तीन फेरे पूरे किये और चौथा फेरा लेने ही वाले थे तो उन्हें खबर मिली की जिंदराव खींची ने देवल की गाये घेर ली हैं। पाबूजी तत्काल चंवरी से उठ खड़े हुए और खींची से जा युद्ध किया और अपने प्राण गंवाये।

यह देवल काछल चारणी थी। काछलों में आज भी औरतें काव्य-सृजन करती है और बड़े जोश-खरोश के साथ उसे सुनाती हैं। काछेलों में महिलाओं का बड़ा प्रभुत्व रहा है। उनका यह दबदबा आज भी बरकरार है। श्राप भी इनका खूब चलता है। देवल ने पाबूजी को घोड़ी देते समय उनके हाथ में सांभर का सुप्रसिद्ध नमक देकर अपनी गायों की रक्षा का वचन तो लिया ही साथ-साथ वचन चुक जाने पर यह श्राप

भी दिया कि जैसे नमक गल जाता है उसी तरह वे भी गल जायेंगे।

पाबूजी की पड़ बाँचनेवाले भोपे नायक होते है। ये आयड़ी नाम से भी जाने जाते है। कहा जाता है कि पड़ बाँचने का पाबूजी ने इनको परचा दिया था। प्रसिद्धि है कि चाँदा तथा डेमा नामक दो वाघेला सरदार थे। दोनों ही सगे भाई थे परन्तु खोटे नक्षत्रों मे पैदा होने के कारण ज्योतिषी ने कहा कि यदि ये यही रहे तो आगे जाकर बड़े शैतान और नालायक निकलेगे तथा राज हाथ से जाता रहेगा। अत. ये कच्छ के बछाऊ ठिकाने से कही दूर जंगल मे फेंकवा दिये गये। उधर जंगल में एक भीलनी उस राह से गुजरी। उसने दोनों आवारा बच्चों को उठा लिया। अपने घर लाई और स्वयं के दूध पर उनका पालन-पोषण किया। एक दिन जब पाबूजी पोकर (पुष्कर) जा रहे थे तो रास्ते मे ये दोनो भाई मिले। पाबूजी ने इन्हे अपने साथ रख लिया तब से ये पाबूजी के साथ ही रहे। पाबूजी के ये बड़े विश्वासपात्र थे और प्रत्येक काम मे आगेवाणी रहते थे।[1]

कहते हैं, आगे जाकर चाँदा डेमा के वंशधर ही नायक कहलाये। भीलनी के यहाँ पलने के कारण नायक लोग भील नाम से भी जाने जाते है। इन्हें पड़ के रूप मे पाबूजी का बाना उठवाने (पड़ बाँचने) का परचा मिलना युक्ति संगत लगता है। राजदरबारों तथा ठिकानों मे पहले नवरात्रा में पूरी ही नौ रात पड बाँची जाती थी। पाबूजी के साथियों में अधिकतर नायक लोग ही थे। जनश्रुति है कि पाबूजी के साथ युद्ध करते हुए 140 नायक काम आये।

जिस दिन पड़ बँचवानी होती है उस दिन पड़ बँचवाने वाले के लिए भोपे को नूत आते हैं। नूतते समय भोपे को आखे (अनाज के दाने) दिये जाते है ताकि वह पड बँचवाई की बात पक्की समझे। पड़ बँचवाने वाला इस दिन अपने सगे समधी तथा अड़ोसी-पड़ोसी को न्यौता देता है। गाँवो में तो सारे गाँववालों को बुलाया जाता है। जो भी व्यक्ति पड़ सुनने आता है वह आरती तथा अन्य खास प्रसंगों पर भोपे को टके पैसे देना अपना पवित्र धार्मिक कृत्य समझता है। फलतः भोपे को इस

---

1 कागज बनेरी के धन्ना भोपा को 2 सितम्बर 1967 को भारतीय लोककला मंडल मे उदयपुर बुलाया गया। जहाँ इससे तीन रात्रि को पाबूजी की पड़ बँचवाई गई। धन्ना ने बताया कि इन्हें 'थली का भील' कहा जाता है पर पड़ बाँचने से ये भोपा नाम से जाने जाते हैं। थली (मारवाड) में पड़ का प्रदर्शन दो भोपे मिलकर करते हैं। इनकी औरते न पड़ बाँधती है न पड़ के सम्मुख नाचती है और न पड का प्रदर्शन ही देखती है।

दातारा मे अ[illegible] पपा उथ लग जाता है। विशिष्ट लोगों की ओर से दातागे प्राप्त होने पर भोपा उनके नाम का शंख पूरता है। श्राद्ध पक्ष में कभी पड़ नहीं बाँची जाती है न उसका धूप ध्यान ही किया जाता है। भादो महीने की नवमी-दशमी तथा चैती व आसोजी नौरता (नवरात्रा) में तो पड़ अनिवार्यतः बाँचनी ही पड़ती है।

पाबूजी की पड़ के साथ रावणहत्था नामक वाद्य बजाया जाता है जो कुछ-कुछ सारंगी से मिलता है। परंतु यह उतना जटिल वाद्य न होकर बड़ा सरल है। इसमें आधे नारियल की कटोरी पर बकरे की खाल मढ़ दी जाती है। यह खाल रस्सी द्वारा कस दी जाती है। नारियल की तूंबी पर तारों को आधार देने के लिए घोड़ी होती है।

तार खूटियों से बाँधे होते हैं। ये खूटियाँ डांड के एक सिरे पर लगा दी जाती हैं। खूंटियो को घुमाकर तार कसे जाते है। डांड पोले बाँस की लकड़ी होती है जिसकी लंबाई करीब ढाई-तीन फीट होती है। इस डांड का एक सिरा तूंबी से जुड़ा रहता है। तार तूंबी से डांड पर होते हुए खूंटियों से लपेट दिये जाते हैं। तारों की संख्या चार से छह तक होती है। इसी तरह खूंटियाँ भी सात से लेकर नौ तक होती है।

कहते है कि रावणहत्था रावण का बड़ा प्रिय वाद्य था इसलिए इसका यह नाम पड़ा। रावण अपने बीसों हाथों से यह वाद्य बजाता था। इसलिए इसमें खूंटियाँ व तार भी अधिक लगे रहते थे। पाबूजी जब लंका गये तो उनके साथ गया रतना राईका यह वाद्य वहाँ से लाया। पड़- चित्रों में रावण को दस सिर तथा बीस भुजाओं वाला बताया जाता है। यह भी कहा जाता है कि शिवजी को रिझाने के लिए रावण ने गहन तपस्या की। जब सफलता नहीं मिली तब रावण ने अपने बायें हाथ की नस निकाली और एक गरम लकड़ी को धनुषाकार बना उसे अपने सिर के बालों से जोड़ दिया। इस गज द्वारा उसने अपने दूसरे हाथ से नस पर रगड़ी देना प्रारंभ कर दिया। इससे उसने एक-एक कर छैतीस रागें निकाली। इससे शिवजी प्रसन्न हुए तब से उस आकार में वाद्य चल पड़ा जिसका नाम रावणहत्था दे दिया गया।

लेकिन धन्ना ने मुझे बताया कि रावणहत्था का असली नाम तो 'रावणहत्या' है। पाबूजी महाराज ने युद्ध के दौरान रावण के खोपड़े में भाला ठोका जिससे उसके चार दाँत बाहर निकल पड़े। इन चारों को पाबूजी ने चार दिशाओं में फेंका जिनसे

मक्की पैदा हुई। रावण की हत्या के उपलक्ष्य में पाबूजी ने एक वाद्य बनाया जो रावणहत्था के नाम से जाना गया। इसमें तार की जगह रावण की नस निकाल कर लगाई गई।

रावणहत्था गज से बजाया जाता है। यह गज धनुष के आकार का दोनों सिरे से मुड़ाव लिये होता है जिसमें घोड़े के बाल लगाये जाते हैं। इन बालो को तारों से रगड़ी देने पर आवाज निसृत होती है।

यह वाद्य बायें हाथ में लेकर बजाया जाता है। इसका तूंबी वाला हिस्सा कंधे की तरफ रखा जाता है। डांड बाहर की तरफ रखकर अंगुली से उसके तार दबाते हुए दायें हाथ में रखे गज से बजाया जाता है। तार लोहे अथवा तांत के होते है जो सा प तथा सां जैसे स्वरों में मिलाये जाते है।

गज को सुन्दर बनाने के लिए उसमें घुंघरे बाँध दिये जाते हैं। ये घुँघरे स्वरों के साथ ताल देने का कार्य भी बखूबी करते हैं। सुरीली आवाज का यह बड़ा सस्ता व सरल वाद्य है जिसे भोपा स्वयं बना लेता है।

पड़ें बिना किसी साँचे के ब्रुश से बनाई जाती है। पड़— चितेरे इस ब्रुश को कलम कहते हैं। यह कलम गिद्ध तथा मयूर पंख की डंडी से तैयार की जाती है। इसमे गिलहरी, गधे अथवा बकरे के बाल लगा दिये जाते है। रेजी अथवा खादी के जिस कपड़े पर पड़ बनानी होती है उस पर चावल के मांड का कलप दे दिया जाता है। फिर एक विशिष्ट प्रकार के घोटे द्वारा इस कपड़े की खूब घुटाई की जाती है। इससे वह कपड़ा इतना कड़क बन जाता है कि उस पर किसी प्रकार के रंग के फैलने की आशंका नहीं रहती।

पड़ बनाने का दस्तूर सबसे पहले कुँवारी कन्या से पीले रंग का चाका दिलाकर किया जाता है। यह रंग कच्चा होता है इसी रंग से चित्रों की पहले रेखाएँ मॉड ली जाती हैं। उसके बाद उन चित्रों के मुँह तथा शरीर में केसरिया रंग भर दिया जाता है। यह रंग भरने के बाद आवश्यकतानुसार क्रमशः पीला, हरा, कत्थई, हीगलू व नीला रंग भरकर पड़ पूरी चितेरी जाती है। ये रंग पहले तो चितेरे स्वय बडी मेहनत से तैयार करते थे पर अब रंग, ब्रुश कपड़ा सभी बाजार से खरीदकर ले आते हैं।

जिस भोपे का पड़ छपवाना (बनवाना) होना है वह चितर का पड़ मंडवानी की साई के रूप में कुछ राशि पेशगी देता है। यह राशि 'साई टीका' कहलाती है। जब पड़ पूरी तैयार हो जाती है तब दस्तूर के रूप में सवा रूपया कन्या का चांका दिलाई का और पाँच-पाँच रूपया देकर मुहूर्त के अनुसार पड़ ले जाता है। पड़ ले जाने के बाद वह अपने घर उसकी परणानी करता है जिसमें सगे समधियों को आमंत्रित कर भोजन कराता है। इस अवसर पर रात्रिजागरण दिया जाता है जिसमे समधियों की ओर से भोपा-परिवार के लिए कपडे-लत्ते, झग्गा-पाग, साड़ी लूगडा आदि लाया जाता है।

पड़ बाँचने वाले भोपों के कथा कथन तथा गायकी शैली में तो एकरूपता दिखाई देती है किन्तु कथा का छोटा-मोटा होना भोपों की विवेक दृष्टि, स्मरण शक्ति, प्रत्युत्पन्नमति तथा बुद्धिकौशल पर निर्भर करता है। इसी कारण कथा-गाथा का रूप भिन्नता लिये दृष्टिगोचर होता है। जो कलाकार जितना अच्छा सधा हुआ होगा, पड़ का वचन भी वह उतने ही प्रभावोत्पादक रूप में करेगा। साधारण भोपे न कथा मे, न वाचन में और न नृत्य सगीत अभिनय में ही अपना प्रभाव छोड़ पाते है।

अपनी शोध यात्राओं में मैंने पड़ वाचन के विभिन्न रूप-प्रकार देखे सुने है। किसी का प्रदर्शन दो रात मे पूरा होता देखा गया तो कोई पड़ पॉच-पाँच रातों मे जाकर पूरी हुई। किसी में वारता का अंश गौण पाया तो किसी मे गायकी की पुनरावृत्ति में भी रस वृद्धि होते देखी। यह स्थिति जुदा-जुदा भोपों में जुदा-जुदा रूप म देखने को तो मिली ही पर एक ही भोपे में भी दृष्टिगोचर हुई। पूछने पर बताया गया कि यह सब समय-समय का खेल है। जैसी जब सुरसती बैठ जाती है वैसा ही काम हो जाता है। पड़ की मुख्य भाषा राजस्थानी है किन्तु आँचलिक बोली का प्रभाव स्पष्टत· परिलक्षित होता है।

जहाँ कही पड़ बाँचनी होनी है, भोपा उसे दो बॉसों के सहारे खड़ी कर फैला देता है। फैलाने के बाद उसके अगरबत्ती की धुँआ करता है। गूगल की धूप देता है। दीप प्रज्वलित करता है और रावणहत्था बजाते हुए पाबूजी की आरती द्वारा पाबूजी का स्मरण करता हुआ उन्हें नमस्कार करता है। कहता है—

'सगतीद्यो पाबू आ पड़ मूंडे सूं बोलै अर सगली गाथा री बूंद्यॉ बातां मे खोलै।'

पाबूजी की कृपा से भोपे में वह शक्ति आती है जिसके द्वारा पूरी पड़ के गायकी को अपने में मूर्तवंत करता हुआ नृत्य की विविध अदावली में वार्ता द्वारा अरथाता है। इस कला से वह पूरे श्रोता समुदाय को अपनी ओर बाँधे रखता है। इस वाचा कथन के साथ बीच-बीच में कथातत्व को विराम देते हुए अवान्तर गीता-प्रहसन छोड दिये जाते हैं जो दर्शकों को अधिकाधिक मनोरंजित करने में सहायक होते हैं। इन हँसी ठट्ठा भरे गीतों प्रहसनों का पाबूजी तथा पड़ से कोई खास सम्बन्ध नहीं होते हुए भी वे उसी का हिस्सा बने रहते है।

आरती के बाद सिंवरणा (सुमिरणा) प्रारंभ होता है जिसमें पाबूजी के साथ विभिन्न देवी-देवता, साढ़ा सात बीसी सांवल, नौ बीसा राईका, देवल चारणी, केसर कालमी, जैमती, पांडव, राम, कृष्ण, रामदेव, चाँद, सूरज, गणेश वैमाता, लक्ष्मण, गोगा जैसे देवपुरूषों का स्मरण किया जाता है। एक नमूना—

'सारां पैली सीवरीजै गोगा गोसांई। सिध बाबा रामदेवजी। जै बोलो अठै नेजे रे धणी री।'

रामा आवजो सामा। कलजुग में है करूर। हरजी भाटी अरज करै आप सभाल जो बिडला। ढाल मिलिया। तीर मिलिया। तर मिलिया। चार घोड़े का पौंड मडिया है। तीन पौड़ छेकलो घोड़ो जमी पर मेले तो चौथो पौड़ अधर संभावै। ए पौंड धवती कट मेलेई। इण धरती में कळपो ना करै है। चाँद सूरज रे मेलाप करै है। मूसळ धारा में मै वरै है। बारूं ब्रळ राजा पधारै। सागर मे झीणी-झीणी खेह उड़ै है। धरमपतरियां नै पाप डूबै तो धरती पाप रा लेखा तो वै। स्त्री मान मांगे है। देखो तो कइयां जाणै है सा देखो।'

इसके पश्चात् भोपा अरथावा करता है जिसका प्रारंभ कुछ इस प्रकार रहता है—

'भला नाम ठाकरां पाबूजी रा। सुणै सांभलै जांका। सुणै अन्दाताजी री कथा तो चित्त लग आवै। वधै मन नै पाप री गाठां खुल जावै। मंडगी है ठाकर रे पाबूजी री बसती में जोत। उठे भाग जावै जो बारै-बारै बरसां की बसती खेड़ा की चौथ लै घर आवै। आस कर जावै क्यूं आवै निरास। जल रे कांठै घर बांधै वे नर क्यूं मरै तिरास। केसर री क्यारी। कंवळ को फूल। कंवळ रा फूल में अंदाताजी अवतार धारिया। मात कवलादे जी गोद खेलाया। जोनांछर ए अन्दाताजी थण धारिया वारा घर

राठौड़ केवाया। राठोड के घर जाना लाया। जो छतपतरा राठोड़, पाबूजी ने बूड़ाजी ने भाई केवाया। आल मिली ज्यूं ढाल विणी। कांध रा खड़ग बणिया। बूंदी का कटार बणिया। खेमखाग का वागा। सवा लाख री कमर कसी। सवा लाख रा फैंटा। सोने रा किरणिया। राठौड़ अन्दातांजी अबै वेई तपरिया है। ए मोर बबरिया केहर करै। चॉद सूरज पाबूजी रे ऊपरई तपरिया है। काना में वैण मोती। हाथां में सोवन का कडा। गुलाब रे फूल री वासना लेवै।'

यह स्तुति 'सींवरणा' कहलाता है। देवी-देवताओं का यह सुमिरन भोपे के साथ-साथ दर्शकगण भी बड़ी श्रद्धा-आस्था से करते है। कहीं-कहीं यह सींवरणा खटकड़ा नाम से भी प्रचलित है। लकड़वास (उदयपुर) गाँव के पड़ भोपे जीतू (70) टीबी के रोगी के रूप में बीमारी से ग्रस्त होने पर भी पड़ के प्रसंग की जानकारी के लिए कुछ समय के लिए अपनी व्याधि तक भूल गये। उन्होंने हॉफते-कॉपते मुझे 15 फरवरी 1973 को यह महत्वपूर्ण खटकड़ा सुनाया—

'अठे गंगा अठे गोमती आपका सरणां में छोड़ जाऊॅ कठे। गोरखड़ी में गोरखनाथ जाम्या भड़ मेंदू का भाई। देव देड़ावट जाग्या। रूखावाली कीधा बदावणा। पारवाणा कीधा जवार। सैवै तो समंदर सेइजै मत सेइजै नाड़ो। लाखेणी देवी पर घेरो गालै तो पाबू आवै आड़ो। बॉझ हलावे पालणो टूटा भदेसर नाथ। दॉत कीजै दवारका फण कीजै बदरीनाथ कलजुग में केवायो केसरियानाथ। कालो भेरू कटारमल धरी माहतार धान। पो मे जागी पदमणी दो गुरजां की मार। पान परवाण उपण्या साया रा उपाया सीप दादी भजा पर गिरवर तारिया सात समंदर नोई दीप। सायरा शंख उपाया वाज्या दुबारका मांय। शंख तारे। शंख मारे। शंख में राखे आस तो नर नारी पावे वैकुंठा री वास। जवाब देई ने शंख पूरे तो धोबी री कुंडी में अंध मुख झूले। जो नर पाबू री आरती करावे तो अठोतर पींडी नारकी में पड़ी वे तो ले गंगाजी में जा।'

जैसे पड़ आरती से प्रारंभ होती है, उसकी समाप्ति भी आरती से होती है। यह आरती भिन्न होती है। इसमें पाबूजी की महत्ता एव महानता बखानी जाती है—

आरती भरभरियें मोतियां री गेहरो थाल,
आरती में हीरा मोती लाल जी
आरती में लूंबलूंबा कियो नारेल जी

आरती बेंड री ओ गादी धाम जी
आरती देवलिये रे दरबार जी ओ
आरती गोपासरिये री
आरती बेलासर वाली धाम जी
आरती धोरे री सैंगाल जी
आरती झाड़ै री पारस पीपली जी।

बूड़ोजी के घर विवाह मंडा तो गणेशजी का प्रथम सुमिरण क्या किया, उनका पूरा नखशिख ही उतार दिया। इसमें गणेश के अनूठपन में उन्हें बड़े पाँव वाला (मोटा ओ मोटा थारां पॉव), चौड़ी पीठ वाला (चवड़ी रे चवड़ी चौड़ी पीठ), मोटी तोंद वाला (मोटी रे मोटी थांरी तोंद), उजले दॉत वाला (ऊजला रे ऊजला थारा दॉत), लम्बी पतली सूंड वाला (लांबी रे पतली आ सूँड), छोटी-छोटी ऑंख वाला (छोटी रे छोटी थारी ऑंख) तथा बड़े सिर वाला (मोटो रे मोटो थांरो सीस) कहा गया है।

गणेश ही नहीं, इनके याद करने के तुरंत बाद ऊंदरा-ऊंदरी (चूहा-चुहिया) की लंबी लड़ाई की गाथा ही खुल पड़ती है। यह बिना किसी प्रसंग के प्रारंभ होती है जिसमें चूहा एक और शादी कर चुहिया को सौत लाने को कहता है। विवाह का नाम लेते ही चुहिया नींद में सोये दरजी का कपड़ा कुतर देती है। ढोली का ढोल कुतर लेती है। भांभण का ताणा कुतर लेती है। इतना सब करने के बाद अंत मे इस प्रसग का रहस्य खुलता है कि गणेशजी महाराज चूँकि मूसाजी की असवारी करते है, अत यहाँ चूहा-चूही का स्मरण आवश्यक हो गया है।

पाबूजी का जब विवाह मंडता है तब ये ही गणेशजी महाराज फिर याद किये जाते है। यहाँ कहने को तो यह कहा जा सकता है कि ये सब गौण प्रसंग है पर एक ही तरह के घटना प्रसंग के उबाऊपन से ध्यान हटाकर सुरूचिपूर्ण मनोरंजन और विनोद को बढ़ाते लगते हैं। इस तरह कथा - प्रसंगों की घटोतरी- बढ़ोतरी, अन्तरकथाओ का रेलमपेल और श्रद्धालु दर्शकों का परिपक्व मन मिलकर पड़ वाचन के उत्कर्ष एवं श्रेष्ठत्व को रिद्धि-सिद्धि सुख शान्ति के रूप में समायोजित करते है।

पड़ संगीत

पड़ का प्रचलन कंठ-दर-कंठ होने से इसकी गायकी विविध रही है परंतु मुख्यतः जिन रागों में यह गाई जाती है उसकी लय ताल कहरवा द्रुतलय, कहरवा अति विलंबित लय, कहरवा ताल मध्य लय रही है। शास्त्रीय संगीत की पूर्ण बंदिशें पड़ में मिलना मुश्किल हैं पर लोकसंगीत की दृष्टि से कुछ ऐसे विचित्र लय ताल स्वर मिल सकेंगे जिनकी जानकारी पड़ वाचक भोपे को भी शायद न हो। ठेगा या टेक पदों से गायकी में विशेष लोच और मधुरिमा का सहज समावेश हो जाता है। इसी प्रकार छंदों के संबंध में भी कोई एकरूपता देखने को नहीं मिलती।

पड़ में प्रयुक्त रागिनियों की स्वर लिपि इस प्रकार है—

1. कहरवा (द्रुतलय)

   सा रे सा नि सा सा सा ग ग ग म म म म ग रे ग म

   सा सा रे रे सा नि नि सा म- पध म प म ग रे सा सा सा सा सा रे ग गम-ग गसा सा

2. कहरवा (अति विलंबित लय)

   सा रे मम प- पप म निसा रे नि नि सा- सा मरे म + ...पप सा सासा +

   सा धप मरे -------नी------ ओ - सा सा सा सा

   रे निसा रे निनि रे -------- + ------ 0

3. कहरवा (ताल- मध्यलय)

   सा सा साध सा सा- सा ग गम धनि धप मप गम ग गम पध प- पध-प- पप- प पप-प

   मप धनि निसा निधप गम रेग गम पध पध म- गरे गसा सा सासा धध पध पम मप मग सा रेग रेग सा सा - - -

4. सा साग सा रेग सा सा सा निसा साम म गम गम पध- ध मध प- ध मध पम- प पनि धनि ध ध धनि धनि—

१२३५७

चित्रफलक

पड़ मे चित्रित चित्रो का हर समय एक रूप नहीं रहा। समयानुसार उनमे घटत-बढ़त होती रही। पड़ बनवाने वाला भोपा कभी अपनी चाह के अनुरूप चित्रो का संयोजन चाहता है तो कभी चितेरा भी अपनी पसंद की चित्र सज्जा कर पड़ को सागोपांग स्वरूप देने की चेष्टा करता है।

चित्रो का यह संयोजन गाथानुसार क्रमबद्ध नही होता। यदि ऐसा होता तो न तो पूरी पड़ खोलने की आवश्यकता रहती न भोपे-भोपिन को खुलकर उसकी प्रस्तुति ही देनी पड़ती। गाथा के अनुसार चित्र पूरी पड़ मे फैले होने के कारण वाचन के समय पूरी चित्रावली जीवंत हुई लगती है। यह पूरा पड़ भाग ही प्रदर्शन मंच होता है जिसमें वर्णनानुसार पड़ में फैले चित्रो को भोपा रावणहत्थे के गज की छुवन से दरसाता है और भोपिन अपने हाथ में रखे दीवट से रोशनी देती हुई नृत्य मग्न रहती है।

महत्वपूर्ण पात्रों का आकार बड़ा और उनके घने गाढ़े तथा अधिक चमक दमक देने वाले रंग पड़ की चित्रण विधि एव रंगविधान को दर्शाते हैं। विविध रगो मे सिन्दूरी मुख्यतः मुँह भरने के काम आता है अतः इसे मूण्डा (मुँह) भरणा कहा जाता है। पेडों का तल और नदी- समुद्र के किनारे भी इससे दिखाये जाते हैं। पीला रग वस्त्राभूषणों को निखारने में जबकि हरा वनस्पति तथा वस्त्र को उभारने में प्रयुक्त होता है। हरे रंग पर हिरमिच और उस पर लाल रंग की बिंदी लगने से उस चित्र का सौदर्य विशेष रूप से छविमान हुआ लगता है। आसमानी और काला रंग भी सुन्दरता को बढ़ाने वाले होते है। रंगो को अधिक निखार देने के लिए स्याही से उनका वाह्य रेखाकन किया जाता है। इससे चित्र विशेष यथा- ऑख, कान, मूँछ, नाक आदि की ओपमा मुँह बोलने लगती है। स्याही से ऐसी पतली-मोटी रेखाओं में किसी चित्र को बॉधने की क्रिया स्याही निकालना कहलाती है। रगो को तैयार करने की विधि के रूप मे छद मिलते है जिनकी याददाश्ती के सहारे चितेरे रंग बनाते है यथा—

काजळ कत्थो बीजाबोळ। उण में डालो गूद को जोळ।
थोड़ो जल अरू भांगरो मिले तो आखर आखर दीवलो जले॥

अब रंग ब्रुश कपड़ा सभी बाजार में मिल जाता है किन्तु चित्रों के सयोजन,

रंग सौष्ठव और उनके अनुरूप उसके कथा विन्यास की प्रतीती तो वही कलाकार करा सकता है जो पड़ चित्रण की समग्र प्रक्रिया और उसके कथा विन्यास की बारीकियों से सुपरिचित है। उदाहरण के लिए लाल काला चितकबरा रंग जो घोड़ियो को दिया जाता है वह उनकी विशिष्ट पहचान और तदनुरूप गुण-धर्म का प्रतीक है। घोड़ी का पाँव लाल अथवा काला होना भी एक विशेष अर्थ तथा प्रतीक को दर्शाता है किन्तु अनजान और परम्परा से विहीन कलाकार जब पड़ बनायेगा तब भूल जायेगा कि लाल रंग ऊर्जा का, शक्ति का, स्फूर्ति का प्रतीक है और ऐसे घोड़े-घोड़ी के पाँव मेहदी रचे भी होते हैं।

पड़ वाचक भोपों में कुछ ऐसे कलाकार भी हुए है जो पड़ चित्रांकन में भी बड़े दक्ष रहे। सोजत के भूराराम ने बताया कि वह स्वयं पड़ चितेरने का काम करता है। उसकी पत्नी पपली भी इस कार्य को बखूबी जानती है। पपली ने बताया कि उसने पड़ बनाने का काम उसके पिता से सीखा जब वह उम्र में छोटी थी। उसके पिता ने न केवल अपने स्वयं के लिए बल्कि दूसरे भोपो के लिए भी पड़ बनाई तब पपली भी रंग घोटने के साथ-साथ चित्र बनाना सीखती थी। भूराराम को भी उसी के पिता ने यह कला सिखाई।

भूराराम ने बताया कि यह पाबू देवता का वरदान है। उसे चित्र बनाने में बहुत ज्यादा श्रम और माथापच्ची नहीं करनी पड़ती। बातों ही बातों में उसने मुझसे कागज और पेन माँगा। मैंने अपनी डायरी का पन्ना उसे पकड़ाया तो उसने तत्काल ही पाबू-सोढ़ीजी का रेखांकन बनाकर मुझे दे दिया।

पपली ने बताया कि पड़ के समक्ष गाने और नाचने की कला उसे सेंतमेंत में ही हाथ लग गई। इसके लिए कोई कठोर परिश्रम नहीं करना पड़ा। और न किसी की मार ही खानी पड़ी। देवता के प्रति चेता हो तो सारे काम मुश्किल के भी आसान हो जाते हैं। उसके साथ उसका छह वर्षीय लड़का गुणेश भी था जो रावणहत्था लिए पड़ के सम्मुख नाचकर पर्यटकों का मन जीत रहा था। देखने वालों की सर्वाधिक भीड़ भी वही जुटा रहा था।

मैंने जब अपने संग्रह का पाबूजी की पड़ का पाठ सुनाया तो पपली स्वतः ही गाने लग गई और कहने लगी कि पाबूजी का ध्यान करते ही सुरसतमाई हिरदै विराज जाती है और कंठ-गले से गीत गायकी का उफान शुरू हो जाता है। जितने

दिन सुनो उतनी ही नई-नई गायकी बढ़ती जाती है, घटने का तो नाम ही नहीं लेती।

भूराराम का पूरा परिवार ही पाबूजी की पड़ बाँचनी में समर्पित है। एक लड़का गुणेश से भी अधिक कलाबाज है। वह हाथ की अँगुली के साथ पाँव के अँगूठे पर भी नाच के समय बड़ी तेजी की थाली घुमाकर दर्शक-श्रोताओं को अचरज में डाल देता है। पपली ने बताया कि पड़ बनाने के लिए अब तो रंग-ब्रश सब सीधे मिल जाते है पर पहले सारे रंग पत्थर रंग होते जो बड़ी मेहनत माँगते। घंटों तक उन्हें घोटते रहना पड़ता। ब्रश भी भूंगर नाम के जानवर के बालों से बनाया जाता जो बड़ी मुश्किल से हाथ लगता।[1]

यह सच है कि पड का कोई पात्र मंच पर प्रदर्शन देने नहीं आता। मगर कलाबाज भोपा अपने प्रदर्शन द्वारा उसे एक सम्पूर्ण नाट्यरूप दिये लगता है। तब हर चित्र सजीव लगता है और हर पात्र रंगस्थली में उतरकर अपने अभिनय, क्रियाकलाप तथा कथोपकथन द्वारा पूरे रंगदर्शन को सार्थक करता परिलक्षित होता है। चित्रों की रेखाएँ, उनका भरण, रंग वैशिष्ट्य, प्रकृति-पुरूषमय वातावरण दर्शकों को साक्षात् नाटक होने की प्रतीती कराता है।

पड़ की एक विशेषता यह भी है कि पात्र प्रारंभ से अंत तक अपनी उपस्थिति दिये रहता है। मानवीय नाटक की तरह पात्र अपने जिम्मे का अभिनय कर दर्शकों से ओझल नहीं हो जाते। वे बराबर उपस्थित रहते हैं और अपनी बारी आने पर चलायमान होते हैं और फिर स्थिर हुए असल अलौकिक बने रहते हैं।

पड़ का हर प्रसंग प्रस्तुति के समय जीवंत स्फूर्ति और शाही ताजगी लिये मुखातिब होता है। प्रसंग चाहे युद्ध का हो या युद्ध के लिए प्रस्थान का, घुड़सवारी का हो या तोरण चटकाने का, विवाह का हो या गायें चराने-चुराने का, बैठक मंत्रणा का हो या हुक्का तमाखु का; हर दृश्य और पात्र नाटकीय तत्वों से परिपूर्ण सजाधजा, चौकस और दिलदार दिखाई देगा। हवा से बातें करती, हिरण सी चौकड़ी भरती घोड़ी पर सवार, उन्नत ललाट, बड़ी-बड़ी आँखें, विशाल वक्षस्थल और शौर्य के धनी पाबूजी एवं उनका शाही परिवेश पूरी पड़ को ही तेजोमय बनाये रखता है। पड में चित्रित हहराते पेड़ पौधे, झिलमिलाते महल झरोखे, घोड़ो, की हुँकारें,

---

1 उदयपुर के शिल्पग्राम में 15 अक्टूबर 1996 को हुई बातचीत के अनुसार।

घमचखाते घूघरे, जीणपलाण, रणबाजों की तनी हुई मूछें, तेज आँखें, भरे होठ उन्नत नाक, जड़ाव जड़ी पगड़ी, हीरे पन्ने के हार, युद्ध का उन्माद लिये ढाले, कटारें, भाले सबके सब ओज और ऊर्जा के जीवंत पहरूए लगते हैं।

पड़ कला सम्पूर्ण रूप में राजस्थान की देन है। कुछ लोग इसे मध्यप्रदेश की देन मानते है। किंतु यह भ्रामक है। पहले मेवाड़ का पंचांग बहुत चलता था। इसे सर्वाधिक तो मध्यप्रदेश में ही खरीदा जाता था। इसमें चित्रकारी करने वाले राजस्थान के भीलवाडा जिले के गाँव पुर-मांडल के पड़ चितेरे ही होते थे। चित्रकला की शैली चूँकि पड़ चित्रों से हूबहू मिलती जुलती थी इस कारण भ्रमवश ऐसा हुआ। पड़ चितेरे श्रीलाल जोशी ने बताया कि उनके पुरखे ज्योतिष का काम भी करते थे। पंचांग प्रति वर्ष बनता। यह एक फीट चौड़े तथा सात फीट लम्बे कपड़े पर बनाया जाता। इसके दोनों तरफ लिखावट होती। ज्योतिष का काम करने के कारण लोग इन्हें जोशी कहने लगे जिससे कालान्तर में ये जोशी नाम से ही जाने जाने लगे।[1]

इस पंचांग में कार्तिक शुक्ला एकम से कार्तिक कृष्णा अमावस्या तक का, पूरे वर्ष भर का लेखाजोखा रहता। इसे बाँचने के बाद ही अन्नकूट का भोग लगता। यह भूंगली पर लपेटा रहता। अतः इसे 'अन्नकूट भूंगल पुराण' भी कहा जाता। गुरू, डाकोत या फिर ब्राह्मण लोग मंदिर या चौपाल पर बैठकर पूरे वर्ष का भविष्यफल सुनते और उसके बाद गायें भड़काई जाती। आजादी के बाद तक यह पंचांग दस रूपये में बिकता रहा। बाद में इसका प्रचलन बंद हो गया।

पड़ के अलावा पाबूजी की गाथा माट नामक वाद्य के सहारे गायी जाती है। इसमें दो माट वादक तथा मुख्य गायक एवं सह गायक होते है। रात्रि जागरण पर प्रमुख रूप से इसका आयोजन होता है। माटों पर पाबू गाथा का यह गायन पवाड़ा अथवा परवाड़ा बाँचना कहा जाता है। इन पवाड़ों की संख्या बावन कही गई है। पाबूजी के देवलोक होने को घटनाओं से संबधित सयला गाने की परम्परा भी प्रचलित है। ये सयले-स्याले चौबीस हैं। इनका एक नाम 'परचा' है जो अधिक जाना माना है।

पड़ बनानेवाले पारम्परिक चित्रकार छींपा जाति से सम्बन्धित हैं। इनका मूल

---

1. भीलवाड़ा में श्रीलालजी से 8 जनवरी 1997 को उनके निवास पर हुई बातचीत के अनुसार।

स्थान शाहपुरा रहा। वहाँ से निकलकर कुछ लोग पुर मांडल जा बसे। बाद मे भीलवाड़ा को भी इन्होंने अपना निवास बनाया। वर्तमान में शाहपुरा और भीलवाड़ा, दो ही इनके मुख्य स्थल है। पड़ चितराई मे श्रीलाल जी ने सर्वाधिक प्रसिद्धि ली। सर्वाधिक नये प्रयोग भी इन्ही ने किये। इनमें पृथ्वीराज-संयोगिता, मूमल-महेद्र, ढोला-मारू, हल्दीघाटी, पद्मिनी का जौहर नामक पड़ें उल्लेखनीय हैं। श्रीलालजी ने लघु आकार के पड़क्ये भी कई बनाये। यहाँ तक कि टाई पीस भी पड़ शैली में कई निकाले। अब तो वस्त्रों में भी पड़ शैली के चित्रों की बहार देखने को मिलती है।

जो पड़ें धार्मिक अनुष्ठानमूलक थीं वे अब उससे कई गुना अधिक व्यावसायिक बन गई है। यह व्यवसाय इतना अधिक फैला कि देश-विदेश में आज बड़े-बड़े घरो, होटलों, हवेलियों और दफ्तरो में दीवालों को पड़ सज्जा देना स्टेटस सिम्बोल हो गया है। श्रीलालजी की बनी पड़े इसकी साक्षी हैं। पड़ में चित्रित लोकदेवता देवनारायण पर इनका बना एक बहुरंगी पाँच रूपये का डाक टिकिट भी भारत सरकार द्वारा जारी किया गया।

शाहपुरा के दुर्गेश जोशी को पड़ चित्रण का प्रथम राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुआ। पड़ शैली के पारम्परिक चित्रकारों के अलावा अन्य चित्रकारों में सर्वाधिक प्रसिद्धि जयपुर के प्रदीप मुखर्जी ने प्राप्त की। इनकी दुर्गा सप्तशती नामक पड़ कृति सर्वाधिक चर्चित हुई जिसमें तेरह अध्यायों के सात सौ श्लोकों से संबंधित अट्ठयासी लघु चित्र एवं एक हजार से अधिक आकृतियों का समावेश है। तीन-चार फीट की इस चित्रावली को पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर ने अपनी कलादीर्घा में तैयार करवाई जो पाँच माह की अवधि में पूरी हुई। भीलवाड़ा के कलाकार निहाल अजमेरा ने तो महावीर स्वामी की पड़ चित्रित करवाकर कई प्रदर्शन दिये जो सर्वत्र सराहे गये। देश-विदेश में पड़ों का प्रचार करने में भी इनका उल्लेखनीय योगदान रहा।

जनजीवन मे पाबूजी इतने लोकप्रिय हुए कि कई कवियों ने उनके व्यक्तित्व-कृतित्व को लेकर रचनाएँ लिखीं। चारण कवि मेहा ने 'पाबूजी का छंद' लिखा तो लधराज ने 302 दोहों की रचना की। बांकीदास ने 'पाबूजी के गीत' बनाये तो रामनाथ कविया ने 'पाबूजी के सोरठे' लिखे। आशिया मोड़जी ने तो 'पाबू प्रकाश' नाम से एक वृहद् काव्य की रचना की। यह पाबू प्रकाश इतना प्रसिद्ध हुआ कि कई कवियों ने इसी नाम से पाबूजी पर अपना सृजन दिया। इनमें बख्तावर मोतीसर, खुसजी

मोतासर, करणदाना, जोधा अगरसिंह के नाम उल्लेखनीय हैं।

इनके अतिरिक्त मुकन्दसिंह की पाबूजी की वेलि तथा भारतदान, गिरवरदान के लिए पाबूजी के गीत भी कम प्रसिद्ध नहीं है। प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों मे ज्ञात-अज्ञात रचनाकारों की पाबूजी विषयक सामग्री का भराव भी कम नहीं है। लोककंठों पर पाबूजी के गीतों की महिमा तो बड़ी अनूठी और ओजस्वी रही है। पाबूजी पर लिखे ख्यालों का विभिन्न ख्याल मंडलियों द्वारा रात-रात भर प्रदर्शन होता है। इन ख्यालों को देखने के लिये आसपास का सारा क्षेत्र उलट पड़ता है। पं बंशीधर शर्मा ने लिखा 'पाबू प्रकाश का मारवाड़ी खेल' कई मंडलियां द्वारा राजस्थान तथा उसके बाहर भी खूब खेला गया।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि राजस्थानी पट्ट चित्रकला की सुदीर्घ परम्परा में पड़ (फड़) कला की लोकाभिव्यक्ति लोकचित्र कला का सशक्त एव अनुपम माध्यम रही है। जो धार्मिक अनुष्ठानमूलक अनुरंजन का वैशिष्ट्य है। अपने कुल देवता के प्रति दृढ़ आस्था और अटूट श्रद्धा का ही यह आलम है कि पाबूजी के भक्त सुख और दुःख की हर घड़ी में उनका स्मरण किये रहते हैं। उनकी मान मनौती करते हैं। रातिजगा देते हैं तथा उनकी जीवनलीला विषयक चित्रगाथा की अनुपम धरोहर फड़ का वाचा गाकर जीवन धन्य करते हैं।

ये फड़ चित्र राजस्थानी वीर संस्कृति के जीवंत दस्तावेज है। युद्ध यहाँ के वीर और वीरांगनाओं का अनिवार्य जीवनाचार रहा है। 'प्राण जाय पर वचन न जाई' का सरोकार यहाँ का सर्वोपरि मानवीय पक्ष रहा है। इसी कारण पाबूजी चंवरी से उठकर अपने वचन का निर्वाह करने को दौड़ पड़ते हैं। जीवन संगिनी को पाने से भी प्रबल पक्ष, प्राथमिक एवं अनिवार्य धर्म-कर्म वाटे का, वचन का निर्वाह करने का आदर्श ही पाबूजी को मानव से देवत्व के पद पर प्रतिष्ठित कर पाया। मानवता की ऐसी मिसाल जिस-जिस ने भी कायम की वह लोकदेवता के रूप में जन-जन का श्रद्धेय बन पूजित एवं प्रतिष्ठित हुआ। तेजाजी, गोगाजी, रामदेवजी, देवनारायणजी आदि इसी कोटि के मनुदेव हैं जिनके गाँव-गाँव देवरे, मंदरियाँ और घर-घर पूजा है।

पाबूजी की पड़ : मूल पाठ

आरती— *पाल [1] पाबू कोलूमंड[2] बाजा बाजिया*
कोलूमंड धुरिया निसांण।
गादी बिराजो जोधपुर री।
कोलू रा दरबार राठौड़।
राम खुदाया नाड़िया, लछमण बाँधी पाल।
जल भोडल का बेवड़ा, सीता पाणी री पणियार।
ईंडा सेवै कूकड़ी, जलजो सेवै आड।
अम्मर तारा चाँदो गणे, डेमो ढाबे व्हेती नदी रा नीर।
कलहल करै कालमी, आप अंबोला खाय।
जद चढ्या पाल पाबू, सो दे लंका [3] पै डाव।
पाल पाबू पाट पधारजो करूँ पाबू थारी आरती।
आरती में हीरा मोती दान॥
पेली धाम जागी कोलू में गूँजे, धुरिया निसांण।
करूँ पाबू थारी आरती।

गावणी— *राठौड़ां घरे पाल पाबू अवतार लियो।*
केसर री क्यारी में।
नारी रा थण चूंक्या पाबूजी।
माता कँवलादे गोद खेलाविया।

---

1 पालनहार, पाल नामक गाँव बसाने के कारण पाबूजी को पाल पाबू भी कहा जाता है।

2 कोलू गाँव जहाँ पाबूजी का जन्म हुआ। यह गाँव जोधपुर जिले के मालानी परगने में फलौदी से 28 किलोमीटर उत्तर मे है। इसे कोलूमंड अथवा कोलूमठ भी कहते है।

3 पूर्व सिंधप्रदेश की लंकाथली जो अब पाकिस्तान में है। यहाँ की साँढ़नियाँ (ऊँटनियाँ) प्रसिद्ध थी।

व्हिया पाबू बरस बारा म ठाकर जोध जवान।
जोधपुर री गादी बिराजे कोलूमंड दरबार।
राते सूता ठाकर पाबू सोना रूपा रे म्हेल।
सपना में चारण रे घरे खेलाई घोड़ी केसर कालमी।
लियो ठाकर पाबू चाँदा डेमां ने हेलो पाड़।
जावै ठाकर सगत चारण रे पांवणा।
जिया ठाकर चारण के गोल्या मथाणिये गाम।[4]
बूझे चारण पाबू ने वात कतरा काम पधार्‌या म्हारी कोटड़ी।
काम टाले उगती किरण्यां रा उगतां भांण।
ए घर रा काम आया थारे रावले।
भवानी चारण राते म्है सूता सोना रूपा रे म्हेल।
एक सपने खेलाई थारे आंगणे घोड़ी केसर कालमी।

वारता— घोड़ी रे वास्ते आया हॉ। चारण थूं घोड़ी म्हाने पाबू ने बताय। ठाकर पाबू म्हूं गी सात समंदा पेले पार। घोडा लाई च्यार। लीलाधर घोड़ो देव म्हाराज ने दीनो। सेतलो घोड़ो बाबा रामदे ने दीनो। ढ़ेल घोड़ी बूड़ाजी ने दीनी। जी पछूणी ऊबी है एक घोड़ी केसर कालमी। वा सात बूंरां में ऊबी है। ऊदो दूदो गिया जो बूंरां रे सात ताला लगाया। गिया पोखर री पेड़ियां हिनान करवाने। वे आवे नी अर आयने घाड़ी देखावां नी। उठग्यो डेमो अमली हाक भड़ाक बणावै। चटूड़ी आंगली री कूच्यां तो घालै ताला रे मांय। सातई ताला नीचा झाड़िया। पकड़ घोड़ी ने लाया माणक चौक में। देख पाबू घोड़ी ने मन में खुसी व्हिया। तो केटे भवानी चारण थारी घोड़ी रो मोल। घोड़ी रे बराबर सोनो रूपो तोलदां। बोली चारण भवानी-सुणो पाबू कोनी सोना रूपा रा मां दुरगा चारण रे काल। सोना रूपा रा चारण रे झुकरया म्हेल। आ घोड़ी म्हैं जिनराव खींची[5] ने दे दीनी है। किण रीतीऊं के जिनराव खींची रे जागा[6] रे मांयने म्हारो गाम है। नौ लाख तो गाय ने दस लाख बलद जो ए खीची की जागा के मायने चारो चरता ने पाणी पीवता जिण रे वास्ते खींची ने या घोड़ी दीनी। अबे या घोड़ी जो

4. जोधपुर जिले का गाँव। यहाँ की मिर्चे प्रसिद्ध हैं।
5. पाबूजी का बहनोई जामल (नागौर) का राजा।
6 जागीर।

आपने दे दां तो जिनराव खींची आय गायां घेरले। गाया घेरले जिनराव तो घास वनां पाणी वनां गायां मरजाय। पाबू बोल्या- सुण देवल चारणी। करी थारा मनमें भोली वात। चारो चरबाने देऊँ गायां ने रातड़िये रण जोड़।[7] पाणी पीबाने दे दूँ नाड़ी नीमली।[8] जे जिंदराव खींची थारी गायां घेरले तो वीं टेम के मांयने म्हांने आयर कोटड़ी पुकार करदीजै। म्है चढ़ांलां गायां की बार। गाया की बार चढेला पाल पाबू। म्है थारी गायां पाछी लावां। अतरो पाबू के केतां चारण के जीव में संतोख आई। चारण लाई सांभर को लूंण।[9] दियो ठाकर पाबू रे हाथ। तो चारणी कांई बोली ए के पाबू वचन चूको तो गळ जावोला सांभर का लूण ज्यूँ।

गावणी— *तो व्हिया ठाकर पाबू घम घोड़ी असवार।*
ए आकासां उड़ चाली केसर कालमी।

वारता— तो घड़ी दो घड़ी डेमे जोई पाबू री वाट। नी आवता देखिया जद चारणी ने बोल्यो चाँदो डेमो, सुण चारणी बात। थूं घोड़ी देखा वीने पाबू ने गमावियो। के तो घोड़ी नीची उतार, नी तो बारा दनाऊँ लूटां थारो गोल्यो मथाण्यो गाम।

गावणी— ए वीरां सूं मारूं थारों टांडो[10] बाळदो[11]।
खेवे भवानी चारण गूगल धूप।
धूपां के घमरोळे घोडी नीची ऊतरी।
पकड़े भवानी घोड़ी को डावाड़ो पोड़[12]।
पाल पाबू नीचा ऊतर्‌या।
लीदी घोड़ी ने वचनां सूं खुलाय।
ए लार बाँधी भूरागड़ री कोट में।
लाया घोड़ी केसर कालमी।

---

7 घास का बीड़ा, रण से तात्पर्य ओरण (बीड़ा) से।
8 नीमली नामक तलैया।
9 नमक।
10. समूह।
11. बैलों का।
12. पॉव।

कर्‌यो धरती पर अम्मर मोटो नाम।

पेले रा संपाड़ा पोखर परे न्हावणो।

मांडो च्यॉंटा सांवत[13] केसर घोड़ी पे जीण पल्लाण।

चालां पोखर री पेड़्यां न्हावा ने।

घाली केसर घोड़ी के वरमाळ।

पूठो छपायो[14] हीरा मोतियाँ।

व्हिया ठाकर पाबू घम[15] घोड़ी असवार।

जावे पोकर रे जूनां मारगां।

एक तो बासो[16] लियो पोकर रे मारगां।

दूजा बासा में पोखर में छोड़े पागडा।[17]

सामर सूं पधारे सामर मेडी रा गोगदे चवाण।

रूणेजाऊँ पधारे बाबो रामदे।

न्हावतां झीलतां रपटे ठाकर पाबू रो डावां पॉव।

डगते पाँव ने गोगदे चवाण हाथां झेलियो।

मांडले गोगा धरमी थारी झोली।

बेटी परणावां भाई बूड़ा वीर की।

कठे लोगां थांरो देस वास।

ए किया राजा का वाजो मोबी[18] डीकरा।

सामर नराणो म्हारो गांम।

पीतलदे राजा का वाजां म्हेई डीकरा।

वारता— लियो ठाकर पाबू पोखर परे चवाणा को सगपण रचाया। लियो ठाकर पाबू चवाणां ने साथै। जावै कोलू रे जूनां मारगां। चवाणा रा डेरा दराया हरिया बाग में।

---

13 सामंत।
14. पीठ सजाई।
15. गर्व से, रौब से, त्वरा से।
16. विश्राम,
17. पागड़ा छोड़ना, घोड़ी से उतरना।
18. प्रिय।

बाँधो गोगा धरमी असल राठौड़ी पाग। झुग्गा पेरो कली पचास का। पगां पेरो मुखमल मोचड़ी।[19] थें जावो बूड़ाजी री कोटड़ी। ए केडी लोवाऊँ थांने बूड़ोजी वाना केवसी। गिया गोगो धरमी बूड़ार्जी रे कोट। हूतो बूड़ोजी म्हेल। गोगाजी ने आता देख झट बेठाव्हिया। केदो गोगा धरमी थारा मन की बात। कतरा काम आया म्हारी कोटड़ी। थारे बतावे केलम बाई। एक सगपण सांदो मेडी रा गोगदे चवाण का। अतरोक नाम लेता बड़ोजी बोलिया— नीं मले आं घरा री खाटी कुलड़ी छाछ। एक राठोडां के चवाण के सगपण नीं व्हे।

गावणी— *नटिया बेटी रा मायर बाप।*
मामा नाना नटिया गिड़[20] गिरनार का।
जातो गोगो गियो मन मे हुंस्यार।
पाछा घरतां को मूंडो कमलायो कमल का फूल ज्यूँ।
ऊबो गोगो धरमी हाथां की हथकळी जोड़।
पाबू रे सामै अरज करे धणी लछमण मोटा देवने।
ठाकर पाबू थारा वचन पार उतार।
कियां वचनां लाया सांभर का सरदार ने।

वारता— जदी ठाकर पाबू देख बोल्या- के कतरीक कला जाणों के कला हला कई नी जाणां। रोटी खावां ने मोजां करां।

गावणी— *मंगावे ठाकर पाबू सुरे[21] गाय को दूध।*
एक कलाऊँ बणायो बासग नाग।
आगे गलायो चंपला का पेड़ में।
आगी सावण सुरंग पेली तीज।

वारता— हींडा हींडवा बाई केलम आवे जी टेम ने आंगली के चेंट जाजो। उठे दादोजी भतीजी परणाई।

---

19 मोजडी, जूनी।
20 गढ़।
21 श्रेष्ठ, देव।

गावणी— *काड़ा तीजण काजल सुरमा का रग।*[22]
ए हीडा हींडवा चालां काकाजी का हरिया बाग मे।
कोई का घर में काजल हो जी काड़ियो।
बणजो तीजणियाँ, कर्‌या सातों सणगार।
एक जात माली ने हेलो पाड़ियो।
दीजै राठौड़ाँ का माली बागां की खड़की खोल।
एक हीडो बंधावो चंपला री झीणी डाल नै।

वारता— कोनी तीजण बाड़ी खोलण को सम्या जोग। म्हें उतार्‌योड़ो कालूडो वासग नाग जो तीजणी ने खाई जागा। लकिया भकिया खावै वासग नाग। वींमें थारा लेख कोई आगा टलै न पाछा टलै। वड़ती दे जाऊँ मालीड़ा गेंद गला का नवसर हार। माली पड़ग्यो मांये अदमणा रा लोभ में तो साती दरवाजा खोलिया।

गावणी— *दूजी तीजणिया हींडै बागां में दो दो चार।*
केलम हींडै बागां में एकाएकली।
हळमळ ने बंटै रेसम की डोर।
हींडो बंधायो चंपला के री डाल ने।
चढ़तांई बाई केलम देखे ठेलड़ी गुजरात।
उतरता हींडा में राणाजी रो नवलख मालवो।
कोई तीजणिया वीणै धरती पड़ियो फूल।
केलम बाई घाल्यो ऊँचो फूलड़ा में हाथ।
डालो उतरे कालूड़ो वासग नाग।
तोड़ खाई बाई केलम री चटू आँगली।
गैड़ गैड़ में जावै केलम रो कोड़ीलो[23] *जीव।*
गैल्या[24] *आवै कालूड़ा वासग नागरी।*

---

22. रेखा।
23. खोड़ीला, खराब।
24. चक्कर, नशा।

लीधी सातूं तीजण्यॉं झोली में घाल।
लाने उतारी बूड़ाजी का कोट में।
बूड़ा राजा सूता बटेन आव।
थने नीद सरप वलूम्या वांकी चटी ऑंगली।

वारता— बाई की बूझना कराओ। केमल घड़ी पलका रा पामणा है। बाई मरणे वाला है। जै बाई मरग्या तो राठौड़ा को आँगणों कुँवारो रेई। केमल ने बूड़ाजी बोल्या— झाडक्याँ रे मांईने, दरां में हाथ घाली जने सॉप हीज खाई। म्है बूड़ोजी कस्या खीच ने खाटो खावता थका म्हेल मे सूताई रां। क्यूँ तो बाग बगीचा जावां नै क्यूँ हॉंप गोईरा खावै। दो गवा रा फलका नै एक कुडछी चणा री दाल बैठा-बैठा खावां नै कबाण्या म्हैल में सूता रैवा तो कोई हॉप खावै ने कोई गोइरा। बूड़ा राजा गजब कर्‌या। हीड़ागर छोकरी काची नींद ने म्हाने जगाविया। केलम मरती, केलम री मॉ मरो पण म्हांने काची नींद में मती जगावो। म्हांकी नींद असी जे मूलाऊँ[25] ढोल घुरायो व्हे तो नींद नीं जागे।

गावणी— *जा हीडागर छोकरी झाड़ागर ने बुलाव।*
एक सरप उतरावा केलम की चटी ऑंगली।
दोड़ै हरकारा धरती मे दो यन च्यार।
वेगो बुलावे सरपारा जूना गारडू[26]।
लीधा बरामण झाड़ागर पोथी पाना बगलां में घाल।
आवै बरामण बूड़ाजी की कोटड़ी।
आ झाड़ागर बूड़ाजी ने मुजरो साजियो।
बोले झाड़ागर कैदो बूड़ाजी थांके मनकी बात।
अतरा कां बुलाया थांरी कोटड़ी।
काम टालै ऊगती करण्यां का उगता भांण।
एक सरप वलूम्यो केलम की चटी ऑंगली।
एक सरप उतारो केलम की चटी ऑंगली।

---

25 मूसल से।
26 जानकार।

वारता— वामण वाल्या क ना कुला सरप का धरता पर पड़ी बॉच्र्। जे बाई की जीवणी ऊबरे तो। जींऊ वरामण झाडागर जी खेवै पोथी ने अनण चनण का धूप। पोथी रा अगसर[27] बॉचिया। ज्यूँ झाड़ागर झाड़दे दूणा चढ़ाव करै सरप देव। नो कुली बाँच सरप की माथा धूंणिया। कोनी दीखै ई पोथी में ई सरप की जात-पाँत। जात वना झाड़ा आज लागै न काल लागै। जावो ठाकर पाबू रे कोट। एक सरपांरा अजूणा गारड़ू ठाकर पाबू भूरा राठौड़ एक सरप उतारे बाई केलम की चटी आँगली रा। ठाकर पाबू के कोटड़ी जावो तो बाई कै दे उबरेला नींतर मरबाला है। दीनी बड भोजाई अड़दा पड़दा खेंचाई। जावै ठाकर पाबू रे कोट में। जा परा भोजाईजी हेलो पाड़ियो- ठाकर पाबू थांनै सूता बैठा नै नींद आवै। बाई गी बाग के मांई। सरप वलूम्यो बाई की चटी ऑगली। तो बाई जीबाला[28] नी है। बाई मरबामें है। बाइ मरग्या तो राठौड़ा रो आँगणो कुँवारो रेई। ठाकर पाबू बोल्या— के सुण बड़ भोजाई धाड़ा करिया गड़लंका सांढ़ ले आया। बड़ा-बड़ा ने म्हां नमाया। झाडो बिच्छू रोई नीं सीखिया। म्हारो केणों करो। न्हांक दीजो दूध दयां[29] की छांट। बाई ने गोगाजी रा नाम री कर दीजो। बाई नीं मरै। न्हांक दी वाई ने गोगा धरमी के थान। तांती वट बाँधी गोगारे नामरी। वाई ने तांती बॉधता सरप देवता सरप उतरग्या जो बाईजी ने चाढ़िया। बूड़ोजी बोलिया— आ कला तो पाबूजी री झट हांवट लीनी।[30] आ कला जे नीं करता चुवाणां के ने राठौडा के सगपण नी वेना। बुलाओ हीड़ागर छोर्या बामण ने, सावा[31] कढ़ावो। ले आई हीड़ागर छोरी वामण ने बुलाने। आयो बूडाजी री कोटड़ी। झट मुजरो हीजियो। कैंदो बूड़ाजी थांरा मनरी बात। कतरा काम म्हारे आदमी मेलिया। हे बामण एक सावा काढ़दो बाई रा थेंई नवरला। सावारो नाम लेता तो बामण झट टीपणो उगाड़ियो। उगाड़ टीपणो बोलियो— फेरा गोगा धरमी ऊँ लिख्या। आठ घोड़ा लगन नारेल हाथी टीको ले जावे सामर री कोटड़ी।

---

27. अक्षर।
28. जीनेवाला।
29. दही।
30. समेटली।
31. लग्न।

गावणी— *.एक तो वासो वासिया मारग के माइ।*
दूजा वासा में मामर में छोड़े पागड़ा।
जाते न्हाकी गला में वरमाल।
थिरते बाँधिया हलदीरा कांकण डोवड़ा।
गावै सैहेल्याँ धोबल मंगल का गीत।
बोलै बधावा मेड़ी रा गोगदे चवाण रा।
नो मण चावलिया दीधा हलदी में पीला कराय।
नवतो[32] देवै साराई देवनै।

वारता— नो मण चावलिया लीधा जोगमाया संगपर घाल। एक नूंतो देवाने निकलै। पैली का नूता दिया गजानंद म्हाराज नै। रद सद लावै चुवाणा की जान में। दूजा नवता वैमाता ने आवै चुवाणां की जान में। कच्छावतारी नै, पेला कानजी म्हाराजनै। रामा पीर नै जोगमाया म्हादेव जी, सरवण। हनुमानजी, भैरूजी, चन्दरमा, सूरज। भोमियोजी म्हाराज अने सारांने। नूतवा आया चोवाणा की जान में।

गावणी— *वणगी गोगाधरमी थांरी जान।*
बाजै नंगारा बंमठौर चुवाणा री जान मे।
आगे व्हैवे जानां रा घमसाण।
लारे सवारी मणधर बासग नागकी।
एक तो वासा लिया मारग के मांय।
दूजा बासा में कोलू में छोड़ै पागड़ा।
जाजे हीड़ागर छोरी वेग सताबी।
वेगो बुलाला बामण ने कोटड़ी।
चंवरी मंडाओ बूड़ाजी री कोटड़ी।
वाजै गोगा धरमी की जानां में नंगारा।
राठौड़ा का तोरण वांदिया।
आई सासू झलामल करती आरती।

---

32 न्यौता निमंत्रण।

अण आरती में म्हांको म्होर पचास।
सोनां की सुपारी रूपया गणदो डोड़से।
मोडां[33] की तणियाँ में हींदे बासक नाग।

वारता— देख नागने आरती पाछी फिरी। आगी सासू ने बूड़ल्या जमाई की लाज। झट आरती पाछी फिरी। गजब कर्‌या ठाकर पाबू चवाणा ऊँ सगपण सांदिया। केलम है नी नेनां हॉचल का बाल। गोगोजी दीखै दनां का पुखता डोकरा। गजब कर्‌या ठाकर पाबू चवाणा के राठौड़ां के सगपण रचाविया। ई बचे म्हांरी वेटी ने जैर को प्यालो देर मारता। के ऊंडा कुवा में पटकता तो म्हेला बैठा डबको भी सुणता। चढगी गोगा धरमी ने रीस। एक दै[34] की दो दै बणाई। एक घोड़ो सामर पूगतो कीनो। दूजी दै ऊँ बनड़ो बण्यो पूरी पूनम को चाँद। जानी जुग बैठा किरत्यां को जाज्यो झूमका।

गावणी— *गावै सैल्यां तो बल मंगल का गीत।*
बोलै बधावा सरी भगवान का।
एक चंवरी मंडाई राठौडां का मांणक चौक में।
बैठो बांमण चंवरी के मांय।
घीरत गायां का होमे चंवरी मे।
दीधी बरामण चार दसां में सोना की खूंटी ठोक।
तागा पलेटे[35] पीला रेशम पाटका।
ऊपरे मेगासर तंबू ताणिया।
केलम का गोगा धरमी का दिया चवर्‌याँ में हथलेवा जोड़।
एक फेरो लियो चंवर्‌यां में हांचोहांच।
दूजा फेरा में राठौडां बोलो थेंई दायचा[36]।
चंवरी चढतां मे बाप बूडेजी दीधी धोबल[37] गाय।

33 पालना।
34. देह।
35. लपेटना।
36. दहेज।
37. धवल।

मांमां गलाता हाथी दीना हीड़ता[38]।

गुड़मल भीकाणा घोडां की घुड़मेल।

हरमल आलांके ओढायो दखणी को चगो चीर।

माँ भीवणी खोल्यो गलाका तमण्या तेवटा।

चाँदा जी घड़ाई सोनाकी सोवन चूड़।[39]

डेमे अमली समंदां का सवामण मोती भाकिया।

दूजा डायचा आया चंवर्‌याँ के माँय हाचोहांच।

डेमाजी सरीसा जे साँचा मोती व्हेता तो अमल तजारा करतां।

ठाकर पाबू डायचो देवाको थांने व्हेतो घणो कोड।

ए घिरता डायचा ठाकर पाबू भाकिया।

छोड़दै केलम बाई गोगा धरमी सूं हथलेवा।

लादै पाबू लंकारी राती भूरी सांढ़ियाँ।

सांढ तो नाम लेता हंसियो चुवांणा रो सात।[40]

चंवरी में बैठोडा गोगोजी छानै मुलकिया।

बोलै केलम सुणो काकाजी बात।

डायचा देवाको व्हेतो घणो मोटो कोड।

ए अणूता डायचा कीकर भाकिया।

डायचा में देता चाँदो डेमो परधान।

हथलेवा दराता चढबारी घोड़ी केसर कालमी।

तो म्हैं हेगी डायचा कर मानती।

आगे बतावै काका सासू नणदां को राज।

जतरो दन ऊगे जतरो मेंणो बोलै लंका की राती भूरी सांढ को।

बोल खदूके बाई के वैर्‌याँ का सरला सेलँ ज्यूँ।

रीजे बाई थारा मन में हुंसियार।

---

38 मस्त, झूमत्ते।

39. चूड़ी।

40. साथी।

तीजे म्हीनें करदूँ लंका री राती भूरी सांढियाँ।
मन लै बाई घोड़ी केसर री नाम।
चाँदो डेमो है पाबू री नीम।
घोड़ी बतावै भीतर को पतला कालजो।
घोडी रेजा ठाकर पाबू का पगल्यां हेट।
तो कर दूँ घर घर में लंका री राती भूरी सांढ़ियाँ।
परण उतर्‌या सामर मेड़ी का गोगदे चवाण।
सींका[41] क्हे मणधारी बासक नागनै।
बेठी केलम बाई रथ तांगा के मांय।
आँसू रलकावै कायर जंगली मोर ज्यूँ।
टूटै केलम बाई गेंद गला रा नवसर हार।
आँसुआं ऊँ भिंजोई रेशम हंदी कांचली।
आगै बेवै जानां का घमसाण।
लारै असवारी कालूड़ा बासक नाग की।
एक सो बासो बसियो मारग के मांय।
दूजा बासा मे सामर मे छोड़्या पागड़ा।
भर्‌या जलम की जामण माता गज मोत्यां थाल।
मोती वधावै सांमर रा झीणां देव नै।
म्हांनै वधाया जामण उगती करण्यां रा उगता भांण।
अर कै वधाया राठौड़ां रे आंगणै।
थे वधावै राठौड़ां घरां की झीणी डीकरी।
बूजै गोगा ने गोगाजी री माता बात।
केड़ा लाधा धरती मे थाने सासरा।
केड़ी लाधी सालां सुसरा की भड़ जोड़।
लांगदी साला सुसरा की जोड़।
समंदा के जोड़ावै लादा म्हांनै सासरा।

41 सीख, विदाई।

बूजै गोगा ने गोगाजी री माता बात।
कतरा राठौड़ां दीधा थानै डायचा।
कतरा डायचा आया चंवर्यां रे माय हांचोहांच।
दो डायचा अणूंताई भाकिया।
डेमेजी सवामण मोती दीना।
पाबूजी दीनी लंकारी राती भूरी सॉंढ़ियाँ।

वारता— बोले गोगाजी री माता- डेमाजी सरीखा रे भी मोती व्हैता तो अमल तजारो[42] करता। नी देखी लंका री रातल भूरी सॉड। ए डायचा केवारा है पण आवारा नी है। अणूताईज है, वां घरां री मांता आंपा बेटी परणीजी है। देदेई तो लैलेवां डाइचा। धरणैं नी बैठां।

गावणी— *जाजै हीड़ागर छोरी खात्यां की खतोड।*
चरखो घड़ाल्यां सायर रूंखरो।
जाजै हीरांगर छोरी लवारां की दुकान।
ताकल्या घड़ाल्या असल बीजलसार का।
लीधा केमल चरखा छबोल्या हाथां झेल।
जावै नणदां में साथण कातवा।
जाय केलम नणदां में मुजरो हाजियो।
आगा पधारो गढ़ भोजाई जी म्हारी जाजमां।
थांरी गादी पे बैठे नणदां सीर की।
महानै ढलावो पीर को नैनां पाटड़ी।
ढलाया केलम बाई ने रंग बाजोट।
बैठी केलम बाई नणदां रे मांय।
बध बध कातै कतवा री कूकड़ी।
कातता बीगतां पड़ियो नणदां में झीणों वाद[43]।

---

42 शुभ कार्य के लिए अफीम एवं उसके नजार (डोड़) का पानी पीने की परम्परा रही है। इसे अमल तजारा करना कहते है।

43 विवाद।

पार नखण काका नाप का
कता कलम बाई थारा पीर रा मांयन बाप।
कैतो अपूता डायचा भाकेया।
दूजी तीजणियाँ ने लीआई पीवर नूं कोई गाय।
कोई लें आई भूरी भैंसियाँ।
थैं लै आया पातू कनूं तंकारी रातल भूरी साँढ़ियाँ।
नणद भौजायां में हेगाऊँ[44] थे मोटा हो।
छूटी केलम बाई रे मन मे रीस।
चरखो पछाड़ै चुवाणां की गज भींत के।
बाव्ळू जाव्ळू थारी नुंवाणां नवली खाप।
चरखो नी कात्यौ म्हारा काका बाप के।
जाजै हीरांगर छोरी पटवारी की पोल।
वैगो बुलाबो पटवारी ने आपणे रावले।
भरिया हीरांगर छोरी कदम का पाँव।
जावै गली मे मल्लां ज्यूँ मालती।
जा पटवारी ने हेलो पाडियो।
सूरज सामी है मेता पटवारी की पोल।
केलको झबरको[45] मेताजी के आंगणे।
जा हीरांगर छोरी पटवारी ने हेलो पाड़ियो।
उठजा पटवारी वीरा वेग बताब।
थूंई चाल थानै बुलावै केलम रंगभर रावले।
चढ़ग्यो पटवारी ने सियोदे ताव[46]।
काळी पीळी चढ़गी लगती तेजरी।
लीधा पोथी पानां बगलां में घाल।

---

44. सबसे।
45. झूमका।
46. ठंड लगता, कंपकंपी देता बुखार।
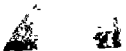
असायो केलम के सगरत पांमणो।
कैदे ए केलम बाई थारा मन की बात।
ए कतरा काम म्हारे मानस भेजिया।
काम टालै ऊगती करण्याँ रा सूरज भांण।
ए घर का काम बलाया थांने रावले।
ए कागद लख मेलो म्हारै काका बाप के।
एड़ै छेड़ै लख जो संवंतां नै जाजा जवार।
अधवच मे मंडावो बाई केलम ने आँसू रेलती।
साँचली सांड व्है तो साँचली पूगती करो।
साँचली नीं व्है तो माटी री घड़ो।
. केलम बाई के सांड्यॉ हीचती करे।

वारता— जतरा दन ऊगे जतरा बाई ने बोले बोलण। कासी में परी जाऊँ करोत लैर मरजाऊँ। चरखाऊँ माथो फोड़ र मर जाऊँ। चुवाणा का च्यौक में बळ जाऊँ। ओ सराप ठाकर पाबू ने लागै। चुवाणा नै नी लागै। लिख कागद दिया हरदान भींडा रे हाथ। पड़ छूटो कोलू रे जूना मारगां।

गावणी— *तारां राता झलै गलतोड़ी[47] मांझल रात।*
पंथ में झलै गलती रात रो।
एक तो बासो लियो मारग के मांय।
दूजा बासा मे कोलू में छोड़ै पागड़ा।
नैणां नैणां में घुटै थारे नींद।
ए सुखकर सूतो पाबू रे कोयर घूंजवै।
आगी पाबू री हीरू भीरू पाणी तणी पणियार।
सूतोड़ा मानव नै मुखड़ै बोलावियो।

वारता— के तो थोथी थलवट को साँप आयो जको ईनै खायनै परो गियो। कै जावे

47 झिलमिल ढलती।

बन कै भाई पावणा। कै जावै मामाळ के आयो पाबू रे कोट मे। अतरोक नाम लेतां ऊठग्यो हरदान भींडो अंग आलस मरोड। देखा ए बेना नीं जाऊँ मामाळ। नीं जाऊँ बैन रे, अर नी सरप खायौ। जाऊँ पाबू रा कोट में। ठाकर पाबू को कोट वताय।

बोली हीरू-भीरू भोले भूलनै बूड़ा जी री कोटड़ी गियो परो नो खावा नै मिलजाला तो औढ़बाने नी मिलैला। दो बातां मांय एक बात काची जरूरी रैई। जावै ठाकर पाबू रे कोट व्हैवे डीलां[49] का जतन जाबता। ठाकर पाबू नैपीर्‌याँ का पीर है। भूखा ने भोजन दै। गढ़पतियाँ नै गाम दै। पाबू री कोटड़ी व्हैवे डीलां रो जतन जापता। खाड़ियो हरदान भींडो जावै पाबू रे कोट मे।

गावणी— *जा दरवानी ने हेलो पाड़ियो।*
दीजै दरवानी वीरा दरवाजो खोल।
एक जावै पाबू री कोटड़ी।
आदी रात की टेम आधी रात के मांय।
हरदानजी जायर मुजरो साजियौ।
उट बैठा ठाकर पाबू रा खान पड़दान।
लुळलुळ कर मुजरो साजियो।

वारता— बोलै ठाकर पाबू सुणो चाँदाजी बात। बूजौ हलकारा ने सारी बात। केड़ी धरती रो, गांम रो आयो आपणे मेलियो। बूजै चाँदोजी के हलकारा थारा मन की बात। कठै थारा देस बास, ए कियां गाम रो आयो म्हारै पामणो। बोले हरदान भींडो- सुणो चाँदाजी। सामर नराणो म्हारो गांम। बाई केलम रो मेलियोड़ो थारेई पांवणो।

गावणी— *घालै हरदान भींडो अड़द फड़द खीसा में हाथ।*
झट मेणा को कागद पाबू री जाजम न्हाकियो।
देख कागद ठाकर पाबू नैणा चाले नीर।
चाँदा सांवत ए कागद परा बाँच।
कोई झगड़ा रो है के रोई राड़[50] रो है।
म्हारा सूं बाँच्यो ए नी जाय।

---

48. ऊसर भूमि।
49. देह।
50. लड़ाई-झगड़ा।

वारता— बोले चाँदा सांवन— सुणो पाबू, अबारूँ तो मेलटो कागद। माथै रात है कठूँ लावूँ लालटेन। कठूँ लावां मुसाल[51]। दन की उगाली[52] आपने वेगोई बाँच सुणांवां। चाँदा सांवत कदी दन ऊगै न कदरी बात। ओ कागद रात वासै नीरियो चावै ओ कागद अबारूँ को चबारूँ बाँच सुणावो। दीजै चाँदा सांवत भाला को म्यान परो खोल। दीजै गढ़ की नींम लगाय। बारा कोसां में जाणै दीवा लागी।

गावणी— *बोलै भाला का उजालाऊँ दादर पपइया मोर।*
भाला का उजालाऊँ सांवत कागज बाँचिया।
बाँच कागद सरमाथा धूणिया।
चाँदेजी बाँच हलजी होलंकी बाँचिया।
हरमल राइके जी बी बाँचिया।
उतरी अमलां में डेमांजी की कोटड़ी आयो।
देख कागज ने गोडा नीचै मेलियो।
घड़ी व्ही दो घड़ी व्ही पाबू बूजना कराई।
चाँदाजी कागट कुणकी कोटड़ी है।
बोले चाँदोजी कागद डेमाजी री कोटड़ी है।

वारता— डेमाजी आपकी कोटड़ी कागद आया है नी। बोले डेमाजी सुणो पाबूजी कागज आया जीं टेम में होका[53] भर मेल्या हा। पवन का फटकारा लागर्‌या। जी टेम म्हैं नसा में बैठा-बैठा बाँचता हा। म्हारे नसो, छोटी मोटी नाड़ी का नीर करां। डाकण्या का गरड़का करां। भूतां का भड़ीका करा। बारा मण अफीण[54] खावां। लुगदी भाँग की खावां। छै ताकड़ी तमाखू घालां चलम में। होका पे चलम्यां चढ़ावां। अतरो नसो म्है करां। तो वीं टेम मे कागद बाँचता हा। नसा में कागद उड़ने म्हैल के नीचे पडग्यो तो दन री उगाले लाधो। अर के कागद उड़र चलम में आपड़्यो तो दो फूँक जासती[55]

---

51. मशाल।
52. उजाला।
53. हुक्का।
54. अफीम।
55 ज्यादा।

आई। पण कागज ने एलो नी घमायो हाँ। कांई कागद ने बूजो। कांई कागद से पड़िया काम। बेटी जाई रे जगनाथ जमारो थांई हारियो। काई कागज से बूजो। अमल का नसा मे दोयेक आंक[56] जरूर उगड़्या हा। कैतो मरगी गोगाजी की मांय। कै मरग्यो गोगाजी को बाप। वणा रे लारै पांची पकवान करे है जीऊँ आपाने बुलाया है। कोई जै नर की छाती चालै तो जाओ सामर में। जो कोई री छाती नीं चाले तो ओ काम म्हांने भलाओ। हेगां री पांती[57] रा म्हे पराजावां डेमोजी।

गावणी— *सुणो रे सरदारा झींणी डेमाजी की बात।*
ज्यांदन परणाया सामर मेडी रा गोगदे चुवाण।
हथलेवे बोली लंका री राती भूरी साँढ़ियाँ।
बाई केलम को मेल्योड़ो आयो कागद।
जतरो दन ऊगे बोले बाई ने बोल।
बोल खटूकै बेर्‍याँ का बाई के सरला सेल ज्यूँ।

वारता— साँचली सांड व्हे साँचली दीजो। अर नीं व्हेतो गारा की घर भेज दीजो। नीतर बाई कासी में करोत लेर मर जावै। चुवाणा का चौक में बळ जावै। चरखाऊँ माथो फोड़र मर जावै। ओ सराप राठौड़ां ने लागै। चुवाणां नै नी लागे।

गावणी— *अतरीक बात करता चढ़गी पाबू ने रीस।*
मांडो ओ चाँदा सांवत केसर घोड़ी पर जीण पलाण।
धाड़ा करां झपटा करां गढ़लंका में बासा तोड़दा।
सांड लार धवती पर वपरावां।
केलम बाई ने हथलेवे लार देवां।
मेणो भगावां लका री रातल भूरी साँड रो।

वारता— पाबू ने कियां ई परवाण है। अतरीक बात करतां बोले चाँदोजी— सुणो पाबू चाँदाजी री बात। आपा चालां धाड़ै। आपां चालां उगूणं।[58] साँड्याँ रैजाई

56. अंक।
57. सबकी ओर से।
58. पूर्व दिशा।

आथूणी। आपां चाला आथूंणा[59] तो मॉड्यॉ रै जाई लकाऊ।[60] कठीनै-कठीनै घोड़ा नै दुडावां। म्हारो केणो करो तो पेली कोई ने हेरै मेलो।[61] माड्यॉं देखर आई जदी पाछो आयन केई आपांनै। सॉड्यॉ लंका मे है। सॉड्यां लेन ऊग आवां। बोले ठाकर पाबू- एक तो चॉदाजी थे जावो। एक डेमाजी ने लै जावो। लंका छोड़ परलंका को हेरो करन उरा आओ। बोले चाँदोजी के हामी तो पाबू ने कल बताई म्हांरीज गला मे न्हांकी। बोले चाँदो जी- पाँच पान को बीड़ो दीजो चारण के हाथ। भरी परगां[62] में भवानी बीडो फेरी। जीं नररी छाती चाली ने कोई बीड़ाने हाथ घाल लेई।

गावणी— *पॉच पान को बीड़ो हेनी भवानी बाई चारण के हाथ।*
भरी कछैड़ी ठाकर पाबू की चारण बीड़ो फेरियो।
बीड़ो ऊँचो आवै सांवत नीचा देखै।
कोई नर की छाती नी चालै।
बीड़ो फरतां लागी घणी जैज[63]।
घणां सरदारां ने चढ़ग्यो सीयो[64] टेतो ताव।
लगती चढ़गी सीया तेजरी।
घणां को दुखै मरबा जीबा को पेट।
घणां छोड़ी ठाकर पाबू की नौकरी।
फरतां बीड़ा ने लियो हरमल राइके झेल।
झट देतां री छोड़ी पाबू री नौकरी।
मूंडो कमलायो काचा कंवलां फूल ज्यूँ।

वारता— पाबूजी बूजना कराई कुण झेलियो बीड़ो। हरमल राइके झेलियो बीड़ो।

गावणी— *थूं बाजे हरमल बारा बरसां को जोध जुबान।*

---

59 अस्ताचल।
60 उत्तर दिशा।
61 पता लगाने भेजो।
62 सभा मे।
63 देरो।
64 कंपकंपी, ठंड।

हरा ना करान नका भाम म।
हे लका में डाकण्यां भूतां रा राज।
काला मरपां रा बणावै लुगाया नेतरा।
है लंका जादू खोरो ज देस।
लका गियोड़ा नर जीवता पाछा नीं आवै।
हाड़ पांसली लावै, पण वै नर पाछा जीवता नी आवै।

वारता— बोले हरमल राइको- सुणो पाबू वात। कजाणे म्है बीड़ो जांण झेलियो हूँ कांई ठा अजाण झेलिजियो। पेली जाऊँ म्हारी माँ रै दरबार। म्हारी माँ केदेई तो लंका परो जाऊँ। नींतर पाछो आजाऊँ। पाछो लार कागद झेला देऊं। बोले पाबू- सुणो हरमल बात। थांकी माता कद केवेला के थें लंका जाजो।

गावणी— *जावै हरमल बीरो माता रे दरबार।*
जाय जरणी से मुजरो साजियो।
ऊबो हरमल मन में आमण दूमणो।[65]
बूजै हरमल की मांय।
कांई लड़्या ठाकर पाबू का खान परदान।
कांई चौपड़ की बाजी हरियो।
कोनी लड़िया ठाकर पाबू रा खान परदान।
कोनी म्हैं चौपड़ की बाजी हारियो।
एक दोरी नौकरी भलाई लंका परदेस की।

वारता— बोले हरमल की माँ- सुणो हरमल म्हारा। छोड़ दो ठाकर पाबू की नौकरी। सैणां सरदारां की लागो थें नौकरी। सैणां सरदार कस्या माता। सैणां सरदार चौईसां में बड़ा बूड़ाजी। ज्यांकी नौकरी थें लागो।

गावणी— *उठग्यो हरमल वीरो बागो केसरियो झड़काय।*
जावै बूड़ाजी की कोटड़ी।

---

65. उदास, निराश।

जा बूड़ाजी ॐ हरमल मुजरो साजियो।
उठग्यो बूड़ा राजा अंग आलस मरोड।
बैठा बूड़ाजी गोड़ा सूं गोड़ा जोड़।
बूजै हरमल ने बूड़ोजी बात।
कतरो काम आयो म्हारे रावले।
सुणो बूड़ाजी हरमल की बात।
नौकरी लगावो तो नौकरी आपके लागां।

वारता— नौकरी लागो हरमलजी तो आछी बात है। नौकरी आपने जरूर लगावां। सुण हरमल म्हारा नौकरी आपने आई भोलावां के दो घोड़ा है। फूल बछेरा ज्यांकी नौकरी करो। बारा बरस तांई नौकरी बजायां जाजो। घोड़ा ने चराबा जाओ जणे घास की पोट बाँध आप बैठ जाजो घोड़ा पै। आपका माथा पै मेल दीजो घास की गाँठ। जे घोड़ा पे गाँठ मेल दी घास की घोड़ा, की कमर तोड़ न्हाकोळा। ला घोड़ां ने बाँध जो पायगां में। सेर दोयेक मरचां वाँटने घोड़ां के नाकां में घाल दीजो। ऊबा घोड़ा पड्डाट करै। आड़ोसी-पाड़ोसी जाणै के बूड़ा राजा का घोड़ा ऊबा फडहाट करै। सेर दोयेक मुईरा[66] कांकरा घोड़ां के तोबड़ै चढ़ा दीजो। ऊबा घोड़ा चाबता रेवेला तो आडोसी-पाड़ोसी जाणे के हेंगदन[67] घोड़ा दाणा पेई ऊबा रैवे। बारा बरस तांई नौकरी बजायां जाजो। लारे जाता थांकी रेबारण नेई लौ आज्यो। चौका देख म्हेल थें रीजो। एक फूटो टूटो म्हेल म्हाने ई सूंप दीजो। आ के दीजो थांकी रेबारण नै के दन ऊगे नी जी पेली पाँच-सात फलका पोय बूड़ाजीरी कोटड़ी पुगा दे। आ नौकरी बूड़ाजी की कर्यां जाओ। बारा बरस पूरा व्हेचूकताई तांबा को टक्को आपने दे देवां। तो एक पईसा की लीआज्यो तमाखू। घाल कोथली में धूणी पे मेल दीज्यो। आयो गियो[68] तमाखू पीवो करी। नाम बूड़ाजी को व्हेबो करी। पईसा आपका ऊठबो करी।

गावणी— *बोले हरमल सुणो बूड़ोजी हरमल की बात।*

---

66 पीली मिट्टी के छोटे-छोटे कंकड़।
67 सारे दिन।
68 आने जाने वाले।

बूड़ा खूड़ा दीखै थूं छप्पन कोड़ी को दातार।
भूखां को धणी लछमण म्होटा देव।
नी छोड़ूं ठाकर पाबू को वास।
नी छोड़ूं ठाकर पाबू की नौकरी।

वारता— लंका छोड़ परलका रो हेरोव्हे तो पाबू रो करूँ पण ठाकर पाबू की नौकरी कदी नी छोड़ूं। तैतीसा बैतीसा पड़िया काल। मनख ने देवता अन के भरोसे चाबता हाथां की आंगल्या। गायां छोड्या नैनां बाछरू। केसर के पावरे खानता चकतो चूरमो अर म्हां मरदां ने म्होटा कर्‌या। वा नरा की नौकरी आज छोड़ां न काल। वा नरा का लूंण पाणी खायोड़ां हराम बाजां। लंका छोड परलंका रो हेरो ठाकर पाबू रो करां।

गावणी— *उठग्यो हरमल वीरो हाक भड़ाक।*
जावै ठाकर पाबू रे बजार।
जावै खात्यां री खतोड।
घोटा घड़ावै मायर चनण रूंख रा।
जावै हरमलजी दरज्यां की दुकान।
अंचला सिलावै गला में राखै मेखली।
जा बैठ्यो हरमल लवारां की दुकान।
चीप्या घड़ावै बीजलसार का।
जा बैठ्यो हरमल गेरूघर की दुकान।
गेरू मोलावे मूँगा मोलका।
जो बैठ्यो हरमल बूड़ा सरवर की पाल।
गेरू गलावै भगवां करै कापड़ा।
आगी अगूणी दसूं जोग्यां की जमात।
आधा जोगी उतर्‌या पारस पीपली।
आधा जोगी उतर्‌या पाबू रे भूरा गड़दीकोट में।
तोड़े हरमल वीरो लीलरिया नारेळ।[69]

---

69. कच्चे हरे नारियल।

पावा जा लागा गुरू गोरखनाथ का।

गरूजी थारो छप्पन कटारो हाथां झेल। चेलो मूडो गरू गोरखनाथ का।

वारता— बोले गरू जी सुणो हरमल जी वात-थने चेलो मूडवा की म्हारी छाती नी चालै। थने जे चेलो मूंडा ठाकर पावू देवे ओळमो। बोले हरमल जी- सुणो गरूजी बात। एक हुकम ले आया धणी लछमण म्होटा देव का।

गावणी— *बाबो बोले सुणो हरमलजी बात।*
दोरा लागेला छुरियाँ रा घाव।
दोरो लागेला धूणी रो तापणो।
दोरी लागेला घरघर री माँगणी भीख।
सुणो गुरू जी सोरा लागै छुरियाँ रा घाव।
सोरो दीखै धूणी को तापणो।
सोरी दीखै घर-घर री माँगणी भीख।
बोले गरूजी सुणो हरमल चेला को पर चेलो मूंडूं।
चेलां को पर चेलो मूंडीजै म्हारी बलाय।
चेलो कर मूंडो गरू गोरखनाथ को।

वारता— तोय तो चेला मूंडीजां। सुणो गरूजी चेला मूंड्या थां धरती में छप्पन करोड। म्हारे जोड़ावे चेलो एकी नीं मूंड्यौ। बोले गरू जी- थारे मे हरमलजी कांई गुण है? म्हारे मे येई गुण है के डावा कान मेंऊ उनेग्ली लोयां हंदी धार। जीमणा कान मेंऊ दूध नीं रेला। तोई तो चेला मूंडजो। जो दूध नीं नीरै तो चेला मती मूंडजो। बोले गरूजी— सुण जो हरमल चेला मूंड्या छप्पन करोड़। पण दूध कोई चेला के नीं नीरयौ। आप केवो अतरो झूठ मत बोलो। बोले गरूजी- जदी आपने चेला मूँडां। पण चेला मूंडा थें जावो लका में साँड्याँ के हेरे। आगे है थांकी जात का रेबारी। तो आपने जाताई ओलख लेई। म्हैं आपने जोगी बणार मेलां जद आगे रेबारी नीं पछाणेला। तो साँड्याँ को हेरो करन जरूर आजावो। साँड्याँ लावों जीं टेम में एक साँड बाबा बालीनाथ की नांव री कर र छोड़ दीजो। चेला जरूर मूंडां। दूध के जांवण नीं लागेना साँड के कदेई तो ना गरू री फटकार है।

गावणी— *लियो गरूजी छप्पन कटारो हाथां झेल।*
डावा कानां मेऊॅं उतरे लोयां हंदी धार।
जीमणा कानां मेऊॅं दूधां का धारा निकल्या।
रंग रे हरमल थारी माता जायां परवाण।
आछी बजाई पाबू री नौकरी।
बोले हरमलजी सुणो गरूजी बात।
म्हैं जाऊँ लंका में ऐसी मने अनकी औखद[70] बताय।

वारता— अनरोक नाम लेतां गरूजी को खप्पर हरमल ने दे दियो। पाछो बूजे हरमल गरूजी ने। सुणो गरूजी ई खप्पर में कांई गुण हैं? ई खप्पर मे एई गुण है के लै पाबू को नाम, लै गरूजी को नाम। ऊंधो कर सीधो कर लीजे। पाँच आदम्या ने खुवादीजै खाणो। एख लेजा पगां की पावड़ी। बीस कोस चालतो वेई तो पचास कोस जाई। थकेलो[71] रत्तीभर नीं आवेला।

गावणी— *आडो आवेला आगे दरियाव।*
लीजै ठाकर पाबू को नाम।
लीजै गरू गोरख को नाम।
खड़ग्यो हरमल तारां गलतोड़ी मांझल रात।
कर्‌या जोगी साम्यां का डगंमर भेख।
खड़ियो हरमल तारां नखतरिये मांझल रात।
एक तो बासो बसियो मारग रे मांय।
दूजा बासा में आयो जरणी रे रावले।
एक अलख जगायो माता रे भीतर रावले।
दीजे जलम की जामण चलता जोग्यां ने फेरी घाल।
संगड़ी सदावे गरूजी देवे ओलमो।
बोले हरमल की माँ, सातूं डोड्यां के बारे जोगी थूं जाय।

---

70. अनोखा उपाय।
71. थकान।

एक भेंस्या भड़कावे हरमल का बाकड़ टूजना।
भरिया है रेबारण गजमोत्यां रा थाल।
मोती घालण ने बारे निकली।
माडले जोगी थारो पतर[72] प्यालो मांड।
मोती घालूं संमदा की पेली पार का।
आगी व्है रेबारण फेरी घालती।
जीं टेम दांतां की बत्तीसी देख अणियारो।
पीड़ी को भलाको आवै परण्या शाम को।
काढ़ती हाथे को घूंघरो अर अपूटी फरी।
बोले सासूजी कांई आगे हरमल की बऊ।
ओ जोगी थारे देवर जेठ।
कांई मन रलियो थारो भगवां भेख में।
बोले बऊ सुण म्हारी सासू।
नीं लागे जोगी म्हारे देवर जेठ।
कोनी मन रलियो भगवां भेख सूं।
दांता री बत्तीसी सासू मूंडारो अणियारो।
पीडी रो भलाको आवै थारा मोबी पूतरो।
करता सासूजी हीरा मोत्यां का दान।

वारता— आज थें पेट का फरजनां[73] नेंई भूलग्या। पेट का फरजन को नाम लियो। आ माता झट हरमल सूं मलवा लागगी।

गावणी— *बूजे हरमल ऊँ हरमल की मां।*
गजब कर्‌या रे हरमल म्हारा।
थूं जोगी कुण मांते व्है निकल्यो।
कैदे रे हरमल म्हारा थारा मन की बात।

---

72. खप्पर।
73 परिजन।

कांय म्हीनें जोऊं थनै घरा न आवतो।

सुण जामण म्हारी भरियै भादूड़े जोवजे हरमल की बाट।

आवै घरांने हरमल पाधरो।

सुणो हरमलजी मंडग्यो थांरी बेनां को ब्याव।

कुण परणावेला कुण देला डायचो।

सुण म्हारी माता चाँदो डेमो देला परणाय।

ठाकर पाबू देवै बायां ने डायचो।

रीजै माता थूं मन में हुंसियार।

भरियै भादूड़े आवूं थारेई बारणै।

डावे गेलो जावै जायल कठोती मांय।

जीमणो गेलो जावै लंकाने पादरो॥

खड़ग्यो हरमल तारां नगतरियै मांझल रात।

पंतमें झले गलती रात रो।

एक तो बासो लियो मारग के मांय।

दूजा बासा में डाकणियाँ गेलो रोकियो।

आवै डाकणियाँ हरमल परे पादरी।

कड़कड़ियै बड़बड़ियै चाबै मुखड़ा में दाँत।

आवै लटियालियाँ हरमल पे लटियाँ तोड़ती।

सुणो गरूजी घणा दन जोवतां व्हेईग्या थांरी वाट।

आजी जाणे मोतीचूर रो म्हानै लाडू लादौ।

वारता— अतरो नाम लेनां हरमलजी ने चढ़ियो ताव। हरमल मन में वच्यार कर्‌यो, लंका कठै रैगी अर वच में ई लंका पूरी करदीधी। ठाकर पाबू बात केता जो खरी है। बोले हरमलजी— सुणो डाकणियाँ बाबाजी री बात। कांई कीधा छोड़ो। यै तो धूणी रा तप्यौड़ा हाड़का हूका पड़ग्या बळबळ। म्हानै कांई खावो। जो म्हानैं खावो तो थांका दाँत टूट जाई। कोई सेर ने जा परा कोई जाडी दूंद रो वाणियो हीरो खाटोड़ो, लाडू खादोडो एड़ाने खावो जो थांनै खाबा में मजो आवै। बोले डाकणियाँ—

सुण बाबाजी माना-माता[74] खावतां म्हारी दाँता री जड़ां खोली पड़गी। थारा हूकडा हाडका बड़ड़ बड़ड़ खावां जदी म्हांकि दाँतां की जड़ा करड़ी पड़जाई। बाबाजी जाण्यौ भागर जाऊँ तोई लागे नीं छोड़ै है। जतरे डाकणियाँ ज्यूँ नैड़ी-नैड़ी बाबारे हरके ज्यूँ काळो पीळो बाबा ने ताव चढ़ै है। जतरे तो गरूजी बोल्या- सुणो ए डाकण्याँ। लागो म्हारे धरम की बैन। म्हाने छोड़दो। जतरे अजबू बोली है— के हुणो बाबाजी नींठा[75] म्हाने लाधा हो जाणे मोर्तीचूर रो लाडू। अतरोक केतां बाबाजी ने चढ़गी रीस। के हुणो ए डाकण्याँ- थोड़ीक ढबजावो तो म्हारै एक जणो और आवै है। तो दोया री पांती मे एक एक आई जावां। बोले डाकण्याँ— के बीराजी कठैक आवै लारै। देखो एक डाकण्याँ रातड्या रणजोड़ में है। थां रै जेड़ी री जेड़ी दो जण्यां लाधी ज्यांनै एक नै तो गटकग्यो हांपती अमल रे मांयनै। एक जणी ने नचावतो हो। अतरोक नाम लेता डाकण्याँ बोले- कैडोक है वो मनख? हाथ में तो राखै होटो। अमल रो राखै गोलो ने कड़ा। हैंग दन नसा रे मांईज रेवै है। लीली है आंगी अर नाम है डेमोजी। डेमोजी को नाम लेतां चढ़ग्यो डाकण्याँ नै ताव। दस्तां लागगी। ऊबी फीचा भर दीनी। डाकण्याँ बोली सुणो गरूजी चेल्यां बणालियो गुरू गोरखनाथ की। डेमाजी ने म्हानै मती बताओ। डेमाजी को नाम लेतां बुरे खाके व्हैगी। माथा का केस टूट-टूट र धरती पे आपड़िया। डेमाजी को नाम लेतां हरमलजी का रास्ता छूटता व्या।

गावणी— *जावै हरमल एक तो बासो बसियो मारग के मांय।*
दूजा बासा में समदां पै छोड़ै पागड़ा।
अठीनूँ बाबोग्यौ र समंद दूणी चढ़ाव करी।
जग जगना के समदरियो आजूणा झाग।
व्हैता छेड़ा का पाणी लागे डरावणा।
आगे जावां मरां समंद मे डूब।
पाछा घरां तो केलम नै बोलै बोलणा।

वारता— ठाकर पाबू देवै ओलवो वीं टेम एक मोरां खलावै घोड़ी केसर कालमी। खेवै हरमलजी दीनो चनण को धूप। धूंपा के घमरोळे हरमल ने समदर बारो[76] दीनो।

74 मोटा ताजा।
75 नीठनीठ।
76 राह।

गावणी— *डाक समदर गियो परली तार।*
करला करूके[77] ने मईड़ा घुरै।[78]
गिया हरमल सॉड्याँ की झोक में।
दीनी हरमल धूणी घाल।
धूणी धुकाई सॉड्याँ की झुकती झोंक मे।

वारता— चनण की माला ही। तोड़ धूणी मे न्हाक दीनी। सॉड्यॉ का मींगणां की माला बणा नै गला में घाल लीनी। हरमलजी वठै माला फेरै। ऊँट को मींगणो, भैंस को सींगड़ो। राम गटागट। एकेक बजन अस्यो करै जो भाखर रा भाखर[79] उड़ता ही जावै। दन आंथिये सॉड्यॉ ने घेर-घेर ओठी ले आया जोंका रे मांय। आगे बाबा ने धूणी तपता देखर ओठी राजी व्हैग्या। धन घड़ियो धन भाग। आज गरूजी म्हारै पधारिया। चेला जरूरी मूंडीजां।

गावणी— *तोड़ तोड़ लीलरिया नारेळ।*
पावां लागै रेग्यौ हरमलजी म्हीनां पाँच।
छठे मीनै दलसा लगाई म्हारै मुरधर देस में।

वारता— काणो, खोड़ो, गंजो तीनी गुण आगला व्हियां करै। जतरे तो काणे रेबारी बेठेई बात अकल उपाई। हुणो रे रेबारियां ई बाबा रे खांक में छुरी अर आँख देखै बुरी। ओ सॉड्याँ रो कोई भागी है। नी व्हैतो रावण की मॉ सकोतरी कनै हालां। छै म्हींना आगली छै म्हीनां पाछली वनै बात सूजै। जेड़ी वेई जेड़ी आंयांने हुणा देई।

गावणी— *आधा तो केवै के साठी री बुध न्हाटी।*
तौड़े लीलरिया नारेंळ जावै सकोतरी के सकत[80] पामणा।
जा आधी रात के मांई ओठ्याँ।[81]

---

77. बीजली कड़कनी।
78. मेह गरजने।
79. पहाड़ के पहाड़।
80. खास।
81. गोठ्यॉ, गोठी, साथी।

राजा रावण की माँ सकोतरी ने हेलो पाड़ियो।
सूती है के जागे है माँ।

वारता— राजा रावण की माँ सकोतरी बोली- आधी रात के मांई कुण है हाको करवा वालो। काची नींद में म्हनै आय जगाई। एतो माँ म्हें हाँ थारा ई ओठी। ओठी होठी काई नीं जाणूँ घाल कोठी में र अकल धमादूँ। लेती मूसल हाथ में रे आवै ओठ्याँ पर हूदी पाधरी। हाथ जोड़ र ओठी बोलै— सुणो माता जी बात। एक थांनै बात पूछवा के वास्ते आयां हाँ। आज छै म्हींना वेईग्या म्हारी जोक[82] में बाबानै आयां। यो जोगी है के साँड्याँ को भोगी है। बोले राजा रावण की माँ सकोतरी- यो जोगी नीं है। साँड्याँ को भोगी है। अतरोक नाम लेतां आधा ओठ्याँ तो सकोतरी की बात नीं मानी। आधा ओठ्याँ सकोतरी की बात मानग्या।

गावणी— *आधा ओठी तोड़ै लीलरिया नारेळ।*
पांवां लागै गरू गोरख नाथ के।
आधा ओठी लेवै हाथां रे मांई होठ।
आवै बाबारे सीधा पाधरा।

वारता— तो गरूजी मन में विचार कर्‌यो। पाँच म्हीना व्हिया जतरै तो कांई नी कियो। राजा रावण की माँ सकोतरी कने गिया। ही जसी बात बता दीनी। ज्यूँ आपणे ऊपरै कलजल करता आवै तो आज आपणों भूंडो रकोड़ उड़ाई होठाऊँ। अनरा में लेवै ठाकर पाबू को नाम। रेबार्‌याँ का हाथ ऊँचा का ऊँचा रैग्या। रेबारी बोले- बाबो बडो वीरोट्यो।[83] जादू खरो। के म्हारां हाथ ऊँचा रा ऊँचा राखिया। बोले ओठी के बाबाजी म्हारा हाथ सूधा करो। चढ़बा ने ऊँट दां थांनै। ऊँट रो नाम लेतां लियो गरू को नाम। रेबार्‌या का हाथ सूधा कर्‌या। रेग्यो हरमल लंका में म्हीना पाँच। छठे म्हीने दलसा लगाई मारू मुरधर देश में।

गावणी— *खड़ग्यो हरमल वीरो मांझल रात में।*

---

82 कोटड़ी।
83 जादूगर।

चाले हरमलजी गलती रात रो।
डाक[84] समंदर आयौ हरमल ऊली पार।
डाक समंदर हरमल आयो ऊली तीर।
आ रेबार्‌याँ नै पाछो हेलो पाड़ियो।
सुणजो रे लंका का ओठ्‌याँ।
सोरी चराजो रातल भूरी साँड़ियाँ।

वारता— छठै म्हींने दूध दियां का। उदई का खायोड़ा फरफर मींगणा ई देखोला। पर साँड को रातो रूंकचोई[85] नीं छोडूँला लंका में। अतरोक नांम लेतां लंका का ओठी बोल्या— सुणो बाबाजी थांरा तगदीर चोखा। पैली तीर जार कियो। नींतर थने खोद खाड़ो जमीं में गाड़ देता। खड़ग्यो हरमल तारां नगतर माझल रात। एक तो बासो बसग्यो के मांय। एक हेरो कर लायौ लंका री राती भूरी साँडको।

गावणी— *जावै हरमल माता रे दरबार।*
जा जरणी नै आधी रात का हेलो पाड़ियो।
उठजा जामण म्हारी।
लंका गियोड़ा नर पाछा आविया।
दीनां जांमण सातूं दरवाजा खोल।
आयो हरमल घरां ने पावणो।
दीया हरमल आधी रात के मांय।
म्हैलां में दीवा लगाय।
सुख दुख की मां बेटा बातां करै।
ठाकर पाबूजी चाँदोजी चौपड़ खेलता।

वारता— ठाकर पाबू बोलिया— सुणो चाँदाजी। आज आधी रात के मांय हरमल के म्हैलां में दीवो कीकर लागियो। बोले चाँदोजी- कैतो जायो हरमल के मोबी पूत अर कै लंका गियोड़ा हरमल पाछा फरिया।

---

84. पारकर।
85. कुछ भी।

गावणी— *जाजो चाँदाजी हरमल के घरबार।*
खबर्‌याँ मंगावो हरमलजी की कोटड़ी।
उठग्या चाँदोजी केसरिया बागो झड़काय।
जावै हरमलजी की कोटड़ी।

.रता— आगे जान देखै तो बाबोजी बैठो नजरै आवै कै हरमलजी की माँ अर कै हरमल की लुगाई। चारूंमेर बैठी बचमें हरमलजी बैठो सुख-दुख की बातां करै। जीं टेम मे चाँदोजी आने नजर कीधी। हरमलजी बावो बण्योड़ो नजर आयो। चॉदाजी के पछाण में नीं आया। पाछा जा र पाबूजी ने कांई किया कै ये तो आंरा गरू आया है। जको सुख-दुख री बात करै है। लंका गियोड़ा हरमलजी नीं आयाँ है।

गावणी— *दन ऊग्यो कासब[86] करण्या का ऊगता भांण।*
दन री ऊगाली हरमलजी अलख जगायो भूरा गड़ री कोट में।
बोलै ठाकर पाबूजी सुणो चाँदाजी।
ई जोगी रा कठै घरबार।
केड़ी धूणी रो आयो बाबो तापतो।
बोले ठाकर पाबू के बूजो चाँदा सांवत के।
आपके मंडी चुणादां सरबा सोवनी।
एक धूणी घालो पाबू रा गड़दी कोट में।

.रता— बाबो बोले- सुणो पाबूजी जे एकी ठौड़ रेता तो गाँवई भलो छोड़ता। अतरोक नांम लेतां ठाकर पाबू भरी नजर बाबा परे देखिया तो झट हरमल राईका ने ठाकर पाबू पछाणियो। डक डक हंसिया ठाकर पाबू। सुणो चाँदाजी बात। आपतो को चाँदाजी जोगी है। म्हैं कैवां हरमल राइको जी है। सांड्‌याँ के हेरे गियाजी। अतरोक नाम लेतां हरमलजी झट मुजरो साजियो।

गावणी— *रंग रे हरमल थारी मात जायां परवाण।*
आछो हेरो करियो लंकाई परदेस को।

---

[86] सुहावनी।

बूजो चाँदा सांवत हरमल ने बात।
कियां हेरो करियो लंकाई परदेस को।

वारता— सॉड्याँ एक तो लंका में देखनै आया के फरताई फरिया। अतरोक नाम लेतां हरमल ने चढ़गी रीस। हरमल मन मे वचार कांई करियो के दुखरी बूजी नी सुखरी बूजी नी। अरे साँड्याँ ऊँ काम है। साँड्याँ री बूज लीधी जतरे हरमलजी अठै झूठ बोलग्या। सुणो ठाकर पाबू देस फर्या लंका फर्या परलंका फर्या पण साँड को रातो रूंगतो ई नीं देख्यो। अतरोक नांम लेवतां जम डाकी पड्यो थकोई बोलियो। सुणो पाबूजी आज छैः महींना व्हिया म्हारी बाड़ में पड्यां ने ईज हरमल ने पड्याने ओ हरमलजी कोई लंका गियो न कठेई गियो। अठेका अठेई देखूँ। म्हाराली बाड़ी के ठौड़-ठौड़ हेर्याँ करदीधी भाळ भाळ नै। एक दन का सम्याजोग व्हियाँ हरमल की रबारण ले रोटी म्हेल के नीचे व्हैर नीसरी। म्हारी पूंगलगड़ की पदमणी तो दैख परी हरमल की रबारण ने आकाश लै उड़गी तो म्हारी नींद जागी। पकड़ हाथर पाछी पटकी। म्हारी नींद नीं जागती तो जरूर म्हनै रंडवो कर देतो। अतरोक नांम लेता हरमल ने चढ़गी मन में रीस। काडतोई मींगणां की माला झोली मेंऊंर पाबू की जाजम पे मेली। तो देख ठाकर पाबू मींगणा की माला ने राजी व्हिया।

गावणी— *रंग रे हरमल थारी माता जायां थनेई परवाण है।*
आछी बजाई पाबू की नौकरी।
छूटै डेमा अमली थाको मन में रीस।

वारता— दे जम डाकी कै छाती में गोडा पाबू रे कोट रे बाँधियो। छूटी हरमल राइका थारे मन में रीस। चुगलखोर सदाई पिटीजै।

गावणी— *मांडो चाँदा सांवत केसर घोड़ी पर जीण पलांण।*
एक हेरो कर आयो लंका री राती भूरी सांड का।
लटीलट में हीरा पुवाय।
पूठो पुरावो घोड़ी को हीरा मोतियाँ।
करलो पाँच घोड़ां की बागां जेड़।

चालां लंका रे जूना मारगा।
जाजो चाँदा सांवत जोणी सकलीगर री दुकान।
भाला चीरावो असल बीजलसार का।
बाजै नगारा री वमठोर।
पाबूजी की फौज में।
एक ढोलां रे घमोड़ं पाबूजी फौजां निकली।
खड़ग्या राठौड़ी राजा चैग्या घोड़ी पै असवार।
एक चढ़ता बतलावै गादी रा सूरा सामता।
एक भीमा बादल में चमकै वैरण बीजली।
आगे देखै फौजां रा घमसाण।
एक रमनी वैवै घोड़ी केसर कालमी।
एक तो वासो वासिया गेला के मांय।
दूजा वासा में समदां पे छोड़ें पागड़ा।

वारता— ऊठीर ठाकर पाबू गिया समद पैं तो समंद दूणी चढ़ाव करण लागो। लारै डेमाजी हलो पाड़ियो। सुणो पाबूजी डेमाजी ... बात। जे मण टो मण की घूघरी करी हो तो म्हारे वासतै ई राखजो।

गावणी— *अमल लागै डेमाजी के कोरै काळजै।*
बोलै ठाकर पाबू सुणो डेमाजी बात।
व्हियो धरती में गजब अन्याव।
समंदर आडो आइग्यो।
बोले डेमोजी सुणो ठाकर पाबू।
हुकम करो तो भरूँ जल की एक घूँट।
नीतर भरां घोड़ी केसर को बादळो।

वारता— अर नींतर भर चलू आकाश नें उड़ाद्यूँ। थोती थलियाँ में पाणी नीं है तो थला मे जलोकार ई जलोकार[87] करदूं। बोले ठाकर पाबूजी सुण डेमाजी बात।

---

[87] जल ही जल।

गावणी— *ई समंदर को एकी घूँट भर्याँ मर जावै समदा का मगर माछला।*
ओ पाप ठाकर पाबू ने लागै।
पाबू री बणाऊँ जल री आड।
संवता ने बणाऊँ मंगर माछला।
घोड़ी ने बणाऊँ जल री आड।
डाग समंदरियो ग्या पेली तीर।
एक केसर घोड़ी नै न्हाकी साँड्याँ ने झुकती झोक में।
लीधी ठाकर पाबू सॉड्यॉ ने घोड़ी के आगै घेर।
एक टोलो धकायो लंका री राती भूरी सांढ को।
बाँधे धणियाँ फिरतां री पाज।
आधी साँड्याँ रे है नीं गली में घूघरमाल।
एक पांजा उतारैं लंका री राती भूरी साँढ़ियाँ।
आधी साँड्याँ के नी फंदा रेशम पाटका।
बोलै ठाकर पाबूजी सुण चाँदाजी बात।
सुवाड़ी सांढ्यॉ नै पाछी लंका में घेर।
एक झुर झुर मर जावै साँड्यॉ का नैनां तोड़िया।

वारता— बोलै चाँदाजी सुणो ठाकर पाबू बात। करग्या थाका मन में भोली बात। नीं छोड्यौ लंका में साँड्याँ को रातो रूंगच्यो। लारै रेईग्या डेमोजी झोकियॉ मे। अमल तमाखू करबा नैं तो डेमो अमली नजर पचारै झोक मे। थाकी भलकी ए साँड्यॉ लारे रेगी झोका में। बणावै डेमो अमली पछेवड़ा की झोली। झोली के मांइने नैनां मोटा करिया है। जो झोली में बीण-बीण न्हाकै। एक नीं छोड़ां लंका में साँड्यॉ को रातो रूंगच्यो।

गावणी— *घेर लीनी ठाकर पाबू गड़ लंका की राती भूरी साँड।*
एक धाड़ो धकायो लंकारी राती भूरी साँढ रो।
आगै बेवै साँड्याँ का घमसाण।
एक रमती बेवै घोड़ी केसर कालमी।

बोलै ठाकर पाबू सुणो रे ओठ्याँ।
थांरा राजा रावण ने पुकार।
एक धाड़ो कर्यो लंका री रानी भूरी साँढ रो।
थांरा राजा रावण ने पुकार।
एक पुकारो जा रावण की कीजै कोटड़ी।
सूता बेठानै रावण आवै थांनै नीद।
थांरी धरती मे धाड़ेत धाड़ो दौड़ियो।
बोलै राजा रावण कांई खादी आला धोरां की लुगदी भाँग।
कांई बोलै दूध दियां की छाक में।
नीं खादी लंकेपत रावण आला धोरां की म्हांई भाँग।
नीं बोलां दूध दिया की छाक में।

वारता— बोलै राजा रावण सुणो ओठीड़ां बात। एक म्हारी धरती में न्हीं दीखै राणी जायो। रजपूत धाड़ो न्हीं करै।

गावणी— *बोलै ओठीड़ा सुणो लंकापत रावण।*
गरब तोलो तो थांरा म्हैलां मे तोल।
एक साँड्याँ पूगी मारू मुरधर देश में।
बोले लंकापत रावण सुणो ओठीड़ां।
ई धाड़ा रा म्हाणै सैलाण[88] बताय।

वारता— कांई सैलाण देख्याँ ओळखो। काळी घोड़ी रो है हळवळियों असवार। अबवा फैंटा का गादीपत सूरा सामता। बोले लंकापत रावण सुणो रे ओठीडां रावण की बात। आग्या म्हांने धाड़ा का सैलाण। एक पाबू री घेरियोड़ी साँढ्यॉ आपणू पाछी नी फरै। सुणो लंका रा ओठ्याँ ओ जे थोड़ी घणी बार नी करां। आंई साँड्याँ की तो पाबूजी कांई जाणी के रावण डरने बैठग्यो।

गावणी— *अतरी कैतां लागी घणी जैज।*
बाजै लंकापत रावण के जंगीसर[89] ढोल।

---

88 निशान।
89 वृहदाकार।

बाजतां नंगारा रावण की फौजां निकली।
रावण की फौजां केसी गदेड़ मुवां।
छाजल कनां टीडकी पगां।
चड़गी राजा रावण की फौज।
कोईकै हाथां में तरवार कोईकै हाथां में बंदूक।
तीर, ढाल में चढ़गी राजा रावण की फौज।
दै दै नंगारा राजा रावण की फौजां निकली।
बोलै ठाकर पाबू सुण डेमाजी बात।
चढ़गी राजा रावण की फौज।
एक चौड़ा री लड़ायां रावण से झगड़ो नीं करां।
बोले डेमो अमली सुणो ठाकर पाबूजी डेमा री बात।
करो धरती में गजब अन्याव।
एक मरण जीवण ना पाबूजी संको थेई मानिया।
आपा थांरी छाती में गूगळिया बाल।
एक मरणै जीवण ना पाबू संको थां मानियो।
आंठ लिया लाजै ठाकर पाबू रो खान पड़दान।
एक कोठलियाँ लाजै पाबू रो धरमी ढेवड़ो।
उछरती गायां मे ताडूकै सुजी को साँड।
एक पाबू की फौजां मे ताडूकै धरमी ढेवड़ों।
चढ चढ़ फौजां आगी रावण की समदां परली तीर।
आती फौजां ने डेमोजी हाथां झेलली।
छूटै डेमा अमली थारी चमटी का तरगस तीर।
एक पारखिया[90] परखावै[91] पीपल का पतला पान ज्यूँ।
मार हटाई राजा रावण की फौज।
रावण से झगड़ो जीतर्‌यो।

---

90 पारखी।

91. बतलावै।

छूटे डमा अमलां थारी चमटी को तीर।
एक आभौ घरणावै धरती धूज री।
जाणे चमकै बैरण बीजरी।
मारी राजा रावण री फौज।
एकली असवारी छोड़ी रावण की जीवती।

वारता— बोले डोमोजी सुण रावण बात, पाबू कनूं होकम नीं लायो नीतर थारोई माथो उतारतो।

गावणी— *मार हटाई राजा रावण की फौज।*
एकली असवारी छोड़ी रावण की जीवती।
लाग्यो घोड़ी केसर ने झगड़ा को कोड।[92]
आकासां उड़ चाली घोड़ी केसर कालमी।

वारता— घोड़ी ने ऊँची चढ़ा कागरे रावण का म्हैल पे ठाकर पाबू भालो ठोकियो हणुमानजी की जाँघ टालता थकां। रावण की खोपड़ी में दीनों च्यारी चौका कां दाँत पाड्या, चारी दसा ने फैंकिया जो मक्की धान पैदास कर्‌यौ। लोधी ठाकर पाबू सॉड्याँ ने बैर। रावण के दस माथा बीस भुजा।

गावणी— *मारी राजा रावण री फौज।*
एक धाड़ो कर चाल्या लंका री भूरी सांड को।
आगे बैबै सॉड्याँ का घमसांण।
एक ठमकै पग मेलै घोड़ी केसर कालमी।
एक तो बासो लीजै मारग के मांय।
दूजा बासां के आया सोडां की हद के मांई।
बोलै ठाकर पाबूजी सुणो डेमाजी लेरी।
कुण सा राजा री दीखै लाखैणी हदभोम।
किर्य राजा का दीखै गढ़ का कांगरा।
सूरजमल सोडा की दीखै लोखैणी हदभोम।

---

92 चाव।

एक पिरथीमल सोडां का दाखै गढ़ का कांगरा।
हळिया राठौड़ी राजा तारां गलतोड़ी मांझल रात।
एक दन री उगाली आया सोडां री उमरकोट।
बोलै डेमो अमली सुणो ठाकर पाबूजी।
आं बागां मेंकर जो दोई घड़ी जेज।
बोले ठाकर पाबूजी सुण डेमामी।
बारा बरसां का पड़ियाँ सोड़ां का सूखा बाग।
एक सूखा बागां में पाबू डेरा नीं करै।
बोलै डेमोजी सुणो ठाकर पाबूजी।
पाबू री कला से व्है सोडां को हरियो बाग।
चाँदा डेमा की कला से बोलै बागां में दादर पपैया मोर।
एक झीणा सादा[93] की टऊका[94] देइरी है कोइली।
कर्‌यै ठाकर पाबू वेग्यो सोडां को हरियो बाग।
बोले बागां मे दादर पपैया मोर।
ए टऊका देरी है झीणी सादां की कोइली।
मांडले चाँदा सावंत घोड़ी केसर रे जीण।
एक र कर ललकारा बागां में घोड़ा जेलणा।
तो घोड़ां का खड़वां सूं धूजै आभो असमान।
एक घोड़ी केसर का खड़वा स्यूँ।
धूजै सोडां का गढ़ का कांगरा।
पोवै फूलवंती बाई गेंद गला रा नवसर हार।
एक थाली में पड़ियोड़ा सायर मोती धूजिया।
बोले फूलवंती सुणो तीजणियाँ बात।
के पड़जावै धरती मे तणकाल।[95]
के जागै धरती में भोपत भोमिया।

93. शाखा।
94. कुहूक।
95. भयकर अकाल।

बोले तीजांणयाँ मती पड़जो बायाँ धरती में तणकाल।

एक तड़ताड़ये[96] मरजावे गायाँ का नैनां[97] बाछरा।

एक नतराई जागो धरती रा भोपत भोमिया।

चढ़ हीरांगर छोकरी ऊभी जाय।

एक नजर पसारै बागां रे मांय।

कुण सी धरती को आयो राजा आपणा बाग में।

वारता— चढ़ हीरांगर छोकरी चोवरै दीनी नजर तो सॉड्यॉ नजर आई। घोड़ी केसर नजर आई। सांवत आया तो जार फूलवंती ने कैयो के सुणो फूलवंती बाई— आपणा बागा में एक राजा उतर्‌यौ है। वींके साथ में कियां ही देश का जनावर है। सुणो फूलवंती बाई दीखै अण राजा री सूरज सरीखी जोत। एक लारे गादी रै पत सूरा सामता। अतरी केता बोलै फूलवंती—

गावणी— *काढ़लौ तीजणियाँ काजल सुरमा री रेख।*

बंटका लगाओ हरिया जंगाल रा।

खोलदो हीरागर छोकरी झीणा गेणा का मंजूस।[98]

गैणो पैरां सरखो सोरमो बणगी तीजणियाँ।

कर्‌यो तीजणियाँ सोलै बतीसो सणगार।

जावे फूलवंती बागां में हीडा हीडवा।

दीनो फूलवंती रथवानी[99] ने हेलोपाड़।

दीजै सोडां की रथवानी वीरा थारो रथ परो जुताय।

थें केवो बाईजी जुताऊँ गोडां री घुड़बेल।

नींतर जुताऊँ भाबाजी रा जूना बेलिया।[100]

बैठी फूलवंती बाई रथ तांगा के मांय।

---

96 तड़फते हुए।

97 नन्हे।

98 मंजूषा।

99 रथ वाहक।

100 बैल।

जावै बागा म हाडा हीडवा।

गाती बजाती सखियाँ आई बागां के नजीक।[101]

अर फूलवंती माली ने हेलो मारियो।

दीजै सोडां का माली बागां की खड़की परी खोल।

बारै ऊबी सोडां के घर की सातूं तीजण्यॉं।

बोलै माली सुणो फूलवंती बाई।

आं बागा री कोनी खड़की खोलण रो समियो जोग।

मांये डेरा लागा धणी लछमण म्होटा देव रा।

वारता— जनरे फूलवंती बाई बोली है—

गावणी— *सुणो माली बड़ती*[102] *दे जाऊँ गेंद गला रा नौसर हार।*

बावड़ती[103] *दे जाऊँ चटली रो सोवन मूंदड़ो।*

वारता— माली पड़ग्यो माया दमड़ां रे लोभ। झटके खड़की खोलदी। जा फूलवंती बागां में हींडो बॅधायो चंपा री डाल रे।

गावणी— *दूजी तीजणियाँ हींडै बागां में दोएन तीन।*

फूलांदे हींडै बागां में एका एकला।

बोले फूलवंती सुणो ए तीजणियाँ म्हारी बात।

अणा राजा की दीखै सूरज सरीखी जोत।

चंदरमा सरीखा दीखै राजा नरमला।

दूजी तीजणियाँ निरखै आडा उमराव।

फूलवंती निरखै धणी लछमण मोटा देव नै।

और तीजणियाँ गूँथै हाथां रा हथफूल।

फूलवंती गूँथै पाबू रा सिर रा सेवरा।

---

101 निकट।

102. जाते वक्त।

103. आते वक्त।

वारता— अतरी केतां बाई केलम मन में व्ही हूँस्यार। अठे बाई केलम नणदां ने हेलो मारियो। लीओ नणदां थारां चरखा परा उठाय। अठै रमेला सॉड्यॉ का नैना बोथड़ा।[104] लीजे केलम थारूँ साँड्याँ ढबे जतरी ढाब। एक लंकाऊँ लीआया काकोजी राती भूरी सॉडियॉ। एक मेणो मंगाऊँ लका री राती भूरी सॉड रो। बोले बाई केलम- सुणो काका पीवर अमर रीजो। ठाकर पाबू रा परदान[105]। अमर रीजो कोलू री कोटड़ी। एक मेणो मंगायो रातल भूरी साँड रो। एक लीआया कोकोजी गढ़ लंका सूं सॉड। लार बपराई[106] मारू मुरधर देस मं। बाई केलम को मेणों मंगायो राती भूरी सॉड को। अमर रीजो ठाकर पाबू थांरी जोत। अमर रीजो पाबू री कोटड्यॉ।

गावणी— *लीजै केलम थारी साड्याँ ने संभाल।*
ली आया पाबूजी लंका री राती भूरी साँढ़ियाँ।

वारता— सुणो काका अठे सांड्याँ असी छोड़ो। कीड़ां की खायोड़ी, खोड़ी ने पांगली। एक दूजी ले जावो मारू मुरधर देस मे।

गावणी— *खड़िया राठौड़ी राजा तारां गलतोड़ी मांझल रात।*
दूजा वासा में आया कोलू री कोटड़ी।
बैठग्या हिंदूपत राजा घोड़ा से घोड़ो जोड़।
सामी जुड बैठा गादी रा सूरा सांवता।

वारता— बोले ठाकर पाबूजी सुणो रे सरदारा। आपां लायां सॉड्यॉ आंने कुण चरावण जावै। म्हारो कैणों करो दो दन चॉदोजी चरावौ। दो दन हरमलजी चरावौ। बारी आयां सब सरदार चरावौ। बोले डेमोजी सुणो ठाकर पाबूजी म्हारूँ तो ए साँड्याँ आज चरीजै न काल चरीजै। आं साँढ्याँ ने म्हारो केणो करो रऔ कोई ने सूंपदो। म्हैं तो पाबूरीज नौकरी बजावां। ए साँढ्याँ नीं चरीजै। बोले हरमल रेबारी सुणो पाबूजी ए

---

104 बच्चे।
105. प्रधान, मुखिया।
106 काम में ली।

साँट्याँ म्हानें सूंपद्रो। सोरी चरावां सोरी पावां घणी ऊमोरां न म्हारे घरेई राखां। साँड्याँ री नौकरी करां पाबू जी री भी नौकरी करां। अतरी केता साँड्याँ रबार्‌याँ ने पाबूजी दीधी संभलाय।

गावणी— *बैठा हिन्दूपत राजा सोना रूपा री जाजम राळ।*[107]
सामी जुड़ बैठा गादीपत सूरा सामला।
एक दिन की उगाली आगी सोडां री बरमाळ।
आई पाबू रे कोट, आया धणी लछमण मोटा देव रे।

वारता— एक हाथी टीको आयो ऊमरकोट से पाबूजी रे वास्ते, तो पाबूजी नटग्या। अतरी केतां बोले चाँदोजी- सुणो पाबूजी बात। आपको ब्याव करलो सोडां की ऊमरकोट। बोले ठाकर पाबूजी- सुणो चाँदाजी बात। करै धरती पे गजब अन्याव। ए कलंग[108] लगावे थलियाँ के मोटा देव के।

गावणी— *तो बणगी ठाकर पाबू की जांन।*
जानी जुगबेटा करत्यां को जाजो झूंमको।
गावै सैल्यां धोवल मंगल रा गीत।
बोलै बाधावा ठाकर पाबू धणी लछमण देव रा।
दीजै चाँदाजी सांवत कोरै कूंडे केसर गलाय।
केसरऊँ रंगो पाबूजी रो मोलियो।
नौ मण चांवल दीजो हळदी में कराय।
नवतो[109] दे दो सारा देवने ए आवै पाबूजी री जान में।
पेली का नवता गजानंद बाबा ने मेल।
दूजा नवता कांनजी महाराज ने मेल।
दूजा नवता रामा पीर ने मेल।
चंदरमा सूरज ने मेल।

---

107. बिछाकर।
108. कलंक।
109 न्योता, निमंत्रण।

मादेव बाबा ने मेल। काला गोरा भैरू ने मेल।

जोगमाया ने मेल। सरवण कावड़िया ने मेल।

आवै ठाकर पाबू री जान में।

आया है धरती रा सारा देई देव।

एक नीं आयो जायल रो खीची जींद रो।

बणगी ठाकर पाबू री जान।

बाजै नंगारां री बमठोर।

अंवळा[110] मूडा का बाजै बरगू बांकिया।

चढ़ती जानां में बोलै काछेला चारण भाट।

एक डोढ्यों में बिड़दावै भवानी देवल चारणी।

चढ़ चढ़ जानां आगी दरवाजा रे बार।

एक आडी फर बोलै भवानी देवल चारणी।

बोलै पाबू सुण देवल बाई बात।

एक सूणा कुसूणा जानां रे आडी क्यूं फरी।

बोलै भवानी चारण सुणो ओ ठाकर पाबू बात।

थें जाओ सोडां री ऊमरकोट।

एक लारै गढ में रूखाळा कुणसा नर छोड़ियाँ।

छोड्या भुवानी चारण खेड़ै खेड़ै रा बावन वीर।

भालां री भूखी छोड़ी चौसठ जोगणी।

कांई करेला भालांरी चौसठ जोगणी।

कांई करेला खेड़े रा बावन वीर।

चक्कर चलावै खेडै रा बावन वीर।

खोपर[111] भरलै चौसठ जोगणियाँ।

छोड़ दिया भुवानी चारण उगती करण्याँ रा सूरज भाण।

एक सारां में बड़ेरा चूड़ाजी ने राखिया।

---

110. उल्टा।

111. खप्पर।

भान भुवान चारण सुणा पचू बात।
ना मानू राजा रा बात।
एक भागा भरासा बूड़ा सरकार का।

वारता— बूड़ाजी कार खींच्यॉं का कोंकण में धन भेला चरै। तो बूड़ा राजाकी बात नीं मानां।

गावणी— *लै चढ़जो बूड़ा राजा ने झीणी जांनां री लार।*
एक चाँदा सांवत ने छोड़ो भूरा गड़दी कोट में।
मतलै भुवानी चारण चाँदा सांवत को नाम।
चाँदो झुकावै सोडां को चारण भाट ने।
लै चढ़ज्यो राठौड़ी राजा झीणा चाँदाजी ने लार।
डेमा अमली ने छोड़ो भूरा गड़दी कोट में।
मतलै भुवानी चारण डेमा अमली को नांव।
डेमो संभालै सोडा का सावण भादवा।
छै मीनां वेगी अमलां की कतार।
अमला से भराया सोडां कुवा बावड़ी।

वारता— डेमा भसुणा सोडां का अमल कुण भरे।

गावणी— *लै चढ़जो राठौड़ी राजा डेमाजी ने लार।*
हरजी होलाऊँ कीने छोड़ो भूरा कोट में।
मतलै भुवानी चारण हरजी होलाऊँ कींका नांव
हरजी बिचारै सुगन पाबूजी री अटकी जान रा।
लै चढ़जो राठौड़ी राजा हरजी होलाऊँ की नैलार।
हरमल रायका ने छोड़ो भूरा गड़ दी कोट में।
मतलै भुवानी चारण झीणो हरमल रो नांव।
हरमल ले जावेला पाबूजी ने देख्यांई मारगां।
अतरा राठौड़ी राजा झीणै मुखड़ा से झूठ मत बोल।

ओ रबारी कटरो है गेला रो भोमियो।
जद घेरी भुवानी चारण गढ लंका री रातल भूरी साँढ।
जदरो है गेला रो भोमियो।

वारता— खड़ग्या राठौड़ी राजा। बोलै भुवानी चारण सुणो पाबू।

गावणी— *लै चढ़ग्यौ सारा सांवतां ने पाबूरी जान।*
एक खांडे परणीजो बालकड़ी सोडी बीदणी।
करगी भुवानी चारण थारा मन में भोली बात।
खांडे परणजी जै काबल [112] रा मुसलमान।
छतरी परणजै चंवर्याँ में हथलेवा जोड़।
दीजो राठौड़ी राजा घोड़ी पाछी बंधाय।
थें खोलो हळदी रा काँकण दोवड़ा।
करगी भुवानी चारण थारा मन में भोली बात।
सुणै भुवानी चारण एक वचना से।
खुलाई घोडी केसर कालमी।
एक सिर हाटे खुलाई घोड़ी केसर कालमी।

वारता— सुणै भुवानी चारण थारी गाया घेरे जी टेम के माइने चील को कर भेग चंवरी में आजा जै। चंवरी में बैठ व्हैवां तो हेलो थारा सुण अर थारी गायां री बार चढांळा।

गावणी— *दैदै भुवानी चारण झीणी पाबू ने सीख।*
थारी आसीस्याँ पाबू परण पधारसी।

वारता— बोलै भुवानी चारण रीजो ठाकर पाबू थेंई वचना रा सूरमा। जद गायां खींची घेरै तो वीं टेम रे मांइने चील को भेग कर आऊँला चवरी के माइने।

गावणी— *रीजै भुवानी चारण थारा मन में हूँस्यार।*
थारा जै वचन चूका तो गळ जावांला सांभर का लूण ज्यूँ।

---

112 काबुल।

दीधा भुवानी चारण गरी पाबू न साख।
एक चारण री आसीसां पाबू परण पधारसी।
आगै वैवै जानां रा वेवै घमसांण।
एक रमती बैवे घोड़ी केसर कालमी।
चढ़ चढ़ जानां आगी कोस पचास।
एक दन की उगाळी जानां का घाटा रोकिया।
डावा बोलै संभु जंगल में सिंहाल।[113]
जीमणियाँ तीतर पाबू ने बोलिया।
वीग्या लगनां का खोटा सूण।
तो दन की उगाळी सिंघ घाटा पाबू को रोकिया।
बोलै ठाकर पाबू सुणजो सालजी सोलंकी।
थारा घोड़ा ने अगावल लहाय।
एक सुगन वचारो पाबू री अटकी जान रा।
देखो हालजी सोलंकी ई पतड़ा रा आंक सरमाता[114] *घूंणिया।*
म्हारा पतड़ा में दीखो पाकर पाबू।

वारता— ई पतड़ा रा आंक मरबो परणबो बे माता भेळा लिख्या।

गावणी— *बोलै ठाकर पाबूजी सुणो डेमाजी।*
थारा घोड़ा ने अगाडू ल्हाय।
थां बेटांई सिंधरूपी जानां रा घाटा रोकिया।
छूटी डेमा अमली थारा मन में रीस।
सूत खांडो वीग्यो नारां की लार
मंगरे चढतां ने नार नै डेमेजी दिया हेलो पाड़।
रेंकारै तूंकारै लागे रजपूतां के।
नहारां के है रेबारां की गाळ।

113. सिंयाल।
114. सिरमाथा।

अतरा केता डमाजा बालया।
छळ छळ मारी चारण री गाय।
खूंट्याँ बंधियोड़ा मार्‍या गायां का नैना वाछड़ा।
एक खबरां पड़जावै डेमाजी को खांडो बाजतां।

वारता— अतरी केतां कर हूँकारो न्हार डेमाजी पे पाछे बावड़्यो। आती हाथळ ने डेमेजी दी ढाला पर पाल। सूंत खांडो ठोकी नाहर के तो सीस अलग करदीनो।

गावणी— *बोले ठाकर पाबू सुणो चाँदाजी।*
डेमाजी ने अन्ने थेंई वसवास।
न्हारां से झगड़ो करियोड़ो।
एक मारेली घर री जान ने।

वारता— अतरोक नांव लेतां गजब कर्‍यो डेमा अमली। झीणा धरती में अनियाव। एक कॅवारी जानां में रगत थेंई वखेरियो। पाबूजी री कला से एक नवा सीस न्हारां ने पाबू देविया।

गावणी— *एक झीलरिये बेवै पाबूजी की जान।*
हाथी हालै हींडतां।
एक दो बासो बसिया मारग के मांई।
एक सौ कोसां रा समेला घाटीला सोडा हाजिया।
बैठा घाटीला सोडा कॉकण सियाड़े जाजम ढाळ।
एकण प्याले घाटीला सोडा मद पीवै।
बूझै ठाकर पाबू अर दूजा साला, मलै बाऊंबां पसार।
एक अणदूजी साला ऊबा आमण दूमणा।[115]
बूझै ठाकर पाबू अणदू साला ने बात
कैदो सालाजी थांरा मन की बात।
क्यूँ ऊभा मन में आमण दूमणा।

115. अनमना, उदास।

बोले अणदजी ताना सुणो बनाइजी बात।
थांरी घोड़ी री सुण मेल्यौ मोटो नांव।
कानां सुण मेली नजरां देखली।
तो घोड़ी रे बराबर म्हारा लाखीणा घोड़ा झेलसी।
हेनी मोडां के अधकी रीत।
एक तोरण वंदायो गड़ के तीकै[116] कांगरे।

वारता— बोलै अणदूजां सुणो बेनोईजी। हारण जीतण की बणाला होड़। म्हैं हार्‌यॉ देवा सोढ़ा की थानें उमरकोट। थें हार्‌यॉं उरीलांला[117] घोडी केसर कालमी।

गावणी— *बोले ठाकर पाबूजी सुण साला म्हारी बात।*
थारां घोड़ा खावै रातबियो रण घास।
एक टीबां री खड्‌योड़ी आई म्हारी घोड़ी केसर कालमी।
थारां घोड़ा खावे रातबियो रण घास।
घोड़ी रे पावोरे सड़ै है थली की बोदो बाजरी।
एक घोड़ी रे बराबर घोड़ा मती झेल।
एक अलंगा की खड़ियोड़ी आई घोड़ी केसर कालमी।
लीधी ठाकर पाबू हारण जीतण की होड़।
लिया कागदिये अगसर मांड।
एक कर कर ललकारा तोरण परै घोड़ा झेलिया।
बोलै ठाकर पाबू सुणजै घोड़ी बात।
एक होड़ लागा है सोढ उमरकोट का।
एक थारै बराबर घोड़ा झेलसी।
लारै रेगी तो देऊँ सोढ़ां का चारण भाट नै।
थूं जीत्याँ ले जाऊँला म्हारे मुरधर देश में।

---

116. तीखे, नुकीले।
117. पुन: ले लेंगे।

वारता— अतरी केनां लागी घणी जेज। सुणो पाबू एक जाती कूंदूला सोडा रा सातू म्हैल। एक गिरती ला दूंला तोरण के सातूं चड़कल्यॉ। लाऊँ अभर परूँ तारा तोड़ नो घाटीला सोडां घोड़ी की बराबर घोड़ा ने झेलिया।

गावणी— *सोडां का घोड़ा दोड़ै जमीं की दौड़।*
एक आकासां उड़चली घोड़ी केसर कालमी।
जाती घोड़ी लाई तोरण की सातूं च्रड़कली।
कीनी राठौड़ी राजा हारग्या सोढां का घोड़ा।
घोड़ी दीनी सगती के अवतार।

वारता— तो दानी अन्दाता ठाकर पाबू बोलिया— सुणो डेमाजी आगे कोई सोढा के बड़बदाऊ जावो। एक हरी डाली लेता जावो। बेतो डेमोजी अमल का नसा माहे हरी डाली भूलग्यो। आगे जातां याद आई। वन में ऊबो खेजड़ो। तो चड़ीये घोडा ने डाली हाथ घाल्यो। तो डेमाजी की आँगली के कांटो लागग्यो। उतर घोड़ाऊँ नीचो नारे। डेमोजी डाकी हाक। खेजड़ा ने उपाड़ सोढां के दरवाजा मे आखो खेजडो न्हाकियो। आधा सोढ़ां मांहै अर आधा बारै। बारला सोडा बारै माइला मांए। हेटो जातो डेमोजी जूड़ियो। तो बोले डेमोजी सुणरे सोढां— एक अमल लागर्‌यो डेमा रे कोरे कालजे। बोलै सूरजमल जी सोढो के डेमाजी। कोई अमल तजारा पीवो के नी पीवो। डेमोजी बोलिया के अमल तो बनावो। जत्तै सूरजमल सोढोजी बोलिया— ले जावौ डेमोजी ने अठोत्तर कुवा बावड़ी भर्‌या जां परै। ले जाने धक्को दे दीजौ। अमलां मेज डेमोजी गळजाई। लेजा डेमाजी ने बावड़ी परै छोड़ दिया अमलां की। घालै डेमाजी अमलां परे हाथ। एक नवाळा[118] मे दूजा नवाळा के मांई कुवा बावड्यां ने खाली कर दीना तोई डेमोजी मरूँ मरूँ ई करै। जतरे तो पटवारी आया आपरा कोट में। सूरजमल सोढा नै बोलिया के बावड़ी मे तो कोई अमल है न कोई तजारा। भाटा तकातक सूत पेट में न्हाकलिया। बोलै सूरजमल सोढा छै छै म्हीना कतारकी अमलां री। जांको एकी गास कर्‌यौ डेमोजी। डेमाजी सरीखा कतराक आदमी है लारै? बोलै डेमोजी सुणो सूरजमल सोढा घण कमाऊ थोड़ा खाऊँ हो जको तो म्हूंईज हो। के जो हेंगारे आगे हूँ। लारै तो म्हाराऊँ बताबता बैठा है।

---

118 कौर, निवाला।

गावणी— *अतरी केतां लागी घणी जैज।*[119]
जाजै हीरांगर छोरी वैग सताबी जाय।
वैग बुलाला बरामण ने आपणा रावला का।
चंवरी मंडावो मोढां के कोट मे।
दीना भरामण देवता चार दसा ने सोना की खूंटी ठोक।
ऊपरै मेघासर तंबू ताणिया।
फूलवंती का पाबूजी का दिया चंवर्‌या में हथलेवा जोड़।
एक फेरो लीयो चंवरी रे मांय।
दूजा फेरा में करळाटौ[120] *करगी चारणी।*
लारूँ बैरी खींच्यॉ चारण की गाय।
नो करलाटो करगी भुवानी चारणी।
भुवानी चारण थारा मन मेंरी जे हुँसियार।
चंवरी मूं उठतांई चढ़ांला गायां री बार।
सुणो ठाकर पाबू करग्या थांडा मन में कोरी बात।
थें रीज्या गैरा सोढ़ी से हथलेवे जोड़।
खीची रीझ्यो चारण री सुरिया माता गाय ने।

वारता— अतरोक नांव लेतां उठिया ठाकर पाबू गैरा चंवरी मूं। तीजै फेरे दीयो छेड़ा ने काट। पाबू गाया री वार पधारसी।

गावणी— *व्हीया ठाकर पाबू धमघोड़ी असवार।*
सोढी वलूमी पग रे पागड़ै।
सुणो ठाकर पाबू गैरा सोढी रा बोल।
काई गुण ओगुण म्हांनै बताय।

वारता— म्हारै में कांई गुण है कांई औगुण है। चंवरी में फेरा फरिया दोय। तीजा फेरा मे पल्ला थां काटियो। एड़ा म्हारे में कांई औगुण है? वोलै ठाकर पाबू सुण सोढ़ाजी वात-गुण घणा ओगुण थोड़ा। म्है चढ़ां गायां री हाकै। भगवान राखै लाज तो

119. देग।
120 हाको, शोर।

बोलै सूरजमल सोढो सुणो जीजाजी वात। म्हारी बैन रै माइं काइ औगुण है? इ बैन रै मांई औगुण है तो दूजा परणावां। बोलै ठाकर पाबूजी थारी बैन में गुण घणा औगुण थोड़ा। लारूँ घेरी खींची गायां चारण री। म्है जावां गायां री बार। बोलै सूरजमल सोढा- थांरी बदली में मेलूं म्हारा अणदू बीर नै। वो लावै चारण री गायां घेर नै। करगी सोडा थारा मन की भोली बात। थारा वीरा से गायां पाछी नी घिरै। कै पूगै चाँदा डेमा कै ठाकर पाबू तो गायां पाछी वैर सी।

गावणी— *तो खड़ग्यो डेमा पाबू तारांगड़ तोड़ी मांझल रात।*
एक बासो बसग्यो मारग के मांय।
दूजा बासा में गिरवर का घाटा रोकिया।
दूजा बासा मे गायां के आडो जा फर्‌यौ।

वारता— खींच्या केवै डेमाजी के झगड़ो चाल रिगो।

गावणी— *छूटै डेमा अमली थारा चमटी का तीर।*
आभौ घरणावै धरती धूज री।
मारी डेमै अमली गैरी खीच्यां की फौज।
एकली असवारी जींदराव खींची ने छोड्‌यौ जीवतो।

वारता— सुणो जींदराव खींची हुकम लियो तो जींदराव खींची को माथो उतार लूँ। तो पाबू देवै म्हांने ओलमा। पेमा देवै दुराई म्हांनै। बाई पेमा नै अमर देवां म्है काँचली। अतरीक बातां वेता टाकर पाबू आइग्या।

गावणी— *व्हैगी खींच्या के राठौड़ां के बाजै रण में तरवार।*
खारी परै खांडो बाजियो।

वारता— खीच्याँ राठौड़ां के भारत[121] रच्या तो खींच्यॉ कनूं पाछी गायां छुड़ा लीनी। ली आया ठाकर पाबू। लीजै भुवानी चारण थारी गाया ने संभाल। म्हैं जावां म्हारी पालकी आ उतरी भोला भगवान री। पाबू महाराज तो अठूं ई सरगां पधारग्या।

121. झगड़ा, युद्ध।

पाबूजी की पड़ : भावानुवाद

आरती— पालनहार पाबू के जन्म स्थान कोलूमंड में (मगलवेला में) बाजे बजने लगे। कोलू (मंड) के राठौड़ी दरबार जोधपुर की गादी (सिंहासन) बिराजो।

राम ने छोटा तालाब (डाबर) खुदाया। लक्ष्मण ने पाल बाँधी। अभ्रक जैसा चमकीला कलश लिये सीता पनिहारिन। मुर्गी अंडा तथा जलकूकड़ी जल सेती है। चाँदा अमर तारे गिनता है। डेमा बहती नदी का नीर ठहराता है।

लंका को निशान बनाकर पाबू चढ़े तो कालमी (केसर कालमी) घोड़ी उफान भरती हिनहिनाने लगी।

पाल पाबू पाट पदारो। आपकी आरती उतारूँ। आरती में हीरा मोती का दान। प्रथम धाम कोलू मे निसाण घूरे। पाबू आपकी आरती करूँ।

गायकी— राठौड़ो के घर केसर की क्यारी में पाबू ने अवतार लिया। नारी का स्तनपान किया। माता कँवलादे ने गोद में खेलाया। बारह बरस के कोलूमंड के दरबार पाबू युवा योद्धा हुआ। जोधपुर की गद्दी (सिंहासन) बिराजे।

रात्रि को ठाकुर पाबू सोना-चाँदी के महलों मे सोये। स्वप्न में चारणी के घर केसर कालमी घोड़ी खेलाई। चँदा डेमा को बुला पाबू शक्तिवती चारण भवानी के मेहमान होने गोल्या मथाणिया गाँव पहुँचे।

सूर्योदय होते ही पाबू को अपनी कोटड़ी देख चारणी ने आने का कारण पूछा। पाबू ने भवानी चारणी को बताया कि रात्रि में अपने महल में सोते हुए स्वप्न में तुम्हारे आँगन केसर कालमी खेलाई।

वार्ता— पाबू बोले— घोड़ी के लिए आये हैं। चारणी भवानी तू हमें घोड़ी

बता चारणी बाला ठाकर पाबू म सात समुद्र पार गई चार घोड़ लाई लीलागर घोड़ा को दिया सेतला घोड़ा रामदेव को दिया। ढेल घोड़ी बूड़ाजी को दी। एक केसर कालमी पीछे सातवें पाताल में खड़ी है। सात ताले लगा ऊदा पुष्कार की पेडी नहाने गया। उसके आते ही घोड़ी दिखा देंगे।

अमल के नशे में धुत्त डेमा हुँकार मारता उठा। अपनी कनिष्ठिका अँगुली की चाबियों से सातों ही ताले खोल घोड़ी को माणक चौक में लाया। घोड़ी को देख प्रसन्न पाबू ने घोड़ी का मूल्य पूछा और उसके बराबर सोना-चाँदी तोल देने को कहा।

चारणी बोली— सोने-चाँदी का कोई अकाल नहीं है। इसके तो मेरे महल ही हैं। यह घोड़ी जिनराव खींची को दे रखी है। उसकी जागीर में मेरा गाँव है जिसमें मेरी नौ लाख गायें और दस लाख बैल घास चरते पानी पीते हैं। यह घोड़ी यदि आपको दे दूँ तो वह मेरी गाये घेर लेगा जिससे वे बिना घास-पानी मर जायेंगी। पाबू बोले— तुमने क्या भोली बात कही। मैं तुम्हारी गायों को चरने के लिए रातडिया बीड़ा और पानी पीने को नीमली तलैया दूँ। यदि खीची गायें कैद करलें तो तत्काल मुझे कोटड़ी पुकार कर देना, मै तुम्हारी गाये छुड़ा लाऊँगा। यह सुन चारणी को संतोष मिला। वह सांभर का नमक लाई और पाबू के हाथ में देकर बोली कि यदि अपना कहा यह वचन पूरा नहीं करोगे तो इस नमक की तरह गल जाओगे।

गायकी— तब पाबू त्वरित गति से घोड़ी पर सवार हुए। देखते-देखते घोडी केसर कालमी आकाश उड़ चली।

वार्ता— घड़ी दो घड़ी डेमा ने पाबू की प्रतीक्षा की। उन्हें नहीं आते देख चारणी से कहा कि घोड़ी को दिखा पाबू को खोया। घोड़ी नीचे उतार। यदि बारह दिन में घोड़ी नहीं उतारी तो तुम्हारा गाँव गोल्या मथाणिया लूट लेंगे।

चारणा ने गूगल की धूप दी उसकी सुगंध में घोड़ा नीचे उतरी भवाना ने घोडी का बाया पाव पकड़ा पाबू को नीचे उतारा और भूरागढ़ के परकोटे में लाकर बाधा।

धरती पर अमर नाम किया--- (यश फैलाया)।

पाबू बोले— पहले पुष्कर नहाये। चाँदा सामंत, जीण पलाण मांड घोड़ी तैयार करो। गले में वरमाला और हीरा मोतियों से पीठ सजी घोड़ी पर पाबू सवार हुए। पहला विश्राम मार्ग में और दूसरा विश्राम ठेठ पुष्कर जाकर लिया। सामर से गोगदे चौहान और रूणेजा से रामदेव पधारे।

झील में नहाते हुए फिसले पाबू को गोगदे (वीरवर गोगाजी चौहान) ने हाथों से झेल लिया।

पाबू बोले— धर्मवीर गोगा, अपनी झोली मांडो। (कहो तो) अपने भाई बूड़ा वीर की लड़की से ब्याह रचादूँ। आप कहाँ के रहने वाले हो और किस राजा के प्रिय पुत्र कहाते हो? गोगा ने जवाब दिया— मेरा गाँव सामर- नराणा और मैं पीथलदे (पृथ्वीराज) राजा का पुत्र हूँ।

पाबू ने पुष्कर मे चौहानों से सम्बन्ध स्थापित किया और उन्हे साथ ले कोलू का पुराना मार्ग पकड़ा। हरिया बाग में डेरे लगवाये।

पाबू ने कहा— गोगा धर्मी, असल राठौड़ी पाग बॉधो। पचास कली का झग्गा और मखमल की जूतियाँ पहनो और बूड़ाजी से वार्ता-विमर्श करने उनकी कोटड़ी (प्रसाद) जाओ।

गोगाजी को आता देख महल में सोये बूड़ोजी उठ बैठे और आने का प्रयोजन पूछा। गोगा ने कहा— केलम के साथ सम्बन्ध के लिए आया हूॅ। यह सुनते ही बूड़ोजी बोले— लड़की तो क्या, इस घर की कुल्लड़ भरी खट्टी छाछ का पानी तक तुम्हें नहीं मिल सकता। राठौड़ों के और चौहानों के आपसी रिश्ते नहीं होते हैं।

गायकी— पुत्री (केलम बाई) के माता-पिता ने मना कर दिया। गढ़ गिरनार के मामा-नाना ने भी मना कर दिया। यहाँ से क्षुब्ध मन लिए गोगा चल पड़े। लौटते में उनका मुँह कमल के फूल की तरह कुम्हला गया।

वीर गोगा लक्ष्मण के अवतार पाबू के पास आये और हाथ जोड़ विनयपूर्वक कहने लगे— ठाकर पाबू मुझे यहाँ किस प्रयोजन से लाये? अपने वचनों की फलश्रुति करो।

वार्ता— पाबू ने पूछा— कितनी कला जानते हो? गोगा बोले— कला-वला कुछ नहीं जानते। रोटी खाते और मौज करते हैं।

गायकी— पाबू ने देव— गाय का दूध मगाया और अपनी इन्द्रजाल विद्या से वासुकि नाग बना चंपा के पेड़ पर छोड़ दिया और कहा— जब सुरंगे सावन की पहली तीज आये तब—

वार्ता— झूला झूलने केलम आयेगी। उस समय केलमबाई की अँगुली से चिपक जाना। वहीं दादाजी अपनी भतीजी की शादी करायेंगे।

गायकी— केलम ने तीजणियों (तीज का त्यौहार मनानेवाली सुहागिनों) से कहा— काजल— सूरमा की रेख निकालो। काकाजी के हरिये बाग में झूला झूलने चलें।

तीजणियों ने सातों श्रृंगार किये[1] और राठौड़ों के माली से कहा कि खिड़की खोल, चंपा वृक्ष की पतली डाल पर झूला बाँध दो।

वार्ता— माली ने कहा— बाड़ी खोलने का यह समय ठीक नहीं है। भीतर वासुकि नाग ठहरा हुआ है जो तीजणियों को खा जायेगा। तीजणियाँ बोली— लिखे लेख भला कोई टाल सका है? बाग में प्रवेश के समय तुम्हें गले में पहनने का नौसार हार दे जायेंगी।

---

1. सात श्रृंगार इस प्रकार हैं— स्नान, मुख सौंदर्य, तिलक, अंजन, ओष्ठराग, महावर या आलता तथा इत्र। इन सातों के अतिरिक्त अवलेपन, उबटन, चन्दन, अंगराग, पुष्प, सुगंधित द्रव्य, तेल, सुगंधित चूर्ण, ये नौ मिलकर सोलह श्रृंगार कहलाते है।

यह सुनकर माली प्रलोभन में आ गया। उसने सातों दरवाजे खोल दिये।

गायकी— अन्य तीजणियाँ तो सामूहिक रूप से झूला झूलने लगी। केलम अकेली ही झूल रही। झूले के लिए सभी ने हिलमिल कर रेशम की डोर बंटी थी और झूला डाला था। केलम ने एक ओर गुजरात तो दूसरी ओर राणाजी का नवलख मालवा देखा। तीजणियाँ धरती पर फूल चुनने लगी। केलम ने ऊँचे फूलों में हाथ डाला। डाली से उतरते काले वासुकि नाग ने उसकी कनिष्ठिका को डस लिया। सर्पदंश से कोमलांगी केलम का जी घबराने लगा। जहर अपना असर दिखाने लगा।

यह देख सातों सखी— तीजणियों ने केलम को झोली में डाल बूड़ाजी की कोटड़ी पहुँचाया और सोते से जगे बूड़े राजा से कहा कि इसकी कनिष्ठिका को नाग ने डस लिया है।

वार्ता— केलम बाई के लिए किसी से पूछताछ कराओ। वह घड़ी-पलक की मेहमान है। मरनेवाली है। यदि बाई मर गई तो राठौड़ों का आँगन कुँवारा रह जायेगा।

केलम से बूड़ाजी ने कहा— झाड़ियों में, बिलों में हाथ डालने से तो साँप ही खायेगा। मैं (बूड़ोजी) कैसा जो खीच और कढ़ी खाते हुए महलों में सोया ही रहता हूँ। क्यों तो बाग में जायें और क्यों सर्प— गोह खायें! गेहूँ के दो फुलके और एक कुड़छी (चम्मच) चने की दाल बैठे-बैठे खाते हैं और कौतुकी महल में सोये रहते हैं तो न कोई सर्प खाता है न कोई गोह।

चिंतातुर लेकिन डाँटते हुए बूड़ा राजा ने कहा— हीड़ागर (सेविका) छोकरी ने नाहक मुझे कच्ची नींद से जगाया। केलम मरो या केलम की माँ, मुझे कच्ची नींद से मत जगाओ। मेरी नींद ऐसी जो मूसल से ढोल पीटे तब भी न जाय।

गायकी— जा हीड़ागर छोकरी, झाड़ागर को बुलाला। केलम की चटी अँगुली चढ़ा सर्प उतारे। दो-चार हलकारे बूढ़े झाड़ागर को बुलाने दौड़े।

ब्राह्मण (झाड़ागर) बगल में पोथी पानड़े लिए बूड़ाजी की कोटड़ी आया। मुजरा किया और ऐन सुबह सूर्योदय के वक्त बुलाने का कारण पूछा। बूड़ाजी ने कहा— केलम की चटी अँगुली में नाग ने दॉत गाड़ दिये सो विष निवारण करो।

वार्ता— ब्राह्मण बोला— नौ कुली नाग की धरनी पर यशगान करूँ जो बाई का जीवन बच जाय। ब्राह्मण ने पोथी को अगर चन्दन को धूप दी। अक्षर पढ़ने शुरू किये। ज्यों झाडागर भाड़ा दे, सर्प देव दुगुना असर दे।

नौ कुली (मंत्र) का वाचन कर ब्राह्मण ने विष उतारने का प्रयास किया लेकिन उसे सफलता नहीं मिली तो सोचा, यह कैसे साँप का विष है जिसकी जात पाँत का मेरे पुस्तकीय ज्ञान में अतापता नहीं। सर्प की जाति जाने बिना झाड़ा न आज लग सकता है न कल।

ब्राह्मण ने कहा— ठाकुर आप पाबू के गढ़ जाओ। पाबू राठौड़ सर्प विद्या के विशेषज्ञ हैं। वे बाई केलम के विष निवारण में समर्थ है। वे ही बाई का जीवन बचा सकेंगे। बाई मरणासन्न है।

बड़ी भोजाई ने केलम के चारों ओर परदे तनवा दिये और पाबू को लिवा लाने हेतु प्रस्थान किया। जाकर आवाज लगाई— ठाकुर पाबू, आप तो आराम से नींद ले रहे हो और केलम को सर्प डस गया है।

पूरा वृतान्त सुनकर पाबू बोले- सुनो बड़े भोजाई, मै धाड़ा डाल लंका से ऊँट ले आया। कई दिग्गजो को धराशायी किया लेकिन बिच्छू उतारने का मंत्र तक नहीं सीखा। मेरा कहना मानो, इसे गोगाधर्मी के स्थान पर पहुँचाओ। वहाँ दूध-दही के छींटे दे देना। बाई को गोगाजी के नाम समर्पित कर देना। यह नहीं मरेगी।

गोगाधर्मी के नाम की बेल (तांती, जेवड़ी) बाँध बाई को उनके स्थानक पहुँचाया तांती बाँधने से जो सर्प-विष चढ़ा हुआ था वह उतर गया।

बूड़ाजी बोले— यह कला पाबूजी ने तुरन्त समेट ली। यदि वे यह उपाय नही करते तो चौहानो और राठौड़ों के बीच रिश्ता कायम नही होता। उन्होंने हीड़ागर छोकरी से ब्राह्मण को बुला लग्न निकलवाने को कहा।

हीड़ागर बूड़ाजी की कोटड़ी जाकर ब्राह्मण बुला लाई। ब्राह्मण ने मुजरा किया और पूछा कि किस प्रयोजन से मुझे बुलावा भेजा?

बूड़ोजी ने कहा— बाई नवल बनी के मंगल लग्न निकालो। लग्न का नाम सुनते ही ब्रह्मण ने शीघ्र टीपणा (पंचांग) खोला और कहा- बाई के फेरे तो गोगाधर्मी के साथ लिखे हैं। साम्भर की कोटड़ी लग्न का नारियल, आठ घोड़े, हाथी और टीका ले जाओ।

एक विश्राम मार्ग में लिया और दूसरे में सामर पहुँचे। पहुँचते ही गले मे वरमाला डाली। हल्दी के कॉकण- डोरड़े बाँधे। सहेलियों ने शुभ मगल गीत और मेड़ी (गोगा मेड़ी) के गोगाजी चौहान के बधावे शुरू किये। सभी देवताओं को निमंत्रण देने हेतु हल्दी में नव मन चावल पीले करवाये।

जोगमाया के साथ नौ मन चावल लिये और निमंत्रण देने निकले। प्रथम निमंत्रण गजानंदजी महाराज को दिया जो चौहानों की बारात मे ऋद्धि- सिद्धि लाये। दूसरा निमंत्रण विधाता को। फिर कच्छपावतार, कृष्ण, रामापीर, महादेव, श्रवण, हनुमानजी, भैरूजी, चन्द्रमा, सूर्य, भोमिया और सबको ही चौहानों की बारात में आने का निमंत्रण दिया।

गोगाधर्मी की बरात चढ़ी। चौहानों की बारात में मंगल दुंदुभि बज

उठा। साथ झूल मे झूलते मणिधारा वासुकि नाग की सवारा शाभायमान थी। पहला विश्राम रास्ते में और दूसरा कोलू में लिया।

हीड़ागर छोकरी, ब्राह्मण को जल्दी कोटड़ी बुलाला। बूड़ोजी की कोटड़ी में मंडप सजाओ। गोगाधर्मी की बारात में नगाड़े बज रहे थे। राठौड़ों के द्वार पर वीरवर गोगाजी ने तोरण चटकाया।

सास वर के पास आई और झिलमिलाती आरती उतारी। वर को निर्देश मिला कि आरती के थाल में पचास मोहर न्यौछावर करो। सोने की सुपारी रखो और डेढ़सौ रूपये गिनदो।

उसने (सास ने) उम्रदराज जंवाई को देखा तो शर्म से आँखें नीची कर दीं। आरती पीछे कर ली। सोचा, ठाकुर पाबू ने गजब किया जो चौहानों से सम्बन्ध स्थापित किया। कहाँ तो केलम नन्हीं सी जान और कहाँ गोगाजी जैसा बूढ़ाया वींद (दूल्हा)। इससे तो अच्छा होता कि केलम को जहर का प्याला पिला देते या गहरे कुँए में धकेल देते तो महलों मे बैठे गिरने की आवाज तो सुनाई देती।

ऐसा माहौल देख गोगाजी को क्रोध चढ़ आया। उन्होंने एक शरीर के दो शरीर बनाये। एक को घोडे पर सामर भेजा और दूसरे को ऐसा दरसाया जैसे पूर्णिमा का चाँद हो जो तारों के मध्य अपनी कीर्तिमयी किरणों के साथ शोभायमान है।

— सहेलियाँ आनंद मगल का गीत गा रही हैं। श्री भगवान के बधावे बोल रही है। राठौड़ों के माणक चौक में चंवरी मंडाई। ब्राह्मण चंवरी में बैठ गाय का घी होम रहा है। उसने चारों दिशाओं में सोने की खूंटियाँ ठोक दीं। उन पर रेशम के पीले धागे लपेटे। ऊपर मेघाडम्बर और तम्बू ताने। चंवरी में केलम के साथ गोगाधर्मी का हथलेवा जोड दिया।

एक फेरा लिया। दूसरे फेरे में राठौडों तुम दहेज बोलो। चंवरी चढते

पिता बूड़ोजी ने धवल गाय दी। गहलोत मामा ने झूलते हाथी दिये। गुडमल भीखाणा ने अश्व समूह दिया। हरमल ने सुन्दर सुहावना दखणी चीर ओढ़ाया। माँ भीवणी ने गले का तमण्या तैवटा (तुस्सी) खोला। चाँदा ने सोने का सोवन चूड़ा घड़ाया। अफीमची डेमे ने समुद्र के सवा मन मोती देने का निश्चय किया।

चवरी में अन्य दहेज सामग्री भी आई। डेमाजी के पास यदि सच्चे मोती होते तो अफीम के नशे में उड़ा जाते।

पाबू ने दहेज देखा और सोच में डूब गये। उन्हे याद आया कि क्यों नही लंका के लाल- भूरे ऊँट हथलेवे में लाकर दे।

साँढनियों का नाम लेते पास खडा चौहानों का साथी हँसा। चंवरी में बैठे गोगाजी मुस्कराये। केलम पाबूजी से बोली- काकाजी, ऐसा असम्भव दहेज देने का क्या सोचा। दहेज में चाँदा डेमा जैसे प्रधान देते या फिर चढने को केसर कालमी घोडी देते तो मै अच्छा दहेज मानती।

उसने कहा, काका, मेरे ससुराल मे तो सास और ननद का राज चलता है। ज्यों-ज्यो दिन उदित हो रहा है त्यों-त्यों लंका की लाल-भूरी साँढ़ का शावक बोलता प्रतीत हो रहा है। उसके बोल बाई (केलम) के हृदय में वैरी के भाले की अणि की तरह चुभ रहे है।

पाबू बोले—बाई, विचार मत कर। अपने मन मे होशियार रहना। तीसरे महीने लका की लाल-भूरी ऊँटनियाँ ला दूँगा। केसर घोड़ी का नाम मत ले। चाँदा डेमा तो पाबू का जीव-नींव है। घोडी मेरे कालजे की कौर और मार्ग मगन की सहचरि है। मैं जल्द ही घर-घर में लंका की लाल-भूरी सांढनियाँ दिखा दूँगा।

सामर मेड़ी के गोगदे चौहान फेरे लेकर चंवरी से नीचे उतरे। वगत के साथ ही मणिधारी वासकि नाग की भी विदाई होने लगी। कायर

अगली मोर की तरह आँसू छलकाती हुई केलमबाई रथ-तांगे में सवार हुई।

विदा होती बाई का दिल गले के नौसर हार की तरह टूटने लगा। वह इतनी रोई कि आँसुओं से उसकी रेशमी कंचुकी भीग गई।

जान (बरात) फौज की तरह लौटी। साथ में काले वासुकि नाग की सवारी भई है। पहला विश्राम मार्ग में लिया और दूसरे में सामर पहुँचे। माता ने गज मोतियों का थाल भरा। सामर के देव (गोगाजी) की मोतियों के थाल से अगवानी की। गोगाजी ने मन में विचार किया या तो राठौड़ों के आँगन में ही मेरी अगवानी आरती हुई या फिर यहीं।

गोगाजी की माँ ने बलाइयाँ लेते हुए राठौड़ों के घर की दुलारी, अपनी बहू (केलम) को आशीष दिया और गोगाजी से मुखातिब हुई। पूछा, तुम्हें इस धरती पर ऐसा ससुराल और ऐसे साला-ससुर कैसे मिले? गोगाजी बोले— संयोग से ही मुझे समुद्र जैसा विशाल हृदय ससुराल मिला।

माता ने फिर पूछा— राठौड़ो ने कितना दहेज दिया? चँवरी में कितना दहेज आया? गोगाजी ने कहा— दो दहेज तो अनूठे ही निश्चित हुए। एक तो डेमाजी के सवा मन मोती और दूसरा पाबूजी द्वारा लंका की लाल-भूरी ऊँटनियाँ।

वार्ता— गोगाजी की माता बोली— डेमोजी जैसों के पास यदि मोती होते तो वे अफीम पान में ही खर्च कर देते। लंका की लाल-भूरी साँढ़नियाँ किसने देखी हैं। यह दहेज तो कहने भर का है, आने का नहीं। गोगाजी ने कहा— माना कि यह दहेज अनूठा है लेकिन वहाँ ब्याह रचाया है। दहेज दे देंगे तो ले लेंगे। उसी के लिए तो बैठे नहीं हैं।

गायकी— केलम ने दासी से कहा कि तुम खाती (बढ़ई) के घर जाओ और सायर वृक्ष का चरखा तथा चरखे के लिए लुहार की दुकान से असली बीजलसार (लोहा) का तकला घड़ा लाओ।

केलम ने अपने हाथ में इच्छित चरखा प्राप्त किया। सखियों के साथ केलम ननदों के पास चरखा कातने गई और मुजरा किया। ननदें बोली— भोजाईजी आगे पधारो और जाजम पर बिराजो। भोजाई ने कहा— आपकी गादी पर आप सरीखी ननदें ही बैठती है। मुझे तो मेरे पीहर की छोटी पट्टिका ही दे दो।

केलम बाई के लिए रंगीन बाजोट लाया गया जिस पर वह ननदों के बीच बैठी। बढ़-चढ़ कर कूकड़ी कातने के दौरान ही ननदों के बीच नोंक-झोंक शुरू हुई और नारी सुलभ चेष्टा के अनुसार अपने पीहर का बखान करने लगी।

ननदों ने व्यंग्य में कहा— तुम्हारे भी कैसे माँ-बाप हैं जिन्होंने असंभव डायचा देने की बातें कहीं। हमारी अन्य सखियों को देखो जो कोई तो पीहर से गाय ले आई और कोई भूरी भैंसें। लेकिन तुम क्या पाबू के पास से लंका की राती-भूरी साँढ़नियाँ ले आई? सबमें केलम आप ही सबसे बड़ी हो।

इस पर केलम को गुस्सा चढ़ा। उसने चौहानो के गढ़ की गजभीत (दीवार) पर चरखा दे मारा और कहा— तुम्हारी चौहानों की समूची बिरादरी नष्ट न कर दूँ तो मुझे चरखा काता मत समझना।

वह दासी से बोली कि तुम पटवारी की पोल जाओ और उसे शीघ्र बुलाकर लाओ।

पहलवान की मानिंद सधे पाँव धरती हुई दासी आगे बढ़ी और पटवारी को जा पुकारा। पटवारी की पोल पूर्वाभिमुख थी। उसके आँगन में कदली वृक्ष- समूह खड़ा था। दासी ने कहा— पटवारी जल्दी उठो। तुम्हे रावले केलमबाई बुला रही हैं। यह सुनते ही पटवारी को कँपकपी लगी और बुखार चढ़ आया। यही नहीं, भय के मारे उसे तेजरी ताव (बुखार) चढ़ता नज़र आया। उसने अपनी बगल में पोथीपन्ने लिये। केलम के पास पहुँचा और प्रयोजन पूछा।

कलम वाला— सूर्योदय से पहले-पहल मेरे बाबुल का कागज लिखो। मेरे आँसुओं की पीड़ा लिखो और अवगत कराओ कि साँढ़नियों को डायचे में देने का यदि सच हो तो तत्काल पहुँचाओ नहीं तो मिट्टी को ही पहुँचा दो।

वार्ता— पत्र में यह भी लिखवाया कि विलम्ब न करे। हर दिन भारी पड़ेगा। कहीं यह न हो कि काशी में करवत ले लूँ। चरखे से सिर फोड़कर मर जाऊँ या चौहानों के चौक में आत्मदाह कर लूँ। यह श्राप ठाकुर पाबू को लगेगा, चौहानों को नहीं। यह पत्र लिखकर हरदान भींडा के हाथों दिया जिसे लेकर वह कोलू के पुराने मार्ग पर बढ़ गया।

गायकी— झिलमिलाती तारांछाई रात्रि में एक विश्राम मार्ग में और दूसरे में कोलू पहुँचा। उसकी आँखों ही आँखों में रात गुजर गई इसलिए थोड़ी देर वह पाबू के गढ़ के बाहर ही सुस्ताने लगा। पाबू के गढ़ से आती हुई हीरू भीरू पणिहारियों ने इस अजनबी मानव को देखा तो पूछताछ की।

वार्ता— तुम्हें थोथी थलवट[1] का साँप डस गया है या किसी बहिन के भाई होकर मेहमान जा रहे हो या ननिहाल जा रहे हो अथवा यहीं पाबू की कोटड़ी में आये हो? यह सुनते ही हरदान भींडा अलसाता हुआ उठ बैठा और बोला— देखो ए बहिनों! मैं न तो मेरे ननिहाल जा रहा हूँ, न बहिन के यहाँ और न मुझे सर्प ने खाया है। मैं तो पाबू की कोट आया हूँ। मुझे कोटड़ी बतादो।

हीरू भीरू बोली— भोले पाहुने! भूल से भी यदि बूड़ोजी की कोटड़ी चले गये तो वहाँ खाने को मिलेगा तो ओढ़ने को नहीं। दो में से एक बात रहेगी। यदि ठाकुर पाबू की कोटडी जाना हो तो वहाँ बड़ी सारसम्हाल होगी। ठाकुर पाबू भूखों को भोजन तथा गढ़पतियों

---

1 दृष्टव्य लोकगीत पंक्ति— हेली म्हारी थोथोडी थलवट में हैवर घुड़ला थाक्या।

को गाँव देने वाले हैं। हरदान भींडा पाबू की कोटड़ी चला।

गायकी— कोटड़ी पहुँचकर दरबान को आवाज दी— दरबान, दरवाजा खोल। मुझे पाबू की कोटड़ी जाना है।

अर्ध रात्रि के करीब हरदान ने पाबूजी से मुजरा किया। पाबू के समस्त दरबारी, प्रधान उठ बैठे। झुके और मुजरा किया।

वार्ता— ठाकुर पाबू ने चाँदा से कहा कि यह हलकारा कहाँ से आया है? किसने इसे भेजा है? इससे सारी बात पूछो। हरदान भींडा ने अपना परिचय दिया और कहा कि मेरा गाँव सामर नराणा है और मुझे बाई केलम ने भेजा है।

गायकी— हरदान भींडा ने अपने अंगवस्त्र में हाथ डालकर कागज निकाला और उसे पाबू के सामने जाजम कर रखा। कागज देख पाबू की आँखों से प्रेमाश्रु छलक पड़े। उन्होंने चाँदा सामंत से कहा कि इस पत्र को पढ़कर सुनाओ। यह किसी झगड़े का है या विवाद का।

वार्ता— चाँदा सामंत बोला— पाबूजी सुनो, अभी तो इस पत्र को रहने दो। रात का समय है। कहाँ से तो लालटेन और कहाँ से मशाल लाऊँ। दिन होते ही आपको पत्र पढ़कर सुना दूँगा। पाबू बोले— चाँदा सामंत, पता नहीं दिन कब हो। यह कागज बिना पढ़े नहीं रहना चाहिये। इसे अभी का अभी बाँचकर सुनाओ।

चाँदा, भाले का म्यान खोल दो और गढ़ का दीपक जला दो। इससे बारह कोस तक रोशनी हो जायेगी।

गायकी— उस रोशनी के होते ही मेढ़क, पपीहे और मोर बोलने लगे। इसी रोशनी में सामंत ने कागज पढ़ा और उसका माथा ठनक गया।

चाँदाजी के बाद हलजी होलंकी (सोलंकी) ने पत्र पढ़ा फिर हरमल राईका ने भी पढ़ा। सबका नशा काफूर हो गया और डेमाजी की कोटड़ी पहुँचे।

कागज देख घुटनों के नीचे रख दिया और कोई दो घड़ी तक पाबूजी को जानकारी नहीं दी तब उन्होंने चाँदाजी से पूछा कि पत्र कहाँ है? किसके घर में है?

चाँदाजी बोले— वह पत्र डेमाजी की कोटड़ी में है।

वार्ता— पाबूजी ने डेमाजी से पूछा— आपकी कोटड़ी कागज आया था न। डेमाजी बोले— सुनो पाबूजी, पत्र तब आया जब मैं हुक्का भर रहा था। तेज हवा चल रही थी और मेरे नशे का भी क्या कहना। मेरा नशा ऐसा कि करनी पर ही आ जाये तो पानी प्रगटा दे। डाकिनियो के नाक में दम कर दे। भूतों का खात्मा कर दे। हम बारह मन अफीम खाते हैं। भाँग की गोटी चढ़ाते है। चिलम में छह ताकड़ी तम्बाकू फूँक जायें। हुक्के पर भी चिलम चढ़ाते हैं। इतना नशा मै करता हूँ। उस वक्त कागज पढ़ा।

नशे मे कागज उड़ महल के नीचे जा पड़ा जो सुबह मिला। वही कागज उड़ चिलम पर आ गिरा तो दो फूँक अधिक खींची किन्तु कागज को यूँ ही नही जाने दिया। कागज का क्या पूछो! गया तो गया। क्या जमारा थोड़ा हार गया। नशे में कुछेक अक्षर अवश्य दिखाई दिये जिनका अर्थ था, या तो गोगा की माँ मर गई या उनका बाप। उनके मौसर में पाँचों पकवान कर रहे हैं सो आपको बुलाया है। हिम्मत हो तो जाओ और यदि नहीं जा सको तो यह काम हमें सौंप दो। पाबूजी बोले— डेमोजी, कहो तो सबकी ओर से मै ही चला जाऊँ। लेकिन फिर डेमोजी ने हकीकत बयान की कि सभी सरदारो सुनो—

गायकी— जिस दिन सामर मेड़ी के गोगादे चौहान का विवाह रचाया उस दिन हथलेवे में लंका की लाल-भूरी साँढियाँ देने का निश्चय किया। इसी संदर्भ में उपालम्भ के साथ बाई केलम का भेजा वह पत्र था। दिन-ब-दिन उसे खरेखोटे बोल सुनने को मिल रहे हैं जो बैरियों के भाले की अणि की तरह चुभते है।

वार्ता— यदि असली साँढ़े नहीं दे सको तो मिट्टी की ही देकर वचन निभा लेना। यदि ऐसा नहीं हुआ तो बाई काशी में करवत लेकर मर जायेगी। चौहानों के चौक में आत्मदाह कर लेगी। चरखे से अपना सिर फोड़ प्राण त्याग देगी। यह श्राप राठौड़ों को लगे, चौहानों को नहीं।

गायकी— इतनी बात कहते पाबू को गुस्सा चढ़ आया। बोले— चाँदा सामंत, केसर घोड़ी पर जीण पलाण मांडो। कहीं डाका डालें या झपट्टा मारें। गढ़ लंका की सीमा तोड़ दें। ऊँटनी ले आयें और केलम बाई को थमा दें। लंका की लाल भूरी ऊँटनी तो क्या उनके मेणा (शावक) तक को भगा लायें।

वार्ता— इतनी बात सुन चाँदाजी बोले— इस कार्य को अन्जाम कैसे देंगे? ऐसा न हो कि जल्दबाजी में हमारा किया कराया उल्टा हो जाय। हम पूर्व की ओर चलें और कहीं साँढ़ियाँ पश्चिम में रह जाँय और पश्चिम में चलें तो वे दक्षिण में हों।

कहाँ-कहाँ घोड़े दौड़ायेंगे। पहला काम तो यह करें कि किसी को पता लगाने भेजें ताकि वह अपने को साँढ़नियों का अता-पता लाकर दें। साँढ़नियाँ ले आयेंगे चाहे लंका में ही हों।

पाबूजी बोले— चाँदाजी तुम जाओ और साथ में डेमाजी को ले जाओ। सब तरफ पता लगाकर आना। चाँदा बोला— मेरी युक्ति मेरे ही गले आ पड़ी।

चारणी के हाथ, पाँच पान का बीड़ा भेजो। भरे दरबार में बीड़ा घुमाया जाय। जो नर साहसी होगा वही चुनौती स्वीकार करेगा।

गायकी— भवानी चारणी के हाथों भरे दरबार में बीड़ा घुमाया गया। जिस किसी के सामने बीड़ा पहुँचा उसकी नजरें झुक गई। कोई नर साहस नहीं कर सका

बीड़ा फेरने काफी देर हो गई। बहुत से सरदार काँपने लग गये। तेज ठंड चढ़ गई। बहुत सों को मृत्यु दिखाई देने लगी। कई दरबार से उठ चल दिये।

इसी बीच घूमते बीड़े को हरमल राईका ने झेल लिया। लेकिन वह भी मुँह लटकाये दरबार से बाहर चला गया। उसका मुँह कच्चे कमल के मुरझाये फूल की तरह कुम्हला गया।

वार्ता— पाबूजी ने पूछवाया— 'बीड़ा किसने झेला? ज्ञात हुआ कि हरमल राईका ने झेला।

गायकी— इसके बाद पाबूजी बुदबुदाये कि अरे हरमल राईका ने बीड़ा कैसे झेल लिया। वह कैसे लंका में जाकर टोह लेगा। वहाँ तो डाकिनियों और भूतों का साम्राज्य है। वहाँ की नारियाँ भी कैसी हैं जो बिलौनी पर नेतरों के लिए काले सर्पों का उपयोग करती हैं। लंका तिलस्मी धरती है। वहाँ गया व्यक्ति जीवित नहीं लौटेगा। उसकी हड्डी पसली तो मिल सकती है पर प्राण नहीं।

वार्ता— इसके बाद हरमल राईका ने पाबूजी को प्रत्युत्तर दिया— मुझे पता नहीं कि यह बीड़ा मैंने जानबूझकर झेला है या अनजाने में। मैं पहले अपनी माता के दरबार जाऊँगा। यदि माँ आज्ञा देगी तो लंका चला जाऊँगा अन्यथा लौट आऊँगा और बीडा वापस कर दूँगा।

राईका की बात सुनकर पाबू बोले— सुनो हरमल, तुम्हारी माँ कब कहेंगी कि तुम लंका जाओ।

गायकी— हरमल वीर माता के पास गया और मुजरा किया। अन्यमनस्क खडे हरमल को माता ने पूछा— क्या ठाकुर पाबू के दरबारी, प्रधान लडे हैं या चौपड़ में बाजी हार गये हो। वह बोला— न तो किसी से लड़ाई और न बाजी ही हारा। लंका जैसे परदेश की एक नौकरी बता दी है।

वार्ता— हरमल की माता बोली— पाबू की नौकरी छोड़ दो किसी सयाने

सरदार की नौकरी करो। हरमल ने पूछा— यह सयाना सरदार कौन है? माता बोली— चौईस सयाने सरदारों में बूड़ोजी ज्येष्ठ हैं, उनकी नौकरी करो।

गायकी— हरमल केसरिया वागा झटकाकर उठ बैठा और बूड़ोजी की कोटड़ी पहुँचा। बूड़ोजी से मुजरा किया। अलसाकर उठ बैठे बूड़ोजी ने हरमल से आने का प्रयोजन पूछा। हरमल ने उनके यहाँ नौकरी करने की इच्छा जाहिर की।

वार्ता— बूड़ोजी बोले— नौकरी करो तो अच्छी बात है, आपको जरूर नौकरी मिलेगी। मेरे दो घोड़े हैं जिनके बछेरों की देखभाल करो। बारह बरस तक यह नौकरी बजाते रहना। घोड़ों को चराने जाना, उनके लिए घास अपने सिर पर रखकर ले आना और सवारी मत करना। यदि घास की गाँठ लेकर घोड़े पर बैठ गये तो घोड़े की कमर टूट जायेगी।

घोड़ों को पायगा (अस्तबल) में बाँध देना और सेर-दो-सेर मिर्चें बाँटकर उनकी नाक में ठूँस देना। इस पर घोड़े सिर धुनने लगेंगे। पड़ोसी समझेंगे कि बूड़े राजा के घोड़े खड़े-खड़े हिनहिनाते हैं। इसके अलावा सेर-दो-सेर मुर्दरा कंकड़ घोड़ों के तोबड़े (चमड़े का बना थैला) में रख कर बाँध देना जिससे पड़ोसी समझेंगे कि दिनभर ही घोड़े दाना खा रहे है। इस प्रकार बारह बरस तक अपनी नौकरी बजाया करना। बीच में अपनी पत्नी को भी ले आना।

हँसते हुए बूड़ोजी बोले— अच्छे महल मे आप रहना। कोई टूटा फूटा महल मुझे सौंप देना। अपनी रेवारिन को कह देना कि सूर्योदय पूर्व पाँच-सात फुलके बना बूड़ोजी की कोटड़ी पहुँचा दे। यह नौकरी करते रहना। बारह वर्ष पूरे होने पर तांबे का टक्का (एक सिक्का) दे देंगे। उसमें से एक पैसे की तम्बाकू ले आना। उस तम्बाकू को कोथली में डाल धूणी कर रख देना। कोई आता जाता तम्बाकू फूँकता रहेगा। नाम बूड़ोजी का और पैसा आपका खर्च होता रहेगा

गायकी— हरमल बोला— बूड़ाजी, मैं जिन उम्मीदों के साथ यहाँ आया था वे सब धूमिल हो गई। छप्पन करोड़ की जगह आप तो कौड़ियों के दातार मिले हो। भूखों के तो बड़े देव लक्ष्मण (पाबू) ही हैं। मैं उनको और उनकी नौकरी को नहीं छोडूँगा।

वार्ता— (इसके साथ ही हरमल ने निश्चय किया कि) लंका तो क्या, परलंका (और कोई देश) भी हो तो खोजने जाऊँगा लेकिन ठाकुर पाबू की नौकरी कभी नहीं छोडूँगा।

बत्तीसा— तैंतीसा अकाल पड़ा।[1] इस दुर्भिक्ष में और लोग तो क्या देवता भी अन्न के अभाव में खाली हाथ (जैसी कि कहावत है— खाली हाथ मुँह में नहीं जाता) की अँगुलियाँ चबा गये। चारे के अभाव में ब्यांत गायों ने अपने बछड़े छोड़ दिये। तब भी पाबूजी ने केसर युक्त चकाचक घीदार चूरमा खिलाकर हमारा लालन-पालन किया, हमें बड़ा किया। हम भला उनकी नौकरी कैसे छोड़ें! न आज छोड़ेंगे न कल। यदि नौकरी छोड़ दे तो नमकहराम कहलायें। मै जरूर लंका तो क्या और भी कोई मुश्किल हो तो भी पता लगाकर आऊँगा।

गायकी— हरमल वीर तत्काल उठ खड़ा हुआ जैसे सोते से जगा हो। वह पाबूजी के निवास की ओर रवाना हुआ। रास्ते में सुथार के घर पहुँचा और सुहाने चंदन वृक्ष का गोटा (मुगदर) बनवाया। फिर दर्जी की दुकान पहुँचा जहाँ से अंगवस्त्र सिलवाया जिसके गले में गोटण (मेखली) लगवाई। फिर लोहार की दुकान जाकर असली लोहे का चिमटा घड़ाया।

यहाँ से गेरूघर की दुकान पहुँचा और गेरू खरीदा। यहाँ से वह सरोवर की पाल पहुँचा और गेरू से अपने कपड़े भगवा किये।

---

1. यह अकाल पाबूजी के जीवनकाल मे सवत् 1332-33 मे पड़ा था। इब्नबतूता ने अपनी 'भारतयात्रा' में इस अकाल का जिक्र किया है। इस दुर्भिक्ष में जनजीवन बहुत त्रस्त हुआ। उसकी स्थिति अकथनीय थी।

इसी बीच पूर्व की ओर से जोगियों की जमात आ गई जिनमें से आधी पारस पीपली के नीचे बैठी और शेष जोगी पाबू के पूरे गड़दी कोट में ठहरे। हरमल ने पाणीदार श्रीफल बधारा और गुरू गोरखनाथ को नमन किया। बोले— मुझे अपने हाथों से शिष्य बनालो और आशीर्वाद दो।

वार्ता— गुरूजी बोले— सुनो हरमल, तुम्हे चेला बनाने की मेरी हिम्मत नहीं। तुम्हे यदि शिष्य बनाऊँ तो मुझे पाबू का उपालम्भ लगे। हरमल बोला— लो, यह बड़े देव स्वामी लक्ष्मण के अवतार पाबू का हुक्म ले आया हूँ।

गायकी— गुरू बोले— सुनो हरमल, छुरियों के घाव, धूणी का ताप तथा घर-घर भीख माँगना बड़ा मुश्किल लगेगा। हरमल बोला— मुझे तो छुरियों के घाव, धूणी का ताप और घर-घर की भीख माँगना सहज लगता है। गुरू बोले— सुनो हरमल, शिष्य प्रशिष्य बनाऊँ। हरमल ने कहा— मेरी बला से शिष्य मुंडो या प्रशिष्य, मुझे तो गोरखनाथ का शिष्य बना ही लो।

वार्ता— सुनो गुरूजी, आपके भले ही धरती पर छप्पन करोड़ शिष्य मुंडे हों लेकिन मेरे समकक्ष एक भी नही है। गुरूजी बोले— हरमल, तुम्हारे में क्या गुण हैं? हरमल ने कहा, मेरे में यही गुण है कि यदि मेरे बायें कान से खून की और दायें कान से दूध की धार बहे तभी मुझे शिष्य बनाना।

गुरूजी बोले— सुनो हरमल, मैंने छप्पन करोड़ शिष्य बनाये किन्तु दूध किसी चेले के नहीं निकला। क्यों इतना असत्य संभाषण कर रहे हो। तुम्हें चेला बनायें किन्तु तुम लंका में साँढ़नियाँ खोजने जाओ तो वहाँ तुम्हारी जाति के रेबारी तुम्हे पहचान लेंगे। मैं तुम्हें जोगी बनाकर भेजूँ तो कोई रेबारी नहीं पहचानेगा। तुम साँढ़नियों को ढूँढ़ने जरूर आना। साँढ़नियाँ लाओ उस वक्त एक साँढ़ को बाबा बालिनाथ के

नाम करके छोड़ देना तब मैं चेला अवश्य बना लूँगा। साँढ़नी के दूध की जावण (जामन) नहीं लगती है, यह गुरू- वाक्य है।

गायकी— गुरूजी ने अपने हाथों में छप्पन कटार ली। देखते ही देखते बायें कान से रक्त धारा और दायें कान से दूध की धार बह निकली। एक आवाज सी आई— हरमल, तुम्हारी माता को धन्य है। तुमने भी पाबूजी की अच्छी नौकरी की है। हरमल बोला— सुनो गुरूजी, मैं लंका जाना चाहता हूँ। मुझे कोई ऐसा अनोखा उपाय बताओ।

वार्ता— इसके बाद गुरूजी ने हरमल को अपना चमत्कारिक खप्पर दे दिया। हरमल के प्रश्न पर उन्होंने बताया कि इस खप्पर में यही गुण है कि पाबू का नाम ले इसे औंधा कर देना, पाँच आदमी खायें उतना भोजन इसमें से ले लेना। उन्होंने एक ऐसी पादुका भी दी जिसका गुण यह था कि यदि बीस कोस[1] जाना हो तो पचास कोस जाने की सामर्थ्य पैदा हो जाय और थकान बिलकुल न आये।

12

गायकी— आगे दरिया मिलेगा। पाबू और गुरू गोरखनाथ का नाम स्मरण करना। हरमल तारांछाई मध्य रात्रि में निकल पड़ा। उसने दिगम्बर जोगियों का भेष धारण किया। पहला विश्राम मार्ग में और दूसरे मे जननी के निवास पहुँचा और अलख जगाई कि रमते जोगी को भिक्षा देना।

हरमल की माता बोली— देहरियों के बाहर चला जा। उसने ब्यांत— अनब्यांत भैंसों को भड़काया। रेबारिन गजमोतियों से भरा थाल ले मोती देने बाहर निकली। बोली— जोगी तेरा खप्पर प्याला मांड ताकि समुद्र के पार के मोती तुझे दे सकूँ। रेबारिन पास आई। हँसते हुए हरमल को देख जब उसकी सूरत पर नजर ठहरी तो यकायक उसे अपने पति का चेहरा नजर आया। उसने झट से घूँघट खींच दिया और पीछे फिर गई।

---

1. एक कोस लगभग तीन किलोमीटर के बराबर होता है।

बहू को इस तरह रूदन देख सास ने पूछा कि यह जोगी खड़ा है, वह तुम्हारा देवर है या जेठ, क्या लगता है तुम्हारे? क्या तुम्हारा मन भगवे वेश में रम गया (या यूँ ही मुँह फेर खड़ी हो गई?) बहू बोली— हे सास! न तो जोगी मेरा देवर है न जेठ और न ही मेरा भगवे में मन लगा है। इनकी खिलखिलाती बत्तीसी और शक्ल सूरत देख मुझे आपके प्रेमी- पुत्र (मेरे पति) की याद आ रही है। भला, इनके पास आकर हीरे-मोती का दान करते हाथ क्यों रूक गये।

आज तो आप अपने जाये को ही भूल गये। जब अपने जाये के बारे में सुना तो माँ हरमल से मिलने उतावली हुई।

माँ ने अपने बेटे हरमल से तहकीकात की कि तू जोगी क्यो हुआ? अपने मन की सच्ची बात बता। कई दिनों से तुम्हारे लौटने का इन्तजार कर रही हूँ। हरमल बोला— माता, भाद्र महीने में मेरे आने की प्रतीक्षा करना। मैं आ जाऊँगा। माँ बोली— तुम्हारी बहिन का विवाह होने को है। कौन शादी करायेगा और कौन दहेज भरेगा? हरमल बोला— चाँदा डेमा शादी करा देगा और ठाकुर पाबू बहनों के लिए दहेज भर देंगे। माता तू होशियार रहना। भरे भाद्र माह में तुम्हारे दरवाजे पर आऊँगा। उसने आगे आकर देखा कि बायाँ रास्ता जामल कठोती जाता है और दायाँ सीधा लंका को।

तारों भरी मध्य रात में हरमल चला। एक विश्राम मार्ग में लिया। दूसरे में यक्षिणियों ने रास्ता रोक लिया और उसे डराने धमकाने लगी। दाँत किड़किड़ाती, बड़बड़ाती, केश बिखेरती और नाना प्रहार करती हुई यक्षिणियाँ हरमल पर आ झपटीं। बोली— सुनो गुरूजी, बहुत दिनों से भूखी हम तुम्हारा इन्तजार कर रही थीं। आज जैसे हमें मन के मोतीचूर मिल गये हों।

यह सुनना था कि हरमल को गुस्सा चढ़ आया। मन ही मन विचार करने लगा कि लंका तो पहुँचे ही नहीं और बीच में ही यह कौन सी

लंका आ पडी है। ठाकुर पाबू ने जो बात कही वह सही निकली है।

हरमल बोला— सुनो यक्षिणियों, बाबाजी की बात सुनो। किस उपाय से तुम मेरा पीछा छोड़ोगी। धूणी पर तप-तप कर मेरी हड्डियाँ तक सूख गई हैं। (अर्थात् तन पर माँस नहीं है), मुझे क्या खाओगी! मुझे जो खाना चाहो तो तुम्हारे दाँत टूट जायेंगे। यदि खाना ही हो तो शहर मे जाकर किसी पेटूराम को खाओ। हलुआ खाये, लड्डू खाये या अन्य खाये पीये को खाओगी तो आनन्द आयेगा।

डाकिनियाँ बोली— सुनो बाबाजी, मोटे ताजे को खाने से तो हमारे दाँतों की जड़े हिल गई है। तुम्हारी सूखी हड्डियाँ यदि चबायेंगी तो हमारे दाँतो की जड़ें मजबूत हो जायेंगी।

बाबाजी ने विचार किया कि भागकर जाऊँ तब भी ये मेरा पीछा नही छोड़ेंगी। डाकिनियॉ ज्यों-ज्यों बाबा के नजदीक आती गई त्यों-त्यों बाबा को काला-पीला बुखार चढ़ता नजर आया।

इतने में बाबा बोला— सुनो डाकिनियों, तुम मेरी धर्म की बहन लगती हो, मुझे छोड़ दो। तब उनमे से एक अजबू बोली— सुनो बाबाजी, तुम हमें बड़ी मुश्किल से तो हाथ आये हो जैसे मोतीचूर के लड्डू।

इतना सुनते ही बाबाजी को गुस्सा चढ़ आया। बोले— सुनो डाकिनियों, थोड़ी ठहर जाओ। मेरा एक और साथी आने वाला है। तुम दोनों के हिस्से में एक-एक आ जायेगा। डाकिनियॉ बोली— वह कहाँ आ रहा है? जोगी वेशधारी हरमल बोला— वह रातड्या रणजोड़ (मैदान) में है। उसे तुम्हारे जैसी ही दो मिलीं। उनमें से एक को तो वह अमल के नशे में पूरी की पूरी निगल गया और दूसरी को नचाता रहा।

यह सुनना था कि डाकिनियों ने पूछा— वह कैसा मनुष्य है? हरमल बोला— उसके हाथ में लट्ठ, अफीम का गोला और कड़ा है। वह दिन रात नशे में रहता है। उस शख्स का नाम डेमाजी है।

डेमाजी का नाम सुनते ही डाकिनियों को बुखार चढ़ आया और दस्तें लगने लग गई। वे बेहद भयभीत नजर आने लगीं। उन्होंने कहा— हमें गुरू गोरखनाथ की शिष्याएँ बनालो और डेमाजी से कभी हमारा परिचय मत कराना।

डाकिनियाँ मारे भय के रूप-बेरूप हो गई। उनके सिर के बाल टूट-टूट कर जमीं पर आ गिरे। हरमल का रास्ता साफ हो गया। वह आगे बढ़ा।

गायकी— हरमल समुद्र तक जा पहुँचा। समुद्र में तेज फेनिल ज्वार आया। लहरें इतनी डरावनी लगने लगीं कि आगे जायें तो डूब मरे और पीछे आये तो बाई केलम के कष्ट याद आयें।

वार्ता— हरमल को ठाकुर पाबू के वचन भी याद आये। उसने चंदन की धूप दी जिसकी गंध से समुद्र मे रास्ता हो गया। वह समुद्र लाँघ कर पार पहुँचा।

गायकी— मोरों के बोलते, गर्जते मेह में हरमल साँढ़ियों के बीच जा पहुँचा। वहीं उसने धूणी रमाई।

वार्ता— (जोगी बने हरमल ने यहाँ कुछ अनोखा ही रहस्य उद्‌घाटित किया) उसने चंदन की माला को तोड़कर धूणी में डाल दी और साँढ़ियों के मेंगनियों की माला कर पहनली। वह ऊँट के मेंगनियों और भैंस की सींगों की बनी माला फेरता और राम को याद करता। एक-एक भजन ऐसा बोलता कि पहाड़ के पहाड़ उड़ते नजर आते।

दिन अस्त होते चरवाहा आया और साँढ़ियों को घेर-घेर कर ले जाने लगा। जब वह बीच में बैठी साँढ़ियों के पास पहुँचा तो सोचने लगा,

यह घड़ा धन्य हे और धन्य मेरे भाग्य कि गुरूजी आज मेरे यहा पधारे हैं जो अवश्य ही मुझे अपना शिष्य बनायेंगे।

गायकी— वह पानीदार नारियल तोड़कर रखता रहा और हरमल के पाँव पकड़ पड़ा रहा। इस तरह उसके पाँच माह व्यतीत हो गये। छठे माह उसे अपना मरूधर देश याद आया।

वार्ता— एकाक्षी (काने), लंगड़े और गंजे, ये तीनो ही कब्दी (उत्पाती) होते हैं और सदैव आगे रहते है। इतने में काने रेबारी ने अक्ल की बात सुझाई और बोला— इस बाबा की काँख में छुरी है और इसे बुराई देखना प्रिय है। यह साँढ़ियों का भक्षक है। यदि ऐसा नही हो तो रावण की माता सिकोतरी के पास चले और पूछताछ करें। वह छह महीने आगे और छह महीने पीछे की बात बता देनी है। जैसा होगा वैसा प्रकट कर देगी।

गायकी— कोई आधे चरवाहों ने कहा कि साठ की वय में बुद्धि का क्षरण हो जाता है। सिकोतरी के पास जाने वालों ने श्रीफल तोड़े और अर्धरात्रि को उसे जा पुकारा कि तुम सोई हो या जाग रही हो?

वार्ता— राजा रावण की माँ सिकोतरी— आधी रात में हल्ला करने वाला कौन है? मुझे कच्ची नींद में किसने जगाया? वे बोले— ये तो हम तेरे ही चरवाहे गोठी है। सिकोतरी ने कहा— गोठी होठी कुछ नही जानती, कोठी में बंदकर अक्ल दुरस्त कर दूँगी।

इतना कहते ही वह हाथ में मूसल लिये ओठियों पर टूट पड़ी। हाथ जोड़ ओठी बोले— माताजी, हम तो आपसे एक बात पूछने आये हैं। छह महीने से हमारी साँढ़नियों के जोक (समूह बद्ध चराई) में एक जोगी आ धमका है। वह जोगी नहीं, सांढ़ियों का भोगी है। इतना सुनते ही आधे चरवाहों ने सिकोतरी की बात मान ली जबकि आधे ने उसकी बात मानने से इन्कार कर दिया।

ाथ चरवाहों ने पानागार नारियल तोड़े और गुरु गोरखनाथ का मन किया। आधे अपने-अपने हाथों में लट्ठ ले बावे पर पिल पड़े।

ुरु ने मन में सोचा, पाँच माह हुए जब तक तो कुछ नहीं हुआ। ाजा रावण की माँ सिकोतरी के पास गये। उसी के बताये भेद पर ये पिल पड़े हैं। उसने बुदबुदाते हुए धूणी की राख उड़ाई और पाबू को पुकारने लगा। आश्चर्य हुआ कि इससे रेबारियों के हाथ ऊँचे के ऊँचे रह गये।

चरवाहे बोले— यह तो बड़ा तांत्रिक है। जादू करके इसने हमारे हाथ ऊँचे के ऊँचे रख दिये। वे बोले— बाबाजी, हमारे हाथ सीधे करो। तुम्हें बैठने को ऊँट देंगे। ऊँट का नाम लेते ही उसने गुरू का स्मरण किया। इससे उनके हाथ पूर्ववत् हो गये। इस तरह हरमल पाँच माह लंका में रहा और छठे माह मरूधर लौटने की सोची।

तारों भरी अर्ध रात्रि में हरमल रवाना हुआ समुद्र लाँघ इस पार आया। उसने रेबारियों को पुकारा— लंका के चरवाहों सुनो! लाल भूरी साँढ़नियों को कुशलता के साथ चराना।

मैं छह महीने में लंका से सारी साँढ़नियाँ उड़ा ले जाऊँगा तब वहाँ न दूध नजर आयेगा न दही। मेंगनियों तक को उदई खाकर नष्ट कर देगी। साँढ़ का लाल केश तक नहीं बचेगा।

इतना सुनते ही लंका के चरवाहों ने प्रत्युत्तर दिया— सुनो बाबाजी, यह तो तुम्हारी तकदीर ठीक थी जो ऐसी बात उस पार जाकर कही अन्यथा यहीं खड्डा खोद तुम्हें जमीन में दफन कर देते।

सुना अनसुना कर तारों भरी मध्य रात्रि में हरमल आगे बढ़ गया। उसे इस बात पर फख्र था कि वह लंका की लाल भूरी साँढ़ का पता कर आया है।

हरमल ने माता के दरबार जा पुकारा— मेरी माँ उठो। लंका गये नर

पुन लौट आये है मा ने सातो दरवाजे खाल दिये आधी रात म हरमल ने महलों में दीपक जलाये और बैठकर माँ के साथ सुख दुःख की बाते की। दूसरी ओर पाबूजी और चाँदाजी चौपड़ खेल रहे थे।

वार्ता— पाबू बोले— सुनो चाँदाजी, आज आधी रात में हरमल के महलों मे दीपक क्यो जल रहे हैं? चाँदा बोला— या तो हरमल को पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई है या वह लंका जाकर लौट आया है।

गायकी— जाओ चाँदाजी, हरमल के घर जाकर पता लगाओ। चाँदाजी उठे। केसरिया बागा झिटका और हरमल की कोटड़ी चले।

वार्ता— वहाँ जाकर देखा तो हरमल बाबाजी के रूप में महिलाओं के बीच बैठा हुआ सुख दुःख की बात कर रहा है लेकिन चाँदाजी उसे पहचान नहीं सके। उन्होंने जाकर पाबूजी से कहा कि कोई गुरू आया है जो सुख दुःख की बात कर रहा है। हरमल अभी लंका से नही लौटा है।

गायकी— सूर्योदय हुआ। हरमल ने भूरागढ़ की कोटड़ी में अलख जगाया। ठाकुर पाबू बोले— 'सुनो चाँदाजी, इस जोगी का घरबार कहाँ है? यह किस धूणी से सम्बद्ध है? जाकर पूछो, यदि वे चाहें तो उनके लिए सुन्दर सुरम्य मंदिर बनवा दिया जाय।

(इसी बीच बाबा ने अपना भेष उतारना शुरू कर दिया और हँसता हुआ बोला—)

वार्ता— सुनो पाबूजी, यदि एक ही जगह रहते तो गाँव ही क्यों छोडते। इतना सुनते ही पाबू ने बाबा पर दृष्टि डाली तो वेश बदले हरमल राईका को पहचान लिया। पाबू खिलखिलाकर हँस पड़े और चाँदाजी से बोले— आपने तो किसी जोगी की बात कही थी पर वह तो अपना हरमल राईका है जो साँढ़ियों की खोज में गया था। हरमल ने मुजरा किया।

हम पुराने रास्ते से लंका को चलेंगे। चाँदा सामंत मकलीगर की दुकान जाकर असली बीजलसार के भाले बनवाओ। पाबू की फौज के आगे नगारे बजने चाहिए।

ढोल के ढ़माकों पर पाबूजी की फौज रवाना हुई। राठौड़ी राजा (पाबू) घोड़ी पर सवार हुए। यह देखकर कोई उन्हें शूरवीर सामंत बताता तो कोई भीमकाय बादलों के बीच चमकती बिजली। उनके आगे फौजो के झुंड चले। केसर कालमी घोड़ी रम्मत करती आगे बढ़ी जा रही थी। एक विश्राम रास्ते में लिया और दूसरे में समुद्र पर जा पहुँचे।

वार्ता— पाबू समुद्र तट पहुँचे तो जल-राशि पूरे ज्वार पर थी। नशे में डोलते डेमोजी को घूघरी की याद आ गई। उन्होंने पाबूजी से कहा— यदि आपने मन दो मन की घूघरी बनाई हो तो मेरे लिए भी रखना। मुझे कोरे कालजे (मुँह अंधेरे, सुबह-सुबह) अफीम खाते ठीक नहीं लगता।

गायकी— पाबू बोले— सुनो डेमा, इस धरती ने भी बड़ा गजब किया है। समुद्र हमारी राह में रोड़ा बना है।

वार्ता— डेमाजी बोले— यदि आप आज्ञा करें तो एक घूँट में समुद्र पान कर जाऊँ या फिर सारा पानी बादले (जलपात्र) में भर दूँ या फिर भाप बनाकर आकाश में उड़ा दूँ और मारवाड़ में जहाँ पानी का घोर अकाल है वहाँ पानी ही पानी कर दूँ।

गायकी— पाबू बोले— समुद्र की एक घूँट भरते ही उसमें रहने वाले मत्स्य-जीवों पर संकट आ जायेगा। यह पाप मुझे लगेगा। मुझे पानी की आड और मेरे सामंतों को मगरमच्छ बनना पड़ेगा। क्यों नहीं घोड़ी को जलपक्षी आड़ बनाकर पानी में उतार दें और समुद्रपार कर लें। इस तरह समुद्र पारकर दूसरे किनारे पहुँचे।

एक घोड़ी को बैठी हुई ऊँटनियों के समूह में लेकर गये। केसर घोड़ी

पर सवार पाबूजी पहुँचे। समूचे समूह को घेर लिया और एक दल (टोला) पर कब्जा कर लिया। इनमें से आधी साँढ़नियों के गले मे घूघरमाल (पट्टा) और आधी के रेशम के पुवाईदार फूँटे नहीं थे।

चाँदा ने कहा, लंका में सांढ़ियों का लाल केश तक नहीं छोड़ा है। पीछे डेमोजी समूह में कहीं अमल तमाखू करने की फिराक में रह गये है। वहीं कुछ थकी माँदी साँढ़ियाँ भी थीं। वहाँ उन्होंने एक ऐसी झोली बनाई जिसमे छोटे बछड़ों को बाँध दिया और इस तरह चतुराई कि लंका में साँढ़ तो क्या, उसका एक केश भी नही बचा।

इस तरह पाबू ने लंका में साँढ़ियों की रेवड़ को आगे बढ़ाया और एक तरह से डाके का डंका बजा दिया।

साँढ़ियों की रेवड़ के साथ-साथ केसर कालमी पर पाबू भी आगे बढे। फिर साँढ़नियों के चरवाहों से बोले कि यदि रोकना हो तो अपने राजा रावण को बुलाओ। हमने तो तुम्हारी ऊँटनियों को लूट ही लिया है।

एक हरकारा भागकर रावण की कोटड़ी पहुँचा जहाँ रावण गहरी नींद मे सोया था। उसे बताया गया कि उसके राज्य में धाड़ेतियों ने धाडा डाला है।

रावण को विश्वास नहीं हुआ कि भला ऐसा भी कहीं हो सकता है। वह बोला— तुमने कहीं गीली मिट्टी की भाँग की गोटी तो नही चढा ली है या कहीं दूध-दही साथ तो नहीं पी लिया है। हरकारे ने स्पष्ट किया कि नही हुजूर, ऐसा नहीं है।

राजा रावण बोला— सुनो चरवाहों! मेरी धरती पर ऐसा रानी जाया एक भी नहीं दिखता और न ही कोई राजपूत ऐसा कर सकता है।

चरवाहा बोला— सुनो लंकापति रावण, तुम अपने महलों में भले ही गर्व करते रहो पर तुम्हारी सांढ़ियाँ तो मरूधर में पहुँच चुकी है। रावण ने तत्काल क्रोध में कहा कि इस डकैती के मुझे निशान बताओ

वार्ता— चरवाहे ने कहा, आप क्या निशान देखोगे! जो आया था वह काली घोड़ी पर सवार योद्धा था। आम्ररंगा या केरी भांत फैंटाधारी, गादीपति शूरवीर और उनके सामंत थे। लंकापति बोला— मुझे डकैती के निशान मिले हैं लेकिन पाबू की भगाई साँढ़ियाँ वापस अपने कब्जे मे नहीं आई किन्तु यदि इस वारदात के लिए मुकाबला नहीं करेंगे तो पाबूजी समझेंगे कि रावण भयभीत होकर बैठ गया है।

गायकी— इतना कहते ही अविलम्ब लंकापति रावण के, युद्ध के बाजे बज उठे। ढोल बजे। नगाड़ो के बीच रावण की फौजें निकली।

रावण की फौजें गधे की तरह रेंकती— दहाड़ती, सूप की तरह शस्त्रों को हिलाती, जल्दी पैर उठाती चल। किसी के हाथ में तलवार थी तो किसी के हाथ में बंदूक। कोई तीर से लैस था तो कोई ढालधारी। युद्ध का नगाड़ा बजाती रावण की फौजों को आई देख पाबू डेमा से बोले— चौड़ेधाड़े रावण से झगड़ा क्यों करें? इस पर डेमा बोला कि आप कैसी अनुचित बात कर रहे है। मरना और जीना तो तय है फिर भला विचार क्या करना। आप तो छाती ठोककर तैयार हो जाओ।

समुद्र के पार रावण की फौजे चढ़ आई। आती हुई फौजो को डेमा ने आड़े हाथों लिया और चरवाहों ने ऊँटनियों को संभाला। डेमाजी के चुटकी बजाते ही तरकश में पड़े तीरों की वर्षा होने लगी और रावण के सैनिक (बसंत में गिरते) पीपल के पत्तों के मानिंद धराशायी होने लगे।

इस तरह रावण से युद्ध जीत लिया। यह घमासान ऐसा था कि जैसे आसमान में बादल फट पड़े। धरती में कंपन आ गया और शत्रुभाव का विद्युतपात हुआ। रावण की सारी फौज काम आ गई। जीवित केवल रावण की सवारी ही बची।

डेमोजी ने रावण से मुखातिब होकर कहा, पाबूजी ने हुक्म न दिया अन्यथा तुम्हारा सर भी कलम कर लिया जाता।

रावण की फौज का सफाया हुआ। रावण को सबक देकर छोड़ दिया। इस युद्ध को देख केसर कालमी उत्फुल्ल हो हवा से बातें करने लगी।

इस तरह पाबूजी ने रावण के महल पर अपना भाला गाड़ दिया और वहाँ पहले ही पराक्रम दिखा चुके हनुमानजी के यश को एक तरह से और बढ़ाया। दीनहीन रावण की बत्तीसी से चार दाँत निकाले और उन्हें चारों दिशाओं में फेंके जिससे मक्की (धान) का उद्भव हुआ।

यह वही रावण था जिसके लिए कहा गया कि उसके दस सिर और बीस भुजाएँ थीं अर्थात् दस सलाहकार पार्षद और बीस रक्षक सामंत थे। इस तरह पाबू ने पशुधन पर अपना प्रभुत्व कायम किया।

राजा रावण का संहार कर राती भूरी साँढ़नियों की रेवड़ लिए केसर कालमी सवार पाबू ससैन्य आगे बढ़े। एक विश्राम रास्ते में किया और दूसरा सोढ़ा राजपूतों की सीमा में। पाबूजी ने डेमा से कहा— हम किसी राज्य की सीमा मे हैं जो इतना सम्पन्न नजर आता है। ये गढ़ के कंगूरे भी किस राजा के हैं। डेमा बोला— यह सीमा सूरजमल सोढ़ा के राज्य की है और पृथ्वीमल सोढ़ा के गढ़ के कंगूरे दिखाई दे रहे हैं।

तारों से छाई अर्द्ध रात्रि में राठौड़ी राजा (पाबू) चले। सूर्योदय अमरकोट में हुआ जहाँ डेमाजी ने पाबू से दो घड़ी विश्राम के लिए आग्रह किया लेकिन यहाँ सोढ़ा राजपूतों का कुसुमाकर बाग तो बारह वर्षो से सूखा पड़ा था।

पाबूजी ने विश्राम करने से इन्कार कर दिया। डेमाजी ने पुनः आग्रह किया तब पाबूजी ने अपनी सत्कला से सोढ़ों का बाग हराभरा कर दिया।

चाँदा और डेमा की इस आग्रह युक्त कला के बाद वर्षों से निष्क्रिय पड़े मेढ़क टर्राने लगे। पपीहा और मोर कूकने लगे तथा (सन्यस्त भाव में) चुप बैठी कोयल भी कुहकने लगी।

पाबूजी ने घोड़ी पर जीण कसने को कहा। अश्व हिनहिनाये। उनके खुरों से आसमान कंपित होने लगा। केसर घोड़ी के टाप से सोढ़ा के गढ़ के कंगूरे काँपने लगे। इस बीच जब फूलवंती बाई अपने नौसर हार की पुवाई करवा रही थी तभी थाली में पड़े असली मोती इधर-उधर हुए। यह देख फूलवंती अपनी सखियो से बोली कि देखो धरती में दरार पड़ गई है अथवा कोई विशिष्ट भूमिपति अवतरित हुआ है।

सखियाँ बोली— हे भगवान! धरती को फटने से बचाओ अन्यथा पतंगो की तरह गायों के छोटे बछड़े मर जायेंगे और इससे बडा अनिष्ट होगा। लेकिन विशिष्ट भूपाल हमेशा ही अवतरित हों। यह कहते ही एक दासी ने गढ़ पर चढ़कर बाग में देखा तो पता चला कि वहाँ कोई परदेशी राजा रूका हुआ है।

दासी ने साँढ़नियों के समूह, केसर घोड़ी और सामंतो सहित परदेशी राजा के आगमन का समाचार फूलवंती बाई को दिया और कहा कि उसके साथ में किसी अन्य देश के अज्ञात चौपाये हैं। उस राजा का मुखमंडल सूर्य की भाँति दैदीप्यमान है। उसके साथ शूरवीर और सामंत भी हैं।

यह सुन फूलवंतीबाई बोली— आँखों में काजल सूरमा सजाओ। हरे रंग की मोहनी बिंदी लगाओ और आभूषणों की मंजूषाएँ खोल दो। तीजणियों (सखियों) ने सोलह ही नहीं बत्तीस श्रृंगार किये। इसके बाद फूलवंती स्त्रियो को साथ ले झूला झूलने को उद्यत हुई। रथवान को बुला भेजा।

उसे रथ जोतने को कहा। रथवान ने पूछा कि— आज्ञा दें, तो घुड़वेल

[illegible] फूलवंती गई और उनकी सहेलियाँ रथ व नागों में सवार हो गाती बजाती झूला झूलने चली। नजदीक आकर माली को आवाज लगाई कि बाग की खिड़की खोल देना। बाहर सोढ़ों के घर की सातों तीजणियाँ खड़ी हैं। माली बोला कि बागों की खिड़कियाँ खोलने में थोड़ा समय लगेगा क्योंकि अन्दर पाबूजी का डेरा है।

यह सुन कर फूलवंती बोली—

सुनो माली— यदि बाग मे प्रवेश पाऊँ तो मैं अपने गले का नौसर हार दे दूँ और लौटने पर अपने हाथों में पहनी स्वर्ण मुद्रिका।

यह सुनकर लालची माली ने तत्काल खिड़की खोल दी। फूलवंती ने भीतर जाकर चंपा की डालपर झूला डाला।

अन्य तीजणियाँ तो दो-तीन मिलकर किन्तु फूलवंती अकेली झूलने लगी। इस बीच उसने सखियों से बाग में रूके परदेशी राजा के रूप-रंग का वर्णन किया और कहा कि राजा का मुखमंडल सूर्य की तरह शोभायमान और स्वाभाविक कुलीनता चन्द्रमा की भाँति निर्मल है।

दूसरी तीजणियों ने सोये उमरावों को देखा जबकि फूलवंती पाबूजी की ओर सम्मोहित हो निरखने लगी। तीजणियाँ अपने हाथों के हथफूल, गजरे गूँथने लगी जबकि फूलवंती ने सेवरा ले जाकर मालिक के हाथ दिया और कहा कि तू मेरी धर्म बहिन है। मेरा इतना काम तो कर कि यह सेवरा (सेहरा) पाबूजी के यहाँ पहुँचा दे। मालिन सेहरा लेकर पाबूजी की कोटड़ी चली।

कोटड़ी जाकर मालिन खड़ी हो गई। पाबूजी के निर्देश पर चाँदाजी ने उससे आने का प्रयोजन पूछा। मालिन ने केसर घोड़ी के गले में मांगलिक माला पहनाई और सामंतों का भी माल्यार्पण किया। आगे जाकर पाबूजी को नजराने में सेहरा भेंट किया। मालिन का यह कृत्य सबसे अटपटा, पाबूजी को लांछित करने जैसा लगा।

गायकी— इस तरह सादा का अमरकाट में पाबूजी की मगनी तय कर दी गई इसके बाद सामर और केलम की सुध आई। चाँदा सामंत खड़ा हुआ और बॉस की पराणी (लकड़ी) उठाई। सॉढ़नियों को इकट्ठा किया। पाबूजी भी इस कार्य में अगवानी करते हुए और मेहमान होकर केलम के घर चले।

वार्ता— पाबूजी ने हरमल को संबोधित करते हुए जो निर्देश दिये उनकी पालना में घोड़े तैयार किये। पाबूजी की पसंद के ऊँट भी श्रृँगारे गये और केलम के यहाँ चल पड़े।

गायकी— यह सब कर तारा छाई रात्रि में हरमल निकला। मगवास (मार्गविश्राम) के बाद सामर पहुँचकर घोडे छोड दिये। हरमल ने केलम को जाकर बधाई दी कि पाबूजी लंका की राती भूरी साँढ़ियाँ ले आये हैं।

वार्ता— यह सुन केलम प्रफुल्लित हो उठी और ननदों को आवाज लगाई— अब तुम्हारे चरखे उठालो। यहाँ सौंढ़नियो के बोथड़े (बच्चे) खेलेगे। हरमल ने कहा— केलम, तुम जितनी साँढ़ें रोक सको, रोक लेना। काकाजी तो लंका से सारी सांढ़े ले आये हैं।

केलम ने अपने काका और पीहर की बलाइयाँ ली। वहाँ के सामंतो प्रधानों का शुभचिंतन किया और कोलू के गढ़ का भला सोचा कि जहाँ के शूरवीरों ने ऐसा अप्रतिम कार्य कर दिखाया।

गायकी— केलम अपनी उन साँढ़नियों को संभालो जिन्हें पाबूजी ने बड़ी शूरवीरता के साथ लंका से प्राप्त की हैं।

वार्ता— केलम ने काका के नाम संदेश दिया कि वे यहाँ ऐसी सॉढ़नियाँ रख छोड़े जो कीड़ों से कुलकुलाती लूली-लंगड़ी हों। अन्य को अपने मरूधर देश (मारवाड़) ले जायें।

गायकी— राठौड़ी राजा (पाबू) तारों भरी अर्द्ध रात्रि में चलकर कोलू की कोटड़ी पहुँचे। वहाँ जाकर गद्दीनशीन हुए। उनके समक्ष अन्य दरबारी भी बैठे।

बू बोले— सुनो सरदारों! हम जिन साँढ़ियों को लाये है उन्हें कौन चरायेगा। यदि मेरी बात मानो तो दो दिन इन्हें चाँदाजी चरायें और दो दिन हरमलजी। इस तरह बारी-बारी सब सरदार चरायें। डेमाजी बोले— मुझसे तो ये साँढ़ियाँ न तो आज चराई जायेंगी न कल। यदि मेरी मानें तो इन्हे किसी और को सौंप दें। मै तो आपकी ही नौकरी बजाऊँगा। मै इनको चरा नहीं सकता।

हरमल ने कहा, पाबूजी इन साँढ़ियों को मुझे सौंप दो। मैं इन्हे खुशी के साथ चराऊँगा। अच्छा लालनपालन करूँगा और अपने घर रखूँगा। साँढ़ियों को चराने के साथ-साथ आपकी नौकरी भी करूँगा। यह सुन पाबू ने हरमल रेबारी को सभी साँढ़नियाँ सभला दी।

एक दिन जब पाबूजी स्वर्ण चाँदी के कामवाली कलात्मक जाजम पर बैठे थे और सामने अन्य पदाधिकारी शूर और सामंत आसीन थे तभी सोढ़ों के यहाँ से वरमाला और मंगनी के नेगचार करने अमरकोट से कोई आया।

दस्तूर का सामान हाथी पर लदा था। यह देख पाबूजी ने इन्कार कर दिया। चाँदाजी ने पाबूजी से कहा, आप तो सोढ़ों के अमरकोट में ब्याह रचालो। पाबूजी बोले— यह बड़ी अटपटी अनुचित बात है। थलीपति के क्यों कलंक लगाना चाहते हो।

(आखिरकार विवाह रचा) बरात की तैयारी शुरू हुई। दूल्हा बने पाबू रश्मिरथी नजर आने लगे। महिलाएँ विवाह के माँगलिक गीत और बधावे गाने लगी। महिलाओं ने चाँदाजी को कोरे कूंडे (मृणपात्र) में केसर घोलने के लिए कहा और निर्देश दिया कि वे इसमें पाबूजी का मोलिया (विवाह वस्त्र) रंग दें। निमंत्रण के लिए हल्दी में नौ मन चावल रंगें और फिर सभी देवी-देवताओं, परिचितों को न्यौत आयें, पाबूजी की बरात में चलने के लिए।

इसके बाद पहला निमंत्रण गजानंदजी को और फिर श्रीकृष्ण, बाबा रामदेव, चन्द्र, सूर्य, महादेव, काला गोरा भेरू, योगमाया, पितृभक्त

श्रवण को दिया। धरती के समस्त देव पाबूजी की बरात के लिए पहुँचे लेकिन जायल के खींची (पाबूजी के बहनोई) नहीं आये।

इस तरह पाबूजी की बरात सजी। नगाड़े बजने लगे। ऊपर मुँह किये मक्रमुखे बांकिये बजने लगे।

इसके साथ ही (सूत परम्परा के अनुसार) बरात में काछेला भाट कविताएँ सुनाने लगे और भवानी चारणी ने विरूदावली शुरू की। चलती हुई बरात द्वार पर जाकर रूकी तभी भवानी चारणी ने आड़ी फिरकर बरात को रोक लिया। पाबूजी ने इसका कारण पूछा। उसने कहा— आप तो सोढ़ों के अमरकोट जा रहे हो। पीछे गढ की रखवाली के लिए किसको नियुक्त किया है?

पाबू बोले— हमने हर क्षेत्र में बावन वीरों को तैनात किया है। भयंकर भूखी योगिनियाँ छोड़ी है। बावनवीर (यदि संकट आन पड़ा तो) चक्र चलायेंगे और योगिनियाँ खप्पर भरेंगी। इसके अलावा चन्द्र सूरज को भी रक्षा का भार सौंपा गया है। सबमें बड़े बूड़ोजी को वहीं रखा है। भवानी बोली— मुझे आपकी बात पर भरोसा नहीं और बूड़ाजी पर विश्वास नहीं है।

वार्ता— बूड़ाजी अपनी सीमा के भीतर ही सामर्थ्य के अनुसार काम करने वाले हैं।

गायकी— उन्हें तो (बूड़ा राजा को) आप अपनी बरात में ही ले जाओ और चाँदा सामत को भूरे गढ़ की कोट के लिए छोड़ दो। पाबूजी ने कहा— भवानी, चाँदा सामंत का नाम मत लो। वह तो सोढ़ों के चारण भाटों को नीचा दिखाने के काम आयेगा। अगला प्रस्ताव डेमा अमली को गढ़ रक्षा के लिए नियुक्त करने का आया। इस पर पाबू ने कहा कि इसका नाम भी मत लो। वह भी सोढ़ों के यहाँ जा रही हमारी बरात के लिए बड़ा उपादेय है।

बरात के स्वागत में मोदों ने कुँआ और बावड़ीबंद अमल संग्रहीत की कि महीने तक भी पीनेवालों की कतारें हों तो पैंदा नजर न आये।

वार्ता— डेमाजी का नाम पुकारा गया और सावधान किया गया।

गायकी— बरातियों के साथ चारणी ने निर्देश दिया कि वे डेमाजी को साथ रखें लेकिन हलजी होलंकी को भूरागढ़ की रखवाली के लिए छोड़ जायें।

पाबूजी बोले— तू इतना नाम भी मत ले क्योंकि ये ज्योतिष और शकुन विचारकर्ता हैं और अटके भटके काम आयेंगे। चारणी ने कहा, यदि हलजी होलंकी भी साथ में जरूरी है तो फिर हरमल राईका को छोड़ जाना। पाबू बोले— हरमल का नाम भी मत लो। वह तो हमारा मार्गदर्शक है।

चारणी बोली— हे राठौड़ी राजा! अपने सुन्दर मुख से झूठ मत बोलो। यह रेबारी भला कब से रास्ते का राजा (पथ प्रवीण) बना है?

वार्ता— पाबू बोले कि जबसे इसने लंका में जाकर सॉढ़ियों को घेरा है तब से यह राह खोजी है।

घोड़े पर सवार पाबूजी से भवानी चारणी के इस तरह सवाल-जवाब हुए।

गायकी— आखिर समस्त सामंतों को भी पाबूजी ने बरात में सम्मिलित किया। भवानी मुस्कराई और विकल्प रखते हुए बोली— बरात क्यों चढ़ाओ, क्यों नहीं खाडा भेजकर विवाह रचालो। पाबू बोले— तुमने भी कैसी भोली बात कही। खांडे से तो काबुल के मुसलमान विवाह रचाते हैं। क्षत्रिय तो मंडप (चंवरी) में पाणिग्रहण करते हैं।

पाबूजी ने चारणी के सारे विकल्पों का उत्तर देते हुए कहा—

वार्ता— सुनो भवानी! तुम निश्चिंत रहो। भूरागढ़ कोट में कुछ नहीं होगा। यदि तुम भी आ सको तो गोधूलि वेला में गिद्ध (चील) का रूप

धारण कर चंवरी में आ जाना। यदि तुम्हारी गायों पर संकट आया तो मैं चंवरी में बैठा भी उठ खड़ा होऊँगा और तुम्हारी गायों की रक्षा के लिए दौड़ पड़ूँगा।

गायकी— इस तरह पाबू भवानी चारणी की परीक्षा में खरे उतरे और अनेकानेक आशीष भरे वचन कहे।

वार्ता— भवानी बोली— पाबू तुम अपने वचनों के पक्के रहना। मुझे डर है कि कहीं मैं आई तो खींची मेरी गायों को घेर न ले जाय।

गायकी— पाबू बोले— भवानी, तुम सावधान रहना! तुमसे जो वचन कहे हैं, यदि उनसे फिरूँ तो सांभर के नमक की तरह गल जाऊँ।

भवानी चारण ने पाबू को गहरी सीख और आशीर्वाद दिया कि तुम सकुशल विवाह कर लौटो। बाजे गाजे के साथ भव्य बरात आगे बढ़ी। घोड़ी ने अपनी रम्मतें दिखाई। बरात जब पचास कोस पर पहुँची तो सूर्योदय के समय घाटे में रोक दी गई क्योंकि शकुन ठीक नहीं थे।

जंगल में बाँयी ओर सियार बोल रहे थे तो दाँयी ओर तीतर। बरात के मार्ग में शकुन अमांगलिक हो गये। इधर सिंह ने पाबूजी के मार्ग में अवरोध डाला। पाबूजी ने हलजी को बुलाया कि तुम अपना घोड़ा आगे ले जाकर इन शकुनों पर विचार करो। हलजी होलंकी ने पाबूजी के पंचांग को ऊपर से नीचे तक देखा और चिंता मग्न हो बोले—

वार्ता— इस पंचांग में विधाता ने जीना मरना साथ लिखा है।

गायकी— पाबूजी डेमाजी से बोले— अपने घोड़े को आगे लाओ। तुम्हारे होते सिंह ने बरात का रास्ता रोक दिया। यह सुन डेमा को क्रोध चढ़ आया। वह खड्ग खींच शेर पर टूट पड़ा। पहाड़ की ओर भागते सिंह को ललकारा कि तुमने क्यों क्षत्रियों का रास्ता रोका। उसे यह भी याद दिलाया कि तुम्हीं ने छल से चारणों की गाय मारी। अकारण

खूटी से बंधे बछड़ों का वध किया है। मैं तुम जैसे हिंसक को छोडूँगा नहीं। हवा में डेमोजी का खड्ग लहराता रहा।

वार्ता— यह सुनते ही हिंसातुर शेर दहाड़ मार डेमाजी पर टूट पड़ा। उसके खूनी पंजे को डेमोजी ने ढाल पर झेला और खड्ग से उसका सर कलम कर दिया।

गायकी— ठाकुर पाबू बोले— चाँदाजी तुम डेमाजी को शाबाशी दो जिसने शेर से मुकाबला कर बरातियों को निर्भय किया।

वार्ता— डेमा अमली ने आगे आकर कहा कि इस सुन्दर धरती में, बरातियों के मार्ग में यह रक्तपात अच्छा नहीं हुआ।

पाबूजी ने कृपाकर सिर कटे शेर को फिर से शीशवान करते हुए प्राणदान दे दिया।

गायकी— रास्ते में बराती झूमते लहराते आगे बढ़े जा रहे थे। हाथियों की चाल मस्ती भरी थी। एक विश्राम कर आगे बढ़े। सौ कोस की घाटी पर सोढ़ों ने समेला (मार्ग के बीच बरातियों को दिया जाने वाला भोज) दिया।

सोढ़ों ने जाजम बिछाई और मद्यपान प्रारंभ करवाया। सोढ़ों ने हमप्याला सुरापान शुरू किया। इस बीच पाबू अपने सालों से बाँह पसार मिले। लेकिन अणदू नामक साला अन्यमनस्क खड़ा रहा जिससे उसकी मन की बात पूछी।

अणदू ने कहा कि मैंने आपकी घोड़ी का बड़ा नाम सुना है। आज कानों सुनी साकार हो गई। आपकी घोड़ी के मुकाबले मेरे घोड़े भी कम नहीं है। (यदि स्पर्धा हो तो बाजी मार जाय) हमारे सोढ़ों की रीत के अनुसार गढ़ के तीखे कंगूरे पर तोरण मारना पड़ेगा।

वार्ता— अणदू बोला कि यही शर्त रही। यदि मैं हार गया तो अमरकोट आपका और यदि आप हार गये तो केसर कालमी घोड़ी हमारी

गायकी— पाबूजी ने साले से कहा कि तुम्हारे घोड़े हेरण घास खाते है जबकि मेरी घोडी एक ही टीबे के आहार विहार पर पली बढ़ी है। कहाँ तो तुम्हारा शक्तिवर्धक घास और कहाँ मेरी थली की बोदी (बलहीन) बाजरी। यह स्पर्धा क्यों कर रहे हो?

पाबू ने एक पाँव पर खड़ी स्वामी भक्त अपनी घोड़ी केसर कालमी की ओर देखा और साले की चुनौती स्वीकार कर ली। यही नहीं, इस शर्त की लिखापढ़ी भी कर ली।

पाबूजी ने साले के घोड़ो के मुकाबले में घोड़ी को खरा उतरने के लिए कहा और बोले कि सोढ़ों की चुनौती पर यदि निर्णायक नहीं उतरी तो तुम्हें सोढ़ा के चारण भाट को दे दूँगा और सोना तब ही मारवाड़ ले जाऊँगा।

यह सुनने की देर थी कि घोडी हिनहिनाई। बोली— एक ही बार में सोढ़ां के सातों महल लाँघ जाऊँगी और उतरते समय तोरण की सातों चिड़ियो को मार दूँगी। यही नहीं, मैं आसमान के तारे तोड़ लाऊँ तब मुझे सोढ़ां के घोड़ों के बराबर मानना।

गायकी— (सोढ़ों ने अपने घोड़े और पाबूजी के घोड़ी तैयार की) सोढ़ां के घोड़े जमीन पर दौडने लगे जबकि केसर कालमी ने आकाश में उड़ान भरी और तोरण की सातो चिड़ियाँ लाकर अपने को शक्ति की अवतार सिद्ध किया। सोढ़ा हाथ मलते रह गये।

वार्ता— दानवीर पाबू बोले— सुनो डेमाजी, हमारी ओर से बरात के आगमन का समाचार लेकर वर वधाऊ भेजो। उसके साथ में एक हरी डाली देना किन्तु अमल के नशे में डेमाजी हरी डाली की बात भूल गया। रास्ते में जब याद आई तो एक खेजड़े के पास पहुँचे। घुड़सवार डेमा ने डाली पकड़ी। खेजड़े का काँटा उसकी अँगुली में जा लगा।

वह तुरन्त घोड़े से नीचे उतरा और गर्जना कर खेजड़े को ही उखाड़

लिया और वधू के घर ले जाकर चाँच द्वारा पटक दिया। वधू पक्ष के सोढ़े आधे घर के बाहर और आधे अन्दर रह गये।

डेमाजी वहीं खड़े हुए और सोढ़ों को संबोधित करते हुए बोले कि मेरे लिए नशेपने का प्रबंध करो। सूरजमल सोढ़ा ने अमली मनुहार की। डेमोजी ने अमल बताने के लिए कहा तो सूरजमल ने अपने सेवकों से कहा कि इन्हें वहाँ ले जाओ जहाँ इन्द्रयोत्तर कुँए बावड़ी अमल से भरे हुए हैं। वहाँ ले जाकर कहीं धक्का दे देना। ये वहीं गल जायेंगे।

सेवकों ने डेमोजी को वहाँ ले जाकर छोड़ दिया। डेमोजी ने अफीम के कुँआ बावड़ी पर ऐसा हाथ मारा कि दो ही घूँट में उन्हें खाली कर दिया। इसके बावजूद वे मरूँ-मरूँ करते रहे।

इसके बाद पटवारी ने जाकर सूरजमल से कहा कि बावड़ियों में न तो अमल है न तिजारे। पत्थर तक निकालकर निगल गया है। सूरजमल ने आश्चर्य किया और कहा कि छह-छह महीने तक जितनी अमल जमा की वह डेमोजी एक ही बार में उड़ा गया तो डेमोजी जैसे और कितनेक बराती हैं?

यह ताना सुनकर डेमोजी ने कहा— ज्यादा कमाऊँ और थोड़ा खाँऊ, ऐसा तो मैं ही हूँ। मैं सबसे आगे आया हूँ। पीछे तो मेरे से भी जोरदार हैं।

गायकी— इस बातचीत के बाद सूरजमल ने दासी को, ब्राह्मण को बुलाने के लिए भेजा और कहा कि उसे लाकर अपने कोट में चंवरी मंडाओ। ब्राह्मण ने आकर चारों दिशाओं में सोने की खूंटियाँ ठोकी। ऊपर मेघाडम्बर, तम्बू तान दिये। (शुभ समय पर) पाबूजी ने फूलवंती का पाणिग्रहण किया।

चंवरी में एक फेरा ही हुआ कि दूसरे फेरे में चील बनकर आ बैठी भवानी चारणी कूक पड़ी कि पीछे से उसकी गायों को खीचियों ने घेर लिया है।

जैसा कि पाबूजी ने उसे पहले ही वचन दिया था कि यदि उसकी गायों को खींचियों ने घेर लिया तो वे चंवरी छोड़कर रक्षा के लिए दौड़ पड़ेंगे। चारणी ने यह बात याद दिलाई, ऐसा न हो कि उनका वचन व्यर्थ चला जाय।

वार्ता— इतना सुनना था कि पाबू चंवरी से उठ खड़े हुए। दो ही फेरे हुए थे कि तीसरे में सोढ़ी का पल्ला काट दिया और गायों को बचाने के लिए वे तत्काल अपनी पवनवेगी घोड़ी पर सवार हुए।

गायकी— सोढ़ी उनके चरणों में गिर पड़ी। वह बोली— भला, मुझसे क्या गलती हुई? मुझमें कोई अवगुण हो तो बताओ।

वार्ता— मुझ में ऐसी क्या कमी देखी कि चंवरी में दो ही फेरे लिये और तीसरे में मेरा पल्लू पृथक कर दिया। पाबू बोले— आप तो बहुत गुणवान हैं लेकिन मुझे गो माता की रक्षा करनी है।

सूरजमल सोढ़ा ने कहा कि हमारी लाज भगवान के हाथ है लेकिन बहनोईजी, मेरी बात सुनो कि मेरी इस बहिन में यदि कोई अवगुण नजर आये हों तो मैं दूसरी को लाकर फेरे दिलाऊँ।

पाबूजी ने दोहराया कि तुम्हारी बहिन में बहुत गुण हैं लेकिन क्या करूँ। मेरे वहाँ खींचियों ने चारणी की गायों को घेर लिया है और मुझे उनकी रक्षा करनी है।

सूरजमल बोले— आप यहीं रूकें। आपके बदले में मैं मेरे भाई अणदू को भेज देता हूँ। वह चारणी की गायो को आजाद करवा देगा।

पाबू बोले— सूरजमल, तुमने भी भोली बात की है। अणदू से गायें आजाद नहीं होंगी। या तो चाँदा या डेमा या फिर पाबू ही गायों को मुक्त कर सकता है।

गायकी— डेमा और पाबूजी दोनो तारांछाई रात में निकल पड़े। एक विश्राम रास्ते में लेकर दूसरे विश्राम में गिरिवर का घाटा रोका और गायों को जा घेरा

वार्ता— खींची डेमाजी से बोले कि झगड़ा चल रहा है।

गायकी— डेमाजी ने अपनी करामात दिखाई। चुटकी बजाते ही तीरों की वर्षा होने लगी। आसमान जैसे फट पड़ा और भूकंप आ गया हो। एक-एक कर खींचियों की सारी फौज धराशायी हो गई। केवल बची तो जिंदराव खींची की सवारी।

वार्ता— मुझे हुक्म नहीं है अन्यथा हे जिनराव! मैं तुम्हारा सिर भी धड़ से अलग कर दूँ। यदि मैं ऐसा कर दूँ तो पाबूजी मुझे उपालंभ देंगे। प्रेमाबाई मुझे दुर्वचन कहेगी। मैं तुम्हें बहिन की सुहाग-कांचली के पेटे छोड़ रहा हूँ।

इतना कहना था कि ठाकुर पाबू भी आ पहुँचे।

गायकी— खींचियों और राठौड़ों के बीच युद्ध में तलवारें खिंच गईं। खारी (एक नदी) पर खड्ग से खड्ग टकरा उठे।

वार्ता— इस घमासान के बाद राठौड़ों ने गायें मुक्त करवालीं। पाबूजी ने सभी गाये चारणी को संभलाई और बोले— मैं चलता हूँ। मेरा कौल— वचन पूरा हुआ। यह देखो, भगवान की पालकी आ पहुँची है। मैं जा रहा हूँ।

यहीं से वे स्वर्ग लोक को प्रस्थान कर गये।